# रसीलै राज रा गीत

# रसीलै राज रा गीत

[ महाराजा मानसिंह विरचित शृंगार - पद - संग्रह ]

सम्पादक

नारायण सिंह भाटी

सहायक सम्पादक

सौभाग्य सिंह शेखावत

प्रकाशक

राजस्थानी शोध - संस्थान

जोधपुर

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संचालित
राजस्थानी शोध संस्थान
जोधपुर

परम्परा, भाग १८-१९
मूल्य ६)

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस
जोधपुर

# विषय सूची
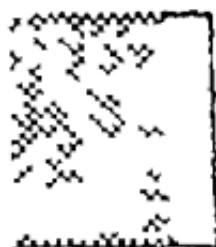
सम्पादकीय ९

एसीलै राज रा गीत १७

परिशिष्ट

महाराजा मानसिंह कृतित्व और जीवन - दर्शन २५३

"The biography of Maun Singh would afford a remarkable picture of human patience, fortitude, and constancy, never surpassed in any age or country From a protracted conversation of several hours, at which only a single confidential personal attendant of the Prince was present, I received the most convincing proofs of his intelligence, and minute knowledge of the past history, not of his own country but of India in general He was remarkably well read, and at this and other visits he afforded me much instruction We discoursed freely on past history in which he was well read as also in Persian, and his own native dialects He presented me with no less than six material chronicles of his house, of two, each containing seven thousand stanzas, I made a rough translation"

—*Col James Tod*

# सम्पादकीय

महाराजा मानसिंह का रचनाकाल १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। हिन्दी साहित्य मे यह काल रीतिकाल के नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दी मे रीतिबद्ध काव्यो और लक्षण ग्रथो का निर्माण इस समय मे पुष्कल परिमाण मे हुआ है। इस काल के हिन्दी और राजस्थानी भाषा के काव्यो मे सबसे बडी समानता शृगार-प्रधान विषयो का बाहुल्य है, परन्तु राजस्थानी काव्य मे जहाँ एक ओर वीररस की धारा प्रवाहित होती हुई दिखाई देती है, वहाँ दूसरी ओर शृगार की रसवती राग और रूप के पुलिनो के बीच सहज रूप से बहती हुई दृष्टिगोचर होती है।

राजस्थानी का शृगारिक पद-साहित्य यहा के राज-घरानो की विशिष्ट देन है। यह शृगारिक साहित्य दो रूपो मे व्यक्त हुआ है—(१) कृष्ण-भक्ति के अनुराग को प्रकट करने के रूप मे (२) नारी-सौन्दर्य तथा प्रेम भावनाओ को व्यक्त करने के रूप मे। महाराजा मानसिंह के साहित्य-सर्जनकाल में तथा उसी समय के आस-पास सवाई प्रतापसिंह (व्रजनिधि) जयपुर, महाराजा सावतसिंह (नागरीदास) किशनगढ, महाराजा बहादुरसिंह किशनगढ, महाराणा जवानसिंह उदयपुर, महाराव विनयसिंह अलवर, महारानी आनन्दकुवरि अलवर, महाराज कुमार रतनसिंह (नट-नागर) सीतामऊ, हरिजीरानी चावडी, बाघेली विष्णुप्रसादकुवरि रीवा, रसिकविहारी (बनीठनोजी) आदि कुछ कवि और कवयित्रियो की पद-रचना उपलब्ध होती है, जिसमे यह काव्य-धारा अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ प्रकट हुई है।

राजघरानो के प्रमुख व्यक्तियो के अतिरिक्त भी कुछ कवियो ने इस प्रकार की रचनाएँ अवश्य की हैं, परन्तु इस काव्य की प्रतिनिधि रचनाएँ राजप्रासादो से ही मुखरित होकर जनता तक पहुँची हैं। उक्त वर्ग द्वारा इस प्रकार की काव्य-साधना मे लीन होना हमें उनकी राजनैतिक परिस्थितियो और भावनाओ की पृष्ठभूमि पर विचार करने को बाध्य कर देते हैं। राजस्थान के शासको ने सैकडो वर्षो तक विदेशी सत्ता के साथ निरन्तर सघर्ष किया था। १६वीं

शताब्दी में आते आते उनकी शक्ति बहुत क्षीण हो चुकी थी । मरहठों ने इस समय स्थानीय शासकों की फूट और मनो-मालिन्य से लाभ उठा कर राजस्थान को पदाक्रान्त ही नहीं किया अपितु यहाँ के शासकों की आर्थिक स्थिति को भी बहुत कमजोर कर दिया था। अनिश्चित परिस्थितियों आर्थिक संकटों और राजनैतिक उलझनों के बीच अंग्रेजों को अपना प्रभुत्व कायम करने में सफलता मिलती जा रही थी । ऐसी परिस्थितियों में यहाँ के शासक ऐसे हतप्रभ और दिशा-शून्य से हो गए थे कि अन्य किसी विकल्प के अभाव में उनकी भावनाओं और चिन्तन का अन्तर्मुखी हो जाना ही स्वाभाविक था। सिधु राग से अपने मानस को आलोड़ित करने के बजाय वे विभिन्न राग रागनियों के रंगीन डोर अपने भाव शिशुओं के हाथों में थमा कर उन्हें बिलमाने लगे । इस पद रचयिताओं के पदों में प्रत्येक रचनाकार की अपनी अनुभूतिगत विशेषताएं होते हुए भी यथार्थ से पलायन की प्रवृत्ति सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है—चाहे वह वृन्दावन की रासलीलाओं के गुणगान के रूप में हो या किसी रूपसी और रसिक-शिरोमणि को प्रसादकृत भाव भंगिमा के रूप मे।

इन कवियों में से महाराजा मानसिंह का जीवन अनेक प्रकार की उलझनों और प्रतिकूल परिस्थितियों से संवृत्त रहा है । उनके जीवन की ऐसी कुछ घटनाओं का उल्लेख यहाँ कर देना अप्रासंगिक न होगा। मानसिंह का जन्म सं० १८३९ में हुआ था। ये महाराजा विजयसिंह के पौत्र और गुमानसिंह के पुत्र थे । स० १८५० मे इनके चचेरे भाई महाराजा भीमसिंह गद्दी पर बैठे। उन्होंने अनेक कुटुम्बियों को अपना मार्ग निष्कण्टक बनाने के लिए मरवा डाला था। मानसिंह कुछ सरदारों की सहायता से जालोर दुर्ग में जा रहे । लगभग ग्यारह वर्ष तक ये वहीं रहे और भीमसिंह द्वारा भेजी गई सेनाएं इन्हें निरन्तर तंग करती रहीं । इनकी आर्थिक स्थिति लगातार घेरे में रहने के कारण बड़ी खराब हो गई थी परन्तु भाऊवा और आहोर जैसे ठाकुर इन्हें निरन्तर सहयोग देते रहे। इनके साहित्य प्रेम और अच्छे बर्ताव के कारण अनेक चारण कवि भी साथ थे । कहने की आवश्यकता नहीं कि उस काल में मानसिंह ने बड़ी विकट परिस्थितियों में समय व्यतीत किया था। भीमसिंह के सेनापति सिंघवी इन्द्रराज के दबाव के कारण मानसिंह ने दुर्ग त्याग देने का विचार कर लिया था परन्तु आयस देवनाथजी ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि तीन चार दिन किले में ही रुके रहें तो उनकी विजय हो जाएगी। उन्होंने ऐसा ही किया और भाग्यवश महाराजा भीमसिंह की मृत्यु (१८६० वि०) हो गई जिससे जोधपुर की

राजगद्दी इन्हे प्राप्त हुई। पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह ने इनकी गद्दीनशीनी को इस शर्त पर स्वीकार किया कि स्वर्गीय महाराजा की महारानी देरावरजी गर्भवती है, यदि उसके पुत्र हुआ तो जोधपुर की गद्दी का अधिकारी वह होगा और मानसिंह को जालोर का परगना ही दिया जाएगा। ख्यातो में ऐसा जिक्र मिलता है कि महारानी के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुआ था, जिसका नाम धौंकलसिह रखा गया परन्तु मानसिहजी ने उसे जाली पुत्र कह कर राज्यगद्दी छोडने से इन्कार कर दिया, जिसके कारण पोकरण ठाकुर सवाईसिंह उनसे बिगड गया और आजीवन उनका विरोधी बना रहा।

गद्दी-नशीन होने के कुछ ही समय पश्चात् उदयपुर की राजकुमारी कृष्णा कुवरी के विवाह को लेकर जोधपुर, जयपुर और उदयपुर के शासको के बीच बडा तनाव पैदा हो गया। कृष्णा कुवरी की सगाई जोधपुर के महाराजा भीमसिंह से हुई थी, परन्तु उनका अचानक देहान्त हो जाने से विवाह नही हो सका। जोधपुर के राजघराने की माग होते हुए भी जब उसकी शादी जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ निश्चित हुई तो पोकरण ठाकुर सवाई-सिंह आदि के बहकाने से महाराजा मानसिंह ने इस सम्बन्ध का विरोध करने के लिएससैन्य प्रस्थान किया। इस कूच मे यशवन्तराव होल्कर, इन्द्रराज सिंघवी आदि भी साथ थे। अमीर खा भी वहाँ आ पहुँचा था। सवाईसिंह और मानसिंह के बीच पहले से ही मन-मुटाव था, जिससे वह मौका पाकर जयपुर वालो से मिल गया और अमीर खा ने भी जयपुर वालो का पक्ष-ग्रहण कर लिया। मानसिह के सामने बडी विकट परिस्थिति उपस्थित हो गई, तब वे अपने विश्वासपात्र सरदारों की सलाह से चुने हुए कुछ सिपाही साथ लेकर वहाँ से निकल गए और बडी कठिनाई से मेडता होते हुए जोधपुर पहुँचे। जयपुर और सवाईसिंह आदि की सेना ने उनका बडा पीछा किया और अन्त मे जोधपुर शहर को आ घेरा। मानसिंह के पास इस समय इतनी बडी सेना नही थी कि वे उनका मुकाबला करते। ऐसी विकट परिस्थिति मे उन्होने बडी राजनैतिक सूझबूझ से काम लिया और सिंघवी इन्द्रराज को एक युक्ति सुझा कर बाहर निकाला। उसने मारवाड के स्वामि-भक्त जागीरदारो की सेना एकत्रित कर जयपुर पर आक्रमण कर दिया। तब जयपुर नरेश ने अपने राज्य की रक्षा के लिए जयपुर की ओर प्रस्थान किया और उनके अन्य सह-योगी भी अपने अपने स्थानो पर लौट गए।

महाराजा मानसिंह अमीर खा की ताकत और राजनैतिक सूझबूझ

से भली भाँति परिचित हो गए थे। अतः उनसे घनिष्ट मित्रता करके एक ओर सवाईसिंह जैसे प्रबल शत्रु का सफाया उसके हाथों करवाया और दूसरी तरफ सिंघवी इन्द्रराज की राजनैतिक चालों से सशंकित होकर उसकी भी हत्या उसके द्वारा करवाई। राजनैतिक दबाव और अंग्रेजों के बढ़ते हुए प्रभुत्व के कारण मानसिंहजी को अंग्रेजों से संधि करनी पड़ी थी परन्तु मन ही मन वे अंग्रेजों के दमन से अप्रसन्न थे। जब भी मौका आया, उन्होंने अंग्रेजों के विरोधियों को पनाह दी और प्रोत्साहित किया। मधुराव देव भोंसले तथा सिंधी शाहजादे को शरण देना उनकी इस नीति को प्रमाणित करता है। सिक्खों के महान नेता महाराजा रणजीतसिंह जैसे व्यक्ति भी उनकी राजनैतिक सूझ बूझ के कायल थे।

सामन्तों के बढ़ते हुए प्रभाव तथा मुत्सद्दियों की प्रतिस्पर्द्धा से तंग आकर मानसिंह ने राज्य कार्य से उदासीनता बरतना प्रारंभ कर दिया जिसके कारण राज्य के प्रधान मुहता अखयचंद ने मुख्य जागीरदारों तथा आयस भीमनाथ की सलाह से राजकुमार छत्रसिंह को राज्य गद्दी सौंप दी। छत्रसिंह की अवस्था इस समय १७ साल की थी इसलिए राज्य का अधिकांश कार्य मुहता अखय चंद आदि मनमाने ढंग से करते थे। महाराजा मानसिंह की नाथ सम्प्रदाय में बड़ी भारी आस्था थी परन्तु छत्रसिंह ने वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण कर ली। सं० १८७४ में अंग्रेजों के साथ जोधपुर राज्य की संधि हुई जिसमें कोई १० शर्तें दोनों पक्षों ने स्वीकार की थी। इसी समय युवराज छत्रसिंह का देहान्त हो जाने से राज्य गद्दी खाली हो गई। अंग्रेजों ने यहाँ की बिगड़ती राजनैतिक परिस्थितियों को ठीक करने के उद्देश्य से महाराजा मानसिंह से तत्काल में बातचीत की और उन्हें पूरा आश्वासन दिया कि वर्तमान परिस्थितियों को सुधारने में वे लोग महाराजा को पूर्ण सहायता देंगे और आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे इस पर मानसिंह पुनः गद्दी पर आसीन हुए।

मानसिंह ने गद्दी नशीन होते ही मुहता अखयचंद तथा अन्य षड्यन्त्रकारी ८ व्यक्तियों को भी विश्वास दिला कर मरवा डाला। कई लोगों को कैद किया और कई ठाकुरों की हवेलियों पर सेनाएँ भेजी गई। इस प्रकार अपना पथ निष्कंटक कर पुनः राज्य कार्य देखना प्रारम्भ किया। यह सब होते हुए भी राजनैतिक षड्यन्त्रों तथा जागीरदारों के गुप्त आक्रमणों के बराबर निरन्तर चलते रहे। नाथों के प्रति अत्यधिक श्रद्धा होने के कारण भी राज्य कार्य में कई प्रकार के विघ्न उपस्थित होते रहे। अंग्रेज अधिकारियों के साथ भी अनेक बार मन

मुटाव हुआ तथा उनके साथ की गई सधि मे भी हेरफेर किया गया। अन्त मे उन्होने उलझी हुई परिस्थितियो से विक्षिप्त होकर सन्यास ले लिया और मारवाड छोड कर गिरनार की तरफ जाने का विचार किया परन्तु तत्कालीन पोलिटिकल एजेन्ट लडलो के समझाने से वे राईका बाग मे रहने लगे और अहमदनगर से जसवतसिह को लाकर अपना उत्तराधिकारी बनाने की इच्छा प्रकट की। वि० स० १६०० मे उसी स्थान पर उनका देहान्त हो गया।

चालीस वर्ष के दीर्घ राज्यकाल मे उनका एक भी वर्ष पूर्ण शान्ति और सुख से व्यतीत नही हुआ। परन्तु इन परिस्थितियो मे उनके जिस व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था, उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति तीन प्रकार की काव्य-धाराओ मे प्रकट हुई है। योद्धाओ के शौर्य और उत्साह की प्रशसा आपत्तिकाल मे काम आने वाले व्यक्तियो पर गीत, दोहे व छप्पय आदि रचकर की, यह उनका आदर्शोन्मुख व्यवहारिक पक्ष था। जब से आयस देवनाथ के आशीर्वाद स्वरूप उन्हे राज्यसिंहासन प्राप्त हुआ था, वे निरन्तर नाथो के भक्त बने रहे और नाथ-दर्शन तथा गुरु-महिमा के गीत पूर्ण आस्था के साथ गाते रहे। जीवन के नीरस व राजनैतिक प्रपचो के बोझिल क्षणो को रससनात करने के लिए नारी-सौन्दर्य तथा प्रेम की सरस भावनाओ को विभिन्न राग-रागनियो के सहारे अभिव्यक्ति देते रहे। यद्यपि उनकी साहित्य-रचना स्वत स्फूर्त्त है, परन्तु वे साहित्य की चिरन्तन महत्ता व काल को पराजित करने वाली शक्ति से भली-भाति परिचित थे। इसीलिए उन्होने चारण कवियो को अनेक गाँव जागीर मे दिए और कविराजा बाँकीदास जैसे व्यक्ति न केवल उनके राज्यकवि पद पर आसीन रहे अपितु अन्तरग मित्र बनने का सौभाग्य भी प्राप्त कर सके। काव्य-कला के साथ-साथ उन्होने चित्रकला और सगीत को भी असाधारण प्रोत्साहन दिया। वे सही मायने मे एक दार्शनिक राजपुरुष, दक्ष राजनीतिज्ञ, प्रतिभा-सम्पन्न कवि और विभिन्न कलाओ के मर्मज्ञ थे। उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे यदि यह कहा जाय कि राजस्थान के उस सक्रान्तिकाल मे जब सभी राजा प्रभावशून्य से हो गए थे, केवल महाराजा मानसिंह ने अपने प्रभाव को अक्षुण्ण ही नही रखा, साहित्य-सर्जन के माध्यम से उस काल पर सदा के लिए अमिट छाप भी अकित की है, तो अनुपयुक्त नही होगा। कर्नल टॉड जैसे विद्वान् राजनैतिज्ञ भी उनकी योग्यता और बहुमुखी प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना नही रहे थे।

मानसिंहजी ने राजस्थानी, ब्रज, सस्कृत व पजाबी भाषा मे ५० के करीब गद्य-पद्य रचनाओ का प्रणयन किया है, जिनका परिचय परिशिष्ट मे प्रकाशित

लेख में दिया गया है। प्रस्तुत अङ्क में प्रकाशित शृंगार रसात्मक पदों का जहाँ तक सम्बन्ध है उनका वास्तविक आनन्द तो पाठकों को इन्हें पढ़ने में ही मिलेगा परन्तु उनके काव्य-सौष्ठव के सम्बन्ध में यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि कवि ने यहाँ की संस्कृति के अनुकूल प्रेम भावनाओं की गहराई को आत्मसात् कर अत्यन्त सहज, सरस एवं मार्मिक अभिव्यक्ति इन पदों में दी है। स्थान-स्थान पर मौलिक उपमाओं कोमल वर्ण-विन्यास और ललित शब्दावली के द्वारा भाव भंगिमाओं का चित्रण प्रस्तुत कर काव्य को हृदयग्राही बना दिया है। अनेक पदों में स्वकीया के प्रेम के अतिरिक्त परकीया की कामातुरता और लैला मजनूं तथा हीर रांझे की प्रेमासक्ति को भी कवि ने विशेष प्रकार की उन्मुक्तता के साथ प्रकट किया है। अधिकांश पदों की भाषा राजस्थानी है पर कुछ पद व्रज व पंजाबी भाषा में भी लिखे गए हैं तथा उनमें भी राजस्थानी शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ बिना किसी संकोच के किया गया है। पद रचना राग-रागिनियों के आधार पर ही की गई है इसलिए इनका वास्तविक आनन्द इन्हें गाने तथा सुनने में ही है।

उक्त पदों का सम्पादन तीन प्रतियों के आधार पर किया गया है। दो प्रतियाँ हमारे संस्थान के संग्रह की हैं। मूल प्रति (क) का पाठ यहाँ प्रकाशित किया गया है तथा शोध संस्थान की अन्य प्रति (ख) व तीसरी प्रति जो श्री सीताराम जी लालस के संग्रह की है (ग) का उपयोग पाठान्तर के रूप में किया गया है। मानसिंह जी ने अपने अधिकांश शृंगारिक साहित्य में अपना उप नाम 'रसराज' अथवा 'रसीला राज' रखा है। इसी आधार पर इस कृति का नामकरण करने की स्वतंत्रता हमने ली है। इन ग्रंथों में अनेक पद नाथ-स्तुति के भी हैं। रस भिन्नता के कारण उनका प्रकाशन यहाँ नहीं किया गया है। पदों को हस्त लिखित पोथियों में किसी क्रम विशेष से लिपिबद्ध नहीं किया गया है। अतः हमने रागों के अक्षर क्रम से उन्हें यहाँ व्यवस्थित कर दिया है।

प्रतियों का परिचय इस प्रकार है —

क प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर ग्रंथ संख्या २५० आकार ११ × ६ पत्र संख्या १४७ पंक्ति संख्या २७ अक्षर संख्या १६ १७। प्रति का शीर्षक इस प्रकार है— श्री बड़ा हजूर साहबां रै बणावट रा ख्याल।

ख प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर आकार १०½ × ७$_{८}$ पत्र संख्या १४, पंक्ति संख्या २१ अक्षर संख्या १६।

ग प्रति—'श्री सीताराम लाळस, जोधपुर के सग्रह की प्रति है। आकार १०३/४"×७३/४", पत्र सख्या - ८६, पक्ति सख्या - २४, अक्षर सख्या - २१-२२।

प्रारभ की नाथ स्तुति इसी ग्रथ में है। पुष्पिका में लिखा है—'आ पुस्तक मारवाड में गाव बीलाडै श्री बढेर री छै।'

महाराजा मानसिंह का भक्ति-विषयक पद साहित्य पहले ही प्रकाश मे आ चुका था और उसका प्रचलन मारवाड की जनता मे अब भी है। परन्तु उनका यह शृगारिक पद-साहित्य अद्यावधि अज्ञात ही था। आशा है, महाराजा मानसिंह के काव्य-पक्ष को समझने और राजस्थानी काव्य की समृद्धि का अनुमान लगाने मे हमारा यह प्रयास उपयोगी सिद्ध होगा।

—नारायणसिंह भाटी

लेख में दिया गया है। प्रस्तुत अङ्क में प्रकाशित शृंगार रसात्मक पदों का जहाँ तक सम्बन्ध है, उनका वास्तविक आनन्द तो पाठकों को इन्हें पढ़ने में ही मिलेगा परन्तु उनके काव्य-सौष्ठव के सम्बन्ध में यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि कवि ने यहाँ की संस्कृति के अनुकूल प्रेम भावनाओं की गहराई को आत्मसात् कर अत्यन्त सहज, सरस एवं मार्मिक अभिव्यक्ति इन पदों में दी है। स्थान-स्थान पर मौलिक उपमाओं कोमल वर्ण-विन्यास और ललित शब्दावली के द्वारा भाव भंगिमाओं का चित्रण प्रस्तुत कर काव्य को हृदयग्राही बना दिया है। अनेक पदों में स्वकीया के प्रेम के अतिरिक्त परकीया की कामातुरता और लैला मजनूं तथा हीर-रांझे की प्रेमासक्ति को भी कवि ने विशेष प्रकार की उन्मुक्तता के साथ प्रकट किया है। अधिकांश पदों की भाषा राजस्थानी है पर कुछ पद व्रज व पंजाबी भाषा में भी लिखे गए हैं, तथा उनमें भी राजस्थानी शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ बिना किसी संकोच के किया गया है। पद रचना राग रागिनियों के आधार पर ही की गई है इसलिए इनका वास्तविक आनन्द इन्हें गाने तथा सुनने में ही है।

उक्त पदों का सम्पादन तीन प्रतियों के आधार पर किया गया है। दो प्रतियाँ हमारे संस्थान के संग्रह की हैं। मूल प्रति (क) का पाठ यहाँ प्रकाशित किया गया है तथा शोध संस्थान की अन्य प्रति (ख) व तीसरी प्रति जो श्री सीताराम जी लाळस के संग्रह की है (ग) का उपयोग पाठान्तर के रूप में किया गया है। मानसिंह जी ने अपने अधिकांश शृंगारिक साहित्य में अपना उप नाम 'रसराज' अथवा 'रसीला राज' रखा है। इसी आधार पर इस कृति का नामकरण करने की स्वतन्त्रता हमने ली है। इन ग्रंथों में अनेक पद नाथ-स्तुति के भी हैं। रस भिन्नता के कारण उनका प्रकाशन यहाँ नहीं किया गया है। पदों को हस्त लिखित पोथियों में किसी क्रम विशेष से लिपिबद्ध नहीं किया गया है। अतः हमने रागों के अक्षर क्रम से उन्हें यहाँ व्यवस्थित कर दिया है।

प्रतियों का परिचय इस प्रकार है —

क प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर ग्रंथ संख्या २५ आकार ११×९ पत्र संख्या १४७ पंक्ति संख्या २७ अक्षर संख्या १९, १७। प्रति का शीर्षक इस प्रकार है— श्री बड़ा हजूर सायबां रै बणायोड़ा रा ख्याल।

ख प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर आकार १०॥ × ७॥ पत्र संख्या ६४ पंक्ति संख्या २१ अक्षर संख्या ११।

॥ श्री आईनाथाय नम ॥

ॐ नमो निखिलनाथ निखिलगुरु-निजनाथरूप स्यामघनवर्ण जोगमुद्रानाद-धरण निजानन्दमय सु[शू]न्यमण्डल रेवताचलनिवास नवनाथ ब्रह्माविष्णुमहेशादिव-दितचरणारविद, श्रीगुरुदेवनाथ-दास-मान-जीवन-इष्ट श्री जलधरनाथ ध्याये निरन्तरम् ।१।

ॐ नमो निखिलनाथ विश्वनाथ निखिलगुरु पूर्ण निजनाथरूप सगुनस्याम-लघनविभूतिचन्दनचर्चिताङगवलयितगैरिकवसन कर्णकल्पितमुद्रायुगल क्रियमाणा-देशानुरूप योगीजनपरमानन्दकारणैकनाथ ध्वनकलितशृगी दूरीकृतस्वजनद्वैतभ्र[म]-सहस्र हिमरश्मिशीतलयोगप्रभाव अ[मृ]गचर्मासनसम्स्थित सहस्रारकमल रैवतक कलस।चलनिवास।शेषतीर्थमयचरणोदक सकलनाथसिद्धमडलीमडनारविंदज मुकुद-चदधरादिव्र[वृ]दारक[श]वृ दवन्दितचरणारविंद श्री गुरुदेव-देवनाथ-कृपाविलोकन-विश्वदात करण-दासानुदास-मान-मानस-हस स[श]रणानुगतवत्सल श्रेष्ठ श्री जलधरनाथ ध्याये निरतर स्वरूप च गायामि ।२।

राग – अडाणो

ताल – जलद तिताली[1]

देखौ बनरईया फूलन लागी मा
आगम बसत बहार कै।
और की और भई छिब वन की
कोउक झोलै बयार कै ॥ १

वसत वदावन भ्रजत्रिय[2] आवत
फूल कलिन सौं गडवा सवार कै।
रसीलाराज अलबेली छिब सौ
द्वारै नदकवार कै ॥ २

---

[1] 'ताल-जलद तिताली' नही। [2] तिय।

आनत रह उण सूरतडी री
रही तन मन मे छाय ।। २
मत्री जत्री सुकनी जोतसी
यारै हाथ न उपाय ।। ३
उवौ कोई सैण मिलावै सयां[1]
जो मारूडी देवै मिळाय ।। ४

राग – आसावरी
ताल – होरी रौ

म्हारी बाईजी रौ काई छै हवाल
राजिद चालै छै चाकरी ।
जे कोई वदलै जावै वाळौ[2]
उवा नै[3] द्या मुलक 'र माल ।। १
वैरण ह्वै रही छै या चाकरी
ज्यू सोकडली रौ साल ।। २
कस्या कमर कितनीक वार रा
राखा दावण झाल ।। ३
वह्यौ वह्यौ जावै छै यौ जियरौ[4]
साहब हाथ समाळ ।। ४

राग – आसावरी
ताल – होरी रौ

म्हारौ मारूडौ रमै छै सिकार
सघन वन झगरा अलबेलियौ ।
हाथ बदूक लपेटै जामगी
कमर कसी[5] तरवार ।। १

---

[1]सईयां । [2]वहालो । [3]उवै नै ग । [4]दियरौ ग । [5]कस्या ।

राग – आसावरी
ताल – इको

माई रंग बहार आली
खेलै कान्ह कंवर मतवारो अलबेलो।
मधुर सुरन सौं गान होत है
और झीन नूपरन की झनकार॥ १

अबा मोर केसू फूलै
भंवर भनत पिक करत पुकार।
ऊडत अबीर चलत पिचकारो
रीझत है बरसाने की नार॥ २

राग – आसावरी
ताल – होरी री

बालो बोलो कोयल बाग बन बन में
बाड़ी अमराई री फूल रही मा।
लपट चली छै सुगध पवन री
केसर क्यारो सु लाग॥ १
मणहण भवर मस्त फूलां सु
और उड रह्यो छै पराग।
मारू आसो रसराज बसत में
छिणियक सुगणो र भाग॥ २

राग – आसावरी
ताल – होरी री

म्हारा मारू मिल रह्या छ न काय
जिण दुख री छ बीमारी।
कांई करसो मी बेल्ह अयाणों
लागी छै बिरहा री लाय॥ १

---

[1]मी।

आनत रह उण सूरतडी री
रही तन मन मे छाय ॥ २
मत्री जत्री सुकनी जोतसी
यारै हाथ न उपाय ॥ ३
उवौ कोई सैण मिलावै सया[1]
जो मारूडौ देवै मिळाय ॥ ४

राग – आसावरी
ताल – होरी रौ

म्हारी बाईजी रौ काई छै हवाल
रांजिद चालै छै चाकरी।
जे कोई बदलै जावै वाळौ[2]
उवा नें[3] द्या मुलक 'र माल ॥ १
वैरण ह्वै रही छै या चाकरी
ज्यू सोकडली रौ साल ॥ २
कस्या कमर कितनीक वार रा
राखा दावण भाल ॥ ३
वह्यौ वह्यौ जावै छै यौ जियरौ[4]
साहब हाथ समाळ ॥ ४

राग – आसावरी
ताल – होरी रौ

म्हारौ मारूडौ रमै छै सिकार
सघन वन भगरा अलबेलियौ।
हाथ बदूक लपेटै जामगी
कमर कसी[5] तरवार ॥ १

---

[1]सईया। [2]वहालो। [3]उवै नै ग। [4]दियरौ ग। [5]कस्या।

घाय रचा छ धुरी मिळ चपळ
वहै रचा सीर कटार।
सिस सीज वीरा चितेरा सुरत[1] री
उण वेळा री उणिहार ॥ २

राग–आसा जोगिया
ताल – वसत तिताली

मारू आयो छै सौ कोसां सूं चाल
बाई थांरै कारणीयै।
मजन मजन करो लाडलो
अतर सवारो बाळ ॥ १
पहरौ भूखण वसन अमूलख[2]
ल्यावौ सामां चाल ॥ २
दौड़धो लग अब जाय वधावौ
भर मोतीड़ां रौ थाळ ॥ ३
सुण सजन हरख्या छ[3] सारा
सखियां ह्व रही[4] निहाल ॥ ४

राग – आसावरी
ताल – होरी री

बरात चलूगी[1] प्यारे नई दुलही कैसी लावोगे।
बेसक ब्याहो मिवचा मै राजो
मोहि सन[2] मिलके सिघावोगे ॥ १

राग – आसावरी
ताल – हारी री

समास सोजाजी प्यारे म कम लाई है मासनिया।

---

मुरतडी री ल ग। [2]अखियार। [3]अमोलक। [3]है। [4]रही है। [1]चा
ग प। सम के।

विन जल कहु हरी तुम देखी
अब बिब की बेलिया ।। १

विन कसमीर होत कहु लाला
केसर केरी बगिया ।
रसीले[1] राज इते दिन राखी
अब है तुमारी अलबेलिया ।। २

राग – आसा जोगिया
ताल – जलद तितालौ

आलीजा सग लीजोजी म्हानै लीजौ
राज चलौ तौ जे[2] पना परदेस नैं ।
नेह[3] बदी नैं छै अवलबन
आप विना कुण बीजौ ।
झम झम झूमा पागडे
इतनी महर म्हासु कीजौ ।। २[4]

राग – आसा जोगिया
ताल – जलद तितालौ

जाण[5] देस्याजी नहि थानै आलीजाजी ।
पैलौ विछोहौ उवौ मारू म्हासू नही नीसरै
परदेसा री मुहम[6] बतावौ ।
और कोई किसीय बहानै आलीजाजी[7] ।
राज बहुत विधसू समझावौ ।
यो[8] मनडौ नहि मानै ।। १

राग – आसा जोगिया
ताल – जलद तितालौ

परदेसा नू ना सिणवै
दरद बदी रौ हो दरद पना[9] देखणा ।

---

[1]राखी जतन-सौं इते दिन इनको ख ग [2]'जे'। [3]नही। [4]इसके अतर्गत का 'ग' मे नही। [5]आलीजाजी जाण। [6]मुहीम ख ग। [7]आलीजाजी नही। [8]औ। [9]'पनाजी।

धूप पड़ धरती तप, सरवर सूक्या जाय।
जिण घर नवली गोरड़ी, वे क्यूं बाहर[1] जाय ॥ १

राग – आसा जोगिया
ताल – चलद तिताली

राधा न कोई मिळावै स्याम।
विरह[2] जोवन तन जाळ[3] रयो छ
ज्यूं ग्रीखम रो घाम ॥ १
मछळी नै जळ कोई मिळाय
कै कोयलड़ी न ग्राम।
अब तो वेग मिळ उवो सांवळ
हारधां रो विसराम ॥ २

राग – आसा जोगिया
ताल – चलद तिताली

सिकारां रम रह्यो म्हारो राज।
संगा बाज[4] राजे असवारां
सग असमलो साज[5] ॥ १

राग – आसा जोगिया
ताल – चलद तिताली

परिभ्रत कहु कहु गुन गुन अहि अहि,
भ्रम भ्रम अलि पिऊ पिऊ पपय्या[6] चकोर चक चक कल कल हंसनि कुल
सर सर वन वन सिखर सिखर मोर
कमळ कमळ डारि[7] डारि गुन गुन ॥ १

राग – आसा जोगिया
ताल – चलद तिताली

सखि लाल चुनरिया चमकै
हरी हरी कचुकिया तन पै

---

[1] बाहिर। [2] विह। [3] जाय प। [4] बाज साज ब राज बाज ग [5] समाज म
[6] पपहिया। [7] चकवे। डार डार ब प।

लहैगा[1] गुल अनार ता पर लपैदार
नथनी कठसिरी[2] चुरियां चमकै*
तैसे ही नूपर चरनन झमकै ।। १

राग – आसा[3] मारू[4] री भेळ
ताल – धीमो तितालो

चगी ए कलालनी चगा दारुडा पिलादै[4] ।
बाई घर आयौ छै मारू मतवाळडो
ऊनै ज्यू त्यू विलमादै[5] ।। १
वाई घर म्हारै कै थारै बारणै
तीजी ठौर न जाणदै ।। २
वाई थारो उवैरौ उणिहारौ[6] एकसौ
जो-सू विलम रहैलो ।। ३
वाईजी सू थोडो-सौ पिया मतवाळौ हुवै
इसौ चौसरौ कढायनै[7] ।। ४

राग[8] – आसा मारु री भेळ[9]
ताल – धीमो तितालो

दारूडी पिला द्यौ सायबा दारूडी पियण री घणै[9] री म्हानै चाव ।
रग केसर की[10] या मन कै सनेह सु
सौनै री सीसी और मीनै[11] कै पियालै अलवेली ।।१

राग – आसा[12] मारू[13] रौ भेळ
ताल – धीमो तितालो

झळक रया छै तीखा सैलडा
अमा कमधजियौ रमै छै सिकार ।

---

[1]लहगा । [2]कठसरी । *इसके अतर्गत का पाठ 'ग' मे नही । [3]राग आसावरी, ताल धीमो तितालो । [4]माड री भेळ ग । [4]पिलायदै । [5]विलमायदै । [6]उणिआरी । [7]कढायदै ख ग । [8]राग–आसावरी । [9]माड ग. । [9]घणा । [10]किया । [11]महीन । [12]राग आसावरी । [13]माड ग ।

सांम सूर न्हार उठ भाव छै
ले मैं जखम सिर मेल।
घड़ीयक सूरज ठहुर देसै छै
सिर ऊपरलो खेल ॥ १

राग – माधा माड़* री मेळ
ताल – धीमो तिताली

महोलो तीज रो भालीजाजी।
माड़ माहू मारवणी नारी
इण मेल चित राजी ॥ १
तीज गळे मलमेला मूलै
सखियो गाय रही छ समाजी।
मिळ रही तान सेंघवी रा सुर सूं
बण रहा रंग री बाजी ॥ २

राग – माधा माड़* री मेळ
ताल – धीमो तितालो

विदेसीड़ा रे भायो छ रे चौमासो।
मारग री प्यारो खेद उतारे
म्हारे डेरे से बासो ॥ १
कोठ छोडो छ मलवेसी पंथिया
किणन प्यास री प्यासो।
घड़ीयक ठहैर[1] वेसने जावै
सोजणियां री तमासो ॥ २

राग – पाखावरी[1] माड़[2] री मेळ
ताल – धीमो तितालो

जाक जागे मींन प्यारे माहो घर आवो मलमेलिया।

---

[1]राग–पाखावरी [2]माड म। रही छै। [3]राग–पाखावर। [4]मामड प। प्याप।
[5]ठहर [6]राग–पाखावरी। [7]माड ग। [8]कबा ही।

रसीले राज उवा मांन मनावेगी
उवा विन बुलावै तुम्है[1] कौन ।। १

राग – एंहिग
ताल – जलद तितालौ

क्या रग डाला वे लैला नजरू में ।
आपै आज साहब नै रचिया
उस मै रग्या दिल मजनू नै ।। १

राग – एंहिग
ताल – जलद तितालौ

तू तौ मैंडड़ी ज्यान, सिपाईडा रे ।
मिहर करै मैडी गलिया आवै
इतनी अरज मैडी मान ।। १

राग – एंहिग
ताल – जलद तितालौ

दिलनू दिलनू लगी वे तेरी याद ।
जी चाहीदा रसराज उस गारी दे दे मुखडै नू हारे स्याणा ।
उस जूटी[2] भौवा उस तिलनू ।। १

राग – एंहिग
ताल – जलद तितालौ

निजरादे मारे मर गये मास्यूकां ।
हो मास्यूका तुझकू एता दरद न्ही[3] आया
पुरजे तौ पुरजे अपना ज्यान वदन कर गये ।। १

---

[1] ब । [2] जटी ग । [3] नही ।

राग – एहिग

ताल – मधर तितालौ

भवरा बस क्यूं कर तनू कीता जाय।
इस्क लगाय रसराज सामिल रहणा थाले हारे स्योणा
सांभा दिल तेरे हमरा ॥ १

राग – एहिम

ताल – बसब तितालो

लाल दुसाल वाळा मियां मैंडा।
थोंकी नी पगियां रलती सरहयों मेरा स्योणा।
झूमक काळा जुलफां थाळा साला[1] ॥ १

राग – एहिम

ताल – बसब तितालो

हो मुलका यारां दे बे बागबहार।
मूहां स नैन गुल लाला
नजरां वी सुसबोहि मियां ॥ १

राग – एहिम

ताल – होरी री

मायी मायी मारवणो मिलण मास्को पर मायी छै म्हां वालो पीव।
हुसत्यारी हौद पर असवार
तुरियां रा भूलरा मै धजदार
जोत जगामग जरी जबार[2]
सग असमेला छ सिरदार ॥ १

राग – एहिम

ताल – होरी री

रग माग्यो रसिया जी हा[3] रसिया जी[4] थारे सेहरे।

---

[1] लाल। बाग बहार रा म.। [2] यह चरण प्रादर्श प्रति में नहीं। [3] हो नहीं। [4] जी हो।

रसराज दिल लाग्यौ चीरै तुररै
ज्यान लगी थारै परसग उमग ॥ १

राग – र्एहिग
ताल – होरी रौ

सावरौ वसैं मेरौ परदेश
सयो होरी का सग खेलू ।
विरह् विथा जोबन की कथा कौ
सब दुख तन पर झेलू ॥ १
लाज गमाई विताई दिवस केते
पतियां लिख लिख मेलू ।
अब जो मिलावौ रसराज मोहनकू
रसक कवर श्रै रस लेलू ॥ २

राग – र्एहिग
ताल – होरी रौ

हो कासोद म्हारै प्यारै री मिलण हारे कब होसी उवो ।
रसराज वहोत दिना रा बिछड्या
कबीय तौ म्हारी दिस जोसी ॥ १

राग – र्एहिग
ताल – होरी रौ

सैणादा मिलणा नित होय, साई उवो दिन अब कर वे ।
रसराज दिल लग्या वे जिन सकसू सै वे स्याणा
कोई ल्या[1] मिलावै सैण उवौ ॥ १

राग – भैराक
ताल – आडौ तितालौ

सिपाइया[2] मेरे आमिल पीर की दुवइया[3] वे ।

---

[1]ला । [2] सिपाया ख ग । [3]दुवाइयां ग ।

राग – एहिम
ताल – अमर विलासी

भवरा वस क्यूं कर तनू कीता जाय ।
इस्क लगाय रसराज सामिल रहणा मासे हारे स्याणा
सोडा दिल तर हुमरा ॥ १

राग – एहिम
ताल – अमर विलासी

लाल दुसाल वाळा मियां मैडा ।
बांकी नी पगियां रलती सरह्यां मेरा स्याणा ।
झूमक काळा जुलफां वाळा लाला[1] ॥ १

राग – एहिम
ताल – अमर विलासी

हो मुखड़ा यारां दे वे बागवहार[2] ।
मूंहां स मैन गुल लाला
नजरां दी सुसबोहि मियां ॥ १

राग – एहिम
ताल – होरी रो

मायो मायो मारवणो मिलण मारूको घर मायो छै म्हां मासो पीव ।
हुसत्यारे होद पर असवार
सुरियां रा झूमरा मैं भजदार
ओत अगामग जरो अबार
सग असवैला छ सिरदार ॥ १

राग – एहिम
ताल – होरी रो
रग लाग्यो रसिया भी हो रसिया को[3] थांरै सेहरै ।

---

[1] लाल । [2] बाग बहार का भ । [3] यह चरण प्रामाणिक प्रति में नहीं । [4] को नहीं । [5] भी हो ।

राग – कल्याण
ताल – जलद तितालौ

आज गोकुळ वरसानै गाव विच
भाभ मदिल रा अम्रत धुन वाजै अे मा।
इक दिस कान्ह् इक दिस राधा
रति मनमथ दोऊं लख लाजै ॥ १
होरी खेलत भई साभ सुरगी
जुव जन मिल जुवती सज साजै।
रसीला राज त्रिय आई ते रही भुक
वसत वदावन देख[1] न करजै ॥ २

राग – कल्याण
ताल – धीमौ तितालौ

कोयलिया वोल उठी री मा
आज तौ अचानक ही वगिया मै।
कौन से नवेली पवन भकभोलै
कौंनसी सुवासन ई मै घुटी ॥ १
रसीला राज वसत जानी मै
पियपै गवन की आस तौ जुटी।
यासै सुरत छुटी इक साथै
मानू हिंडोरै की लर ज्यौ तूटी ॥ २

राग – कल्याण
ताल – धीमौ तितालौ

वेलरिया वन छायौ मा
पतवन फुलवन डारी हरि हरिया।

---

[1] देव ग।

वांका लिवास ठेरा सब पानी पोखा मे
पाय की पनियाइयां[1] बीछु डांक[2] मे ॥ १

राग – भैरव
ताल – होरी री

ए कलाळी म्हारे मारू ने दारू दनां ।
यो मतवाळो[3] तूं कामणगारी
मोहि लियो छै तीखां[4] ननां ॥ १

राग – भैरव
ताल – होरी री

ए कलाळी म्हार मारू ने समझावे ।
या दारूड़ी कौठे कौठ तूं दे[5] छे
सो म्हांन बतलावे ॥ १

राग – भैरव
ताल – होरी री

रही झूम झूम[6] सांवरे रे गळ लाग ।
रसराज के[7] ही बहार हुई स्यांणा
गुलाब सें सोवन चमेली झूम ॥ १

राग – भैरव
ताल – होरी री

सहेल्यां म्हासु बोले राम गहेलो[8] ।
उवारी म्हारी छ पिछांण[9] कुण री
उवारो[10] मिलण सुख रो सुहेलो छे[11] ॥ १

---

[1]पनियां रा प । [2]बीछू रा डंक । [3]मतवारो म । [4]तीखे रा । [5]देसीगे प । [6]झूमि रा प । [7]केई रा म । [8]गहेलो है । [9]पीव है । [10]उवारो म । [11]छैल रा म ।

राग – कल्याण
ताल – जलद तिताली

आज गोकुळ वरसानै गाव विच
झाझ मदिल रा अम्रत धुन वाजै अे मा।
इक दिस कान्ह इक दिस राधा
रति मनमथ दोऊ लख लाजै ॥ १
होरी खेलत भई साझ सुरगी
जुव जन मिल जुवती सज साजै।
रसीला राज त्रिय आई ते रही झुक
वसत वदावन देख[1] न करजै ॥ २

राग – कल्याण
ताल – धीमौ तितालौ

कोयलिया वोल उठी री मा
आज तौ अचानक ही वगिया मै।
कौंन से नवेलौ पवन झकझोलौ
कौंनसी सुवासन ई मै घुटी ॥ १
रसीला राज वसत जानी मै
पियपै गवन की आस तौ जुटी।
यासै सुरत छुटी इक साथै
मानू हिंडोरै की लर ज्यौ तूटी ॥ २

राग – कल्याण
ताल – धीमौ तितालौ

वेलरिया वन छायौ मा
पतवन फुलवन डारी हरि हरिया।

---

[1] देव ग।

कुमदन छाये सरोवर नदियां
भंवरन कलीन बेलरियां ॥ १

सारन छाई रन उमारी
चद कूं छायौ किरन छबि भरियां।
रसीला राज पिय कूं मैं छायौ
भौर मेरे सग की सहेलरियां ॥ २

राग – कल्याण
ताल – सूर फाकता

बोलै मा कोकिल कहुक बोल
फूली बन सकल भवरगन डोलै
वृदावन की सघन बनी बिच
बज वांम स्याम झूलैं मिल सरस हिंडोलै।
मतर झकोरन जल चंद्र
चारु चदन कसमीर कुटीर
मिलाय चलावै है चाहि पर चायल
कसक जुवन अनङ्ग री—
पुस्प गद यौ जुवतिय जिहां खेलै ॥ १
कुसमाकर आयौ नव त्रिय मिल मिल
निरतत बाजे रसन रचे नूपर झनकत
झांझ बजै डफ श्रवग छसही यौ रागरग
बहुले भेद भय तान तरग सुरग
यौ राधा स्याम निरख चहुधा चल खेलत दोऊ
सज प्रामद मै मोहत सब कू
जमना तटी पर रसीला राजम लैहै
छल भए रस बसंत महोलें ॥ २

---

[1]कुस म। [2]भैं ग।

राग – कामोद कल्याण
ताल – धीमो तितालो

डका दै चढ्यौ मनमथराज।
रूप गुनन के सस्त्र सुहाए
जोबन सुभट बका लै ॥ १

राग – कामोद कल्याण
ताल – धीमो तितालो

पपीया बोल सुना पीया को नाम।
इन ग्राखिन कौ देखबो दुहेलौ
ग्रनत रहै कहु डोल ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

ग्राली री ग्राज बन्यौ है कजरा नैनू कैसैं तेरैं,
ग्रौर भाल पर सुरख बिंदलिया।
हीरा मोतिन की नथनी ग्रौर कठसिरी चमकतो
त्यौ है हरचौ लहैगा[1] लाल चुनरिया ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

तैं मोरी गैल परचौ क्यू काना
ग्रैसौ कैसौ है रे मेरैं नैनू[2] कजरवा
सुसरारि[3] माईकै मैं
मोहि चवाई दिवावैगौ
रसराज तू मदवा भयौ महरवा[4] ॥ १

---

[1]लहगा। [2]नैन। [3]ससरारि। [4]महिरवा।

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

विरहा धूम मचाई मोरे राम।
रसराज स्याम महोबत यूं ही
विसर गया कर गया मैंनूं बदनाम ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

सांवरो छोड़ चल्यो मोरे राम।
रसराज प्रागे तो बाहिर सें जानतो
अब तो जानत मै अतर को भी स्याम ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – धीमो तितालो

चमकै मूंदा झूमकै वालो नथनी।
दुपटा नी काला पलूड़ा सांहैं
सोहै जरी वाला।
झमकै नीमूंद गूंघरू दिल वजाता
सजनूंदा मैं सजनी ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

प्यारा मेरा समज समज[1] बोलदा वे।
समझ बोले आसुं क्या कहोयें सहीयो[2]
दिलकी कधी मुझ सें नहीं खोलदा वे ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – सवारी

मा क मिला तै चमूर जालम

---

[1] प्यारे। [2] समझ। [3] सहियो।

मुझसै जो मिला, तौ मिल मिल बिछडा क्यू रे जालम[1] ।।
जो बीतदी सौ जमीर मालुम आलम कैसे जानै
रसराज दान मिजाज मालुम ।। १

राग – हमीर कल्याण
ताल – धीमी तिताली

मारूडा म्हारा राज लाडला हो मतवाळा बना
आगण मोत्या चौक पुरावा
महला नै पधारौ म्हारै आज ।। १

राग – हमीर कल्याण
ताल – होरी रौ

आज मन मै लगी सजनी, सावरै सुदर कै मिलन को ।
नही विसरत उवा की सुध मोहि कू
हसन बोलन औ चलन की ।। १
बरस मास पख दिन अइ[2] रजनी
पैहर[3] घडी मै उवा की[4] पलन की ।
रसराज तन कौ विरह नही जाकै
नंही है जुदाई दिलन की ।। २

राग – हमीर कल्याण
ताल – होरी रौ

आयौ हे राजकवर सज कै अलवेलौ
नौबत बाजत नीसान ।
मोत्या थाळ भराय वधावौ
गावौ मगळ गान ।। १

राग – हमीर कल्याण
ताल – होरी रौ

स्याम मेरौ लहरचौ भीजै, बरसै वदरा झुक झुक ।

---

[1]'जालम' आदर्श एव ग प्रति मे नही । [2]अरु । [3]पहर । [4]कै ।

सीत न व्याप भयो रसवारो
विरह मगन रयो' घुक घुक ॥ १
मो मैं चूक परो के काहू
भोर सिर-जोर नें मिलाय भई तुक
खोलत नहीं रसराज कपाटन
मला रहत हौ क्यू रुक रुक ॥ २

राग – हमीर कल्याण
ताल – पाठ चौताली

गरवा लाग मिलूंगी पीमरवा मैं तोरे।
रसराज तारे कारण मैं रहो हु
सारी रैण भर जाग लाग' ॥ १

– काफी
ताम – दको

महासी म्हारी सीख री भालीजाजी हो।
मीजो म्हारा पना मारू घणा नें सनेह सू
हण सांवणियां री रीझ रो ॥ १

राग – काफी
ताल – बजर तिताली

धेम म्हारो महरपी मोज की राज उयी स्याम।
महोत चतन सु म्हे महरपो रगामो
सहज सुभाव थे थोरी हो ॥ १
लोक-लाज सुं बहोत डरी छां
मी मन बरषा भरघो।
रसराज भरा सो कवर दिल रखो'
रग डारो केसरघो ॥ २

---

रह्यो। जाग न प। ³राखी। डारो थी।

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

पना घर आज्यौ रे लाडली छोटी रा वना।
रसराज नेह लगाय विसर गया
अेकरसा मिळ जाज्यौ[1] रे ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

पना धीरा बोलौ रे लाडली राधा रा वना।
रसराज यौ व्रज गाव चवड़या
चातुरी सु द्यौनै महोलौ[2] म्हानै ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

बाई जी मेला[3] आवै छै राजकवार।
थोडा[4] दिना मै सावलडै थानै
कर लिया तावैदार ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

मोही रे मेरी[5] ज्यान पनाजी थे तौ।
तरह अनोखी रसराज निजर री
दुपटा री न्यारी छिब सोही रे ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

लागी रे थासू नेह पनाजी म्हारौ।
अब जोरा-जोरी तौ निभावौ सावळडा
थारी लैर म्हारौ मागौ[6] रे ॥ १

---

[1]आजो। [2]महोली रे। [3]महला। [4]थोडा सा। [5]म्हारी। [6]सागी ख. ग।

राग – काफी

ताल – धमार तितालो

सायबाजी म्हारै महल पधारौ नें म्राज।
फिरपा करौ सायबा महल पधारौ
रगभीना[1] रसराज ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमो तितालो

धीरां धीरां बोलोजी निजरधां रा लोभी बोलोजी।
निजरां रा लोभी प्यारा थे।
देख'र मन मरौ कमधजिया
*भवर पटा में मथ भळक
हो चंगी मथ भळकै जी* ॥ १
सरहृदार मति[2] हो कमधजिया
बनड़ी छै निपट नादांन।
रसीमा राज थांसूं इतनी बीनती
चाकर रया म्हे थारा
खासा चाकर थांरा जी ॥ २

राग – काफी

ताल – धीमो तितालो

मोत्यां रो गजरो सेज मैं सायबा भूली मैं।
देख्यो मणद महीं सासू धिगांणी
सखियन सग भूली मैं।
देस पारौसन कौ पिया सायबा
दुख दे रह्यौ मोहि सूझी द ॥ १

---

[1]कमधजिया वाला राग। *इसके मतर्गत का पाठ प मैं नहीं। [2]मती। [3]खाया।

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

सयाणो म्हारो प्यारो कद आवैलो।
रसराज बौहत दिना सू विछड्यो[1]
उण मुख सु वतळावैलो ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

सावण महीनैं साहबा घर आइयो री।
फूले बिरछ और लता लपटानी
ज्यू ही म्हारैं गळ लपटाइयो।
वदरा ह्वै झुक झुक मतवारे
सायवा म्हारैं देस वरसाइयो री॥ १

राग – काफी
ताल – होरी रौ

आई वसत कत घर आयौ।
अवराई सी आस फली मा[2]।
मन केसू फूले सखियन के
सुख कै समीर की लपट चली॥ १
जुवती जुव-जन भवरा-भवरी
गावत घमाळें वहार मिली।
बिरछ बेल ज्यौ अब मिल कै होयगी
रसीलाराज सै[3] रगरली॥ २

राग – काफी
ताल – होरी रौ

मदवा मारू लोयण लाग्या, मारूडाजी।

---

[1] विछड्या। [2] माई ख ग। [3] सो।

थांरे भारण रह्यो भांख भरोखा
थांरे तो कारण रेंण जाग्या ॥ १

राग – काफी

ताल – जलद तिताली

फाग के दिनन कसी मान री
चल कुञ्जन[1] भवन कुं।
ये दिन रेन अमोलक जाव
समझै तूं सब ही सुजान ॥ १
आनद मानें सौतन की सखियां
देगी हमैं दुख दान।
पीछ चाहे सौंही करगी
उवा ही राधा तू उवौ ही कान ॥ २

राग – काफी

ताल – जलद तिताली

राधे जु अब आए उठे विन अखियन चित चोर नैन भवरवा नाचना[1]।
कोयल बोल बोलती हैं मधुरे
मुरवा की नांई चलत वारी वंम ॥ १
गुटकत[1] कुच कबवा मैं पारेवा
केसर क्यारी सौ सरीर लसत अस।
रसीला राज तू बसत रूप भई
बसहो हैं पिय तो आगे न रहि है बच ॥ २

राग – काफी

ताल – दीपचंदी

मैंसे फगवा मैं काहे कुं जइयें री
घर हांन अेक दूजी सोक चवाई।

---

[1]कुञ्ज बन। सौंही। नाचत। मतवारी। [1]बन। [1]गुटकत।

कुल की बहुरिया परायै पिय पै
नाहक छतिया छुवईयै।
नए नए वसन जरी के भिजवईयै
गौरी गौरी बही मुरकईयैं।
रसीलाराज याकै सगत[1] होय क्यू न
मदन देव कौ मनईयैं॥ १

राग – काफी

ताल – धीमो तितालो

काना अलबेला रे काना।
मोरैं हेत मगायौ सौं दीनौ
और कू हार हमेला रे॥ १

राग – काफी

ताल – धीमो तितालो

बाबल घर मेलैं अमा मेलै अे म्हानै सासरियै पहलै[2]।
सखिया सतावै अमा तू ही डरावै
औ[3] थारौ पर कर लें[4] लै॥ १
सग की सहेल्या यौं ही जिकर करै छै
जाती सासरियै नवेलै।
मै नही जावौं उवौ देख्यौ बेदरदी
खट नट म्हारी सग खेलै॥ २

राग – काफी

ताल – होरी रौ

काहे कू बजाई लाल बसुरिया
मोहि ली गोकुल की गुजरिया कन्हइया।
पिय बरजी न रही है सावरै
लर रही सासू ननदिया॥ १

---

[1]सग सौ। [2]पहेलै। [3]थो। [4]लै।

गांव की फाग खेल व्रज वाली
कूंजन[१] कूं सब ही भ्रलबेलिया ।
जर जेवर रसराज वारनैं
कहर कियौ इन कारी कंवरिया ॥ २

राग – काफी
ताल – दुमी

उन[१] भ्रासकों का इस्क
कहा किससे[२] भाता हैं[३] ।
महबूब खातर चीज जो कोई
दिल में भाता है ।
उवो[४] जमीन में पैदा होतौ[५] नां
भ्रासमांन स्यूं भ्राता है ॥ १
मत्ये स खनकै नदियां
सायर में मिलाता है ।
बिन हाथूं सैं दरियाव मैं
तिरता तिरता[६] है ॥ २
कांटु के वन में फलता
गुलसन दिखाता है ।
भडके उवो सिर विद्रुम फठी
भ्रविसन[७] की पाता है ॥ ३
कटता[८] है गोस्त तन का
लोहु मसाता है ।
हरदम खुसी महबूब की कै
रंग राता है ॥ ४

---

[१]इन । [२]उस । [३]गिरै । [४]है । [५]उ बो । [६]तौ । [७]तिरता न प ।
[८]भ्रविसन । [९]कटपा है ।

हम रग ग्रेक परी कै
ना खलकत सैं नाता है।
रसराज उसकै इस्क कू
साहिब निभाता है ।। ५

राग – काफी
ताल – इकौ

तखत हजारैदा साई
राझेटा मेरा काहे कू जी तरसाणां।
रसराज अरज करा लगि दा'वण
सहर हजारै नू नहि जाणा ।। १

राग – काफी
ताल – इकौ

नैन लगाना[2] ज्यान जाना ए गजा न[3] भलिया प्यारे
नाहि[4] नीवेलिया फेर बी उसकू सीचनाना खयाल करी।
मन सैं तौ वर[5] वखत वना[6] दिसदा भी उमराव पूता
होता है वेदरद त्यू रसराज किसै सिरदार तौ माना ।। १

राग – काफी
ताल – इकौ

हो हो यार नादाणा
मेरे छैला जी जी यार नादाणा।
रसराज लख लसकरदा निसाण तू
परियादे नैणादा निसाणा ।। १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

अजी बूदा चमकै अेना जो मोतियू दा।

---

[1]दा। [2]लगा ना ल्यान। [3]ए गला न। [4]वाहि। [5]वरखत। [6]विना।

जुगनू वाला चमक रह्या वे।
मन हर लेता सजनूंदा ॥ १

राग – काफी

ताल – जलद तिताली

अजी मेरा सांवरा नवेला सिरदार।
वेपरवाही और चाह भरया महीका
समझवार रीझवार[1] ॥ १

राग – काफी

ताल – जलद तिताली[2]

एकलड़ी नूं मैं सामवा हो छांड पीयारे[3] कहीं विसर गया वे।
रसराज मांसड़सी क्यूं लगाईयां
घड़ी घड़ी नूं पुकारदी सखी ॥ १

राग – काफी

ताल – जलद तिताली

दुपटा किस पर कस कर बांध्या यार।
रसराज किस पर कस न मूहांदी
किस पर पेचांदी मार ॥ १

राग – काफी

ताल – जलद तिताली

मेरी गली से मिरजा बोल गया वे।
मोसौं तोसौं उवासौं नणदी
सब ही सौं रस रास गया वे ॥ १

---

[1]रिझवार। चीमी तिताली च म। [3]बिसारे। दुपट्टा।

राग – काफी
ताल – जलद तितालो

मेरी लैलिया वे कजला सवार ना[१] ।
इन वे नैना विच कजला सवार कै
चलते वटाऊ मार ना ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालो

या इलाही आसिका नू
ल्या मिलावैं परी नू यार मैंडा वे ।
रसीलाराज तू निजर महरदी
सुकर-गुजार मै हौ तैंडडा वे ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालो[२]

हो वि श्रैही[३] जिद मोही रे
दिलभर दिलदार सावलडा तू छैला ।
रसराज सोही नैणा दी नौका ॥ १

राग – काफी[४]
ताल – धीमौ तितालो

अब तौ जालम मिलणा मिलणा
लोकादे ओलभै नही सरमांणा स्याणा
इस्क किया तौ रखना दरद दिलकू सालूम[५] ।
रसराज चद चढा असमान मे
मेरा स्याणा देख रहा वे सारा आलम ॥ १

---

[१]कै । [२]ताल – धीमौ तितालो ख ग । [३]हो विरोही ख ग । [४]आदर्श प्रति मे राग-ताल का नाम नही है । [५]मालम }।

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली

करदी वे याद करदी।
लाज की मारी उवा री[1] बोल न सकदी
इस्कों दी मारी[2] फिरदी रांभणा तर[3] वेखर्णनूं ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली

ग्यांन भटकी महीडा वे तेरी
भांन तांन तरग[4] विचदे मेरी।
रसराज भांन सयांन रगदे विच ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली

टपदी सिरकार[5]
रजा साहब कीसे खडी हुई हो लोको।
रसराज रस बरसदा उनहांदी तांना मैं
जो कोई समझ[6] रिजवार ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली[7]

दिल वसदा वे नंनां वालियां सेरा
मुखड़ा मेहांदे रंग भरा वाला
नए हुसन भरा भरा[8]
भरा हुसदा भंखी कसदा।
नथनी उतार रखदी रसराज स्योंणां[9]
उस स्यामत केहा विसदा ॥ १

---

मारी। मारी फिरदी' नहीं। [3]तेनू वेखरणनू। तरंग है विच मेरी। [5]सरकार।
[6]वार्ये। [7]आदर्श प्रति में राग ताल का नाम नहीं। नर्यी। [8]'भरा' नहीं काम। [9]स्याणा
क म।

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो*

दिल वसदा सुहाणे वालडा गबरू
परिया भी लगाणे चाहे तुज से नेहा
ऐसा तूज[1] सा जी जाणे ।
कोई औरत मुस्ताक न होदी
रसराज तेरे आणे वतलाणें ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

नैणा नू जादूडा कीता[2] वे यार मेरे नै ।
रसराज नैण लगाकर विछडा हारे स्याणा
भूल गया को आखदी मैं उन सैणा नू ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

नेहडा लगावै नैणा वाला[3] वे महीडा
नैण लगा अलवेली सूरत पर ।
रसराज कहो सचोया गला मिलणे दीया वे
आठ पहोर घडी घड़ी चाहणा जीडा ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

बुझदा वे राझेटा हीरादा हालनी ।
गिर पड़े[4] रसराज विरछ बी
फूटै सरवर पाल नी ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

महीडा वे नही माने ।
सारी रैन मनाय रही हू

---

*आदर्श प्रति मे राग-ताल का नाम नही । [1]जैसा ख ग । [2]कीना ग । [3]नाल । [4]परै ।

वदी सौ नहीं कछु आन
साको[1] वे तकसीर ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमी तिताली

मुखड़ा महबूबां दा चमणा बाग बहार दा।
रग हजार रसराज बासूं मैं
मांनु भरमुटड़ा ससार दा ॥ १

राग – काफी[2]
ताल – धीमी तिताली

मैंनू मोही सांवल मोही नैणां वाला वे
स्याणा वे नैणां दे निखारे।
रसराज आसक जेही
हीर सखत हजार।
हां रे मै तो लीतो गया
इस्कादे हजारे ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमी तिताली

रग भरी सानूं सैन सुख दीयां वे।
तान तरंग टपैदी क्या खूब।
रसराज नदी दी लहर लड़ झूलें दी वे
मान भरी मासूका[3] दे मुख दी ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमी तिताली

सरदा टीका पसूंदा प्यारियां वे
जाण बक पता न प्याराजी का।

---

[1] तोही। [2] पाण्डु प्रति में राग ताल का नाम नहीं। [3] मासूकी।

मोतिया दी लडिया रसराज मेरे जाणे
नख सासि पायदी लैन वनी का ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

सुध ले गया वे जालम वेखौ सयौ
इस्क लगाय साडे नाल स्याणा ।
मैं कहती थी मुसवर नू सुध डाल तसबीर[1] मै स्याणा
रसराज यौ की हुवा मुझे नाहो मालूम ॥ १

राग –काफी
ताल – धीमो तितालो

हीरादा राझणा राझैदी हीर वे ।
क्या करे कोई आलम अवलिया
लग गया नजरादा तीर वे ॥ १

राग – कालिगडो
ताल – जलद तितालो

अलवेलियौ महला आवै
सज[2] सोळै सिणगार सहेली[3] बनी मारवण हे ।
अतर डमर नौबत धुन चगी
सहनाई रग छावै ॥ १

राग – कालिगडो
ताल – जलद तितालो

आज फिर म्हारै घर आयौ रै सावरा
हारे झूठा बोला रै ।
काल कयौ काई आज कहै छे
घर घर देता महौला रै ॥ १

---

[1]तकवीर । [2]काई सज । [3]नवेली ख ग ।

राग – कालिंगड़ो

ताल – जलद तिताली

कचवा की कस खोलो मत राज दुल्हारा कमधजिया
नवल बनां म्हांर दरद लगे छे लाज भावे छ।
खोलण[1] दे म्हांरी राजगहेली
सोवन कळस गमाया ॥ १
जोयो म्हे सारो महोलो[2]।

राग – कालिंगड़ो

ताल – जलद तिताली

गोरो नैणां री काजळ लागे प्रे
सीसी सीसो नीको री।
रसराज या नैणां रे कारण
सावगी सारी रैण जागे प्रे ॥ १

राग – कालिंगड़ो

ताल – जलद तिताली

आंणीजी पना आंणी म्हे रावळी रीत।
आज मोर रसराज काल मोर
मुख देख्यां की प्रीत ॥ १

राग – कालिंगड़ो

ताल – जलद तिताली

म्हासी थांने देसां जी केसरिया दुपटा री
अजी म्हारो चित लाग्यौ छे थांसू वाला।
रसराज चाकर थांरा म्हें रहस्यां
क्यूं ही कहो मग सारी ॥ १

---

खोल देने । यह चरण आदर्श एवं ब प्रति में नहीं है। हारा। हो।

राग – कालिगडौ

ताल – जलद तितालौ

नहि मानौ थे मदवाजी
काई बोल रया छौ अमला मे बैण अलबेला हो।
थारौ जाय काई लाज मरा म्हे
हसैली नणद बाभीजी ॥ १

राग – कालिगडौ

ताल – जलद तितालौ

पायलडी भणकै छी माभल रात।
नीद कै बखत सुणै छी म्हेतौ
सेजडली पर घात ॥ १
सावळडा री सौगन म्हे देस्या
सखिया पूछै मिल कर सात।
कह्यौ नै रसराज राधिके
काई काई हुवै छी बात ॥ २

राग – कालिगडौ

ताल – जलद तितालौ

रसईयै बिन जावै या रसोली रात।
चटकै गुलाब श्रौर चिरिया चहकै
किणनै कहु मा बात ॥ १

राग – कालिगडौ

ताल – जलद तितालौ

नालर सावरी रग लाग्यौ छै गोरै गात।
लाग्यौ रग मजीठी चूडै
छूटी जुलफा रै साथ ॥ १

कवळपगी मिसी रग लाग्यो
सोवन हास सुहास ।
रसराज सावी तरह रग लाग्यो
और रंग लाग्यो पगी रास ॥ २

राग – कामिपड़ी

ताल – चलद तितालो

बाढी म्हारी क्यु चल आयो रे भवरा ।
ऐसी सवाद कठासू घटाऊ
रसवाळे वो नहीं चाख्यो रे ॥ १

राग – कालिपड़ी

ताल – चलद तितालो

सायबा रै म्हे कोई जाणा थारा छळ-छद ।
म्हांसू और दूसरा और ही
निसरा मूं ही बहाणा ॥ १

राग – कामिपड़ी

ताल – चलद तितालो

सारी रात में कोयल कोठै बोल रही मा ।
रह रह पिछली रात नै सुहेलो
अंमुवा की डारी डारी बोल ॥ १
इण मैं वसंत रा सुगंध पवन मैं
पास पास झकझोल ।
नई ब्याही किणियक बिरहणी री
बैरण खाती खोल ॥ २

---

रा पढ़ । [1]विरहण ।

राग – कालिंगडौ
ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारू म्हानै दारू ना पिलावै ।
अजी इण दारूडी मैं निपट नसौ छै ।
रसराज इक दारूड़ी या छकावै
सुध रमजा विसरावै ।। १

राग – कालिंगडौ
ताल – जलद तितालौ

आया राभ्रण वे जग सयालै
दी झोका विच मेरा मतवाला मिया
तैडी हीरादे नाल साडे दिल विच माया ।
गाव स्यहर[1] छड पीत आलम दी
रसीलाराज उमराई हजारै दी
इस्कदा स्यहर[2] वसाया ।। १

राग – कालिंगडौ
ताल – जलद तितालौ

रखलै वे मान परीदा
मुड चलै तौ जीवा इक वारी नैना[3] वाला वे ।
दूबर हुवा रसराज विरह थौ
जोबन च्यार घरीदा[4] ।। १

राग – कालिंगडौ
ताल – जलद तितालौ

विछडै व राभ्रण वाला
हुण करा की जतन नहिं[5] छुटदी ज्यान मेरी[6] वैरण हे ।

---

[1] [2] 'सेहर' ख ग । [3] नै ग । [4] घडीदा ग । [5] नही ख ग । [6] म्हारी ।

हीर निमाणी दे इक्कदा इलाही
हिक साहिब रखवाला ॥ १

राग – कालिंगड़ो
ताल – दीपचंदी

आवे मा मोरे राज दुलारो।
नई नई अंब मंजरियां पैं भवरू'
ज्यूं गोरी गोरी बहियां मरोरे ॥ १
समीर भयो बेलरियां परसे
सुक ज्यूं अधर केसू कुच फल तोरे।
बसंत भयो बनराय लूटत है
नंद कौल गह आज ओरे ॥ २

राग – कालिंगड़ो
ताल – दीपचंदी

स्याम म्हारो छीगन मोनोमी राज।
मत खोलो गूंघट म्हारा सुं
मोभो आय लाज ॥ १
अब तो थां म्हे आपरा सायबा
म्हारो आपसुं' हो काज।
मत लूटे मोर बिंदलो गिरे छे
इतरो हठ क्यूं आज ॥ २

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तिताली

आवो सखि देखो तमासो आय
रंग रमे छे म्हारो मारूड़ो भंवर उबेरो।

---

भ्रमर। मुख। 'सूं।

हरै हरै जाळया मै भाखौ
अलवेल्या दीजौ नै[1] जताय ॥ १
पिया पट खैंचै छुडावै मारवो
ऊपरलौ हठ मन की चाय
कर की उळभण भभकण तन की
कमर की लचक 'र मुख की हाय ॥ २

राग – कालिंगडो
ताल – धीमौ तितालौ

कोई बतळावौ रे राजकवार
कित गयौ पारो[2] मेरौ नेहडौ लगाय कर ।
कुंज कुंज वन वन सब हेरचा
और जमना हू म्है कीनौ विहार[3] ॥ १
आय रह्यो पिछली रजनी और
मिटिय चन्द्र चादनी को बहार ।
आतुर भई गुजरी गोकुळ की
आय मिळै अब प्रान आधार ॥ २

राग – कालिंगडो
ताल – धीमौ तितालो

खेवटिया पार लघाय रै
मेरे बैडे नू गहरी नदिया सै ।
औघट घाट पवन बहु वाजै
तामै ज्यान बचाय लै ॥ १

राग – कालिंगडो
ताल – धीमौ तितालौ

चमकण लाग्या चगा नैण
दारूडी रा छाक्या ।

---

[1]न । [2]प्यारो ग । [3]बहार ग ।

हीर निर्मांणी दे इसकदा इलाही
हिक साहिब रखवाला ॥ १

राग – कालिंगड़ौ
ताल – दीपचंदी

आवै मा मोरे राज दुलारौ।
नई नई अंब मजरियां पै भवरू¹
ज्यूं गोरी गोरी बहियां मरोरै ॥ १
समीर भयौ वेलरियां परस
सुक ज्यूं अधर केसू कुच फल तोरै।
वसत भयो बनराय छूंटत² है
नंद कौस गढ आज जोरे ॥ २

राग – कालिंगड़ौ
ताल – दीपचंदी

स्याम म्हारी सौगन मांनोजी राज।
मत खोलौ गूंघट म्हारा सु
लोभी आव लाज ॥ १
अब तो छां म्हे आपरा सायबा
म्हारौ आपसु³ ही काज।
नथ तूटे और बिंदली गिरै छै
इतरौ हठ क्यूं आज ॥ २

राग – कालिंगड़ौ
ताल – धीमी तितालौ

आजौ सखि देखौ तमासौ धाय
रंग रमै छै म्हारी माकडौ भंवर उबैरौ।

---

¹ भवर। ² पुष्प। ³ पूर्ण।

राग – कालिंगड़ौ
ताल – धीमौ तितालौ

गूजरियां इतनौ[1] गुमान
जोबना ए भया न किसूका।
नैन पियाला पिला सांवरै नू
लूटै न जितनी[2] तान ॥ १

राग – कालिंगड़ौ
ताल – धीमौ तितालौ

रजनिया वैरन भई उवैसी जमनां तीर।
कौल भयौ उस वेदरदी कौ
द्रुपदी[3] वारौ चीर ॥ १

राग – कालिंगड़ौ
ताल – धीमौ तितालौ

रतिया कैसै बीतेंगी[4]
नहिं आयौ प्यारौ जियन दुहेलौ।
क्यू कर या सुकमार लाडलौ
जोवन वैरी जीतेंगी ॥ १

राग – कालिंगड़ौ
ताल – धीमौ तितालौ

चमकै बूंदा झमकै वाला
और बुलाक मोती लटकन वाला
जुगनुदा हीरा गोरा मुखड़ा सोवे[5] वाला ना जौ ॥
बतियू सें करती है मन मतवाला
तैनू सै पिलाती अमीदा पियाला तैनू
रसीलाराज पिय साईं रखवाला तेरा ॥ १

---

[1]इतनौं। [2]जैती। [3]द्रोपदी। [4]बीतगी। [5]सोहै।

मव सी मव सी मई प्रीत मरथा
मरसो[1] मांझल रैण ॥ १
हुसण मोभण रमण रगरलियां
ठव रगमीना मीठा वैण।
रसराज उवा ससिवदनि सुवर
स्याम सलूना पे सैण ॥ २

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तितालो

मोरा[1] मदवा मारू आया वे
काई रण रा ऊनींदा म्हारै मला[2]।
कांई नें[3] करां मनवार सहेली
मलमेलो छिब छाया वे[4] ॥ १

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तितालो

म्हारा मदवा मारू आया वे
रैण रा उनींदा म्हारै महेला।
संग साईनां रै सिकारां रमता
घम घन करता रैमा[1] ॥ १

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तितालो

गयो मनमोहन मोटी री
स्या गरमी तिरछी चितवन।
रसराज स्याम सलूणो सूरत पर
उवार[1] गयो तन मन जोबन ॥ १

[illegible]। [1] [illegible] [2] [illegible]। [3] नहीं। [4] वे। [1] [illegible]।

राग – कालिगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

गूजरिया इतनी[1] गुमान
जोबना ए भया न किसूका ।
नैन पियाला पिला सांवरै नू
लूटै न जितनी[2] तांन ॥ १

राग – कालिगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

रजनियां वैरन भई उवैसी जमनां तीर ।
कौल भयौं उस वेदरदी कौ
द्रुपदी[3] वारौ चीर ॥ १

राग – कालिगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

रतिया कैसे वीतेंगी[4]
नहिं आयौ प्यारौ जियन दुहेलौ ।
क्यू कर या सुकमार लाडलो
जोवन वैरी जीतेंगी ॥ १

राग – कालिगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

चमकै बूंदा झमकै वाला
और बुलाक मोती लटकन वाला
जुगनुदा हीरा गोरा मुखडा सोवै[5] वाला ना जौ ॥
बतियू सै करती है मन मतवाला
नैनू सै पिलाती अमीदा पियाला तैनू
रसीलाराज पिय साई रखवाला तेरा ॥ १

---

[1]इतनों । [2]जैती । [3]द्रोपदी । [4]बीतगी । [5]सोहै ।

राग – कांबियडो
ताल – होरी री

मपावाळी चालो नै, सेलण चगा मारूड़ाजी।
माई माई सावण तीज
मुरैना[1] बोल्या गैरा डूंगरां जी ॥ १
बीजळिया रा छै सिळाव
सैंभनण भंवर हुवे रह्यो जी ॥ २
झींणी पड़ै छै बूंद
मींज छै साळूड़ा तीजण्यां रा जी ॥ ३
झूलै राजकवार ।
के झूलादे लाडली जी ॥ ४
हाथ सुराही नाडलो रै
पिया र प्यालै दारूड़ो जी ॥ ५
विलसै छ बरसात
क रातूं मैला रग रमैंजी ॥ ६

राग – कालेरो
ताल – धीमो तितालो

मुरलिया[3] की धुन में जियरो जाय
सजनी रयो छै उळझाय।
रसराज सुन मैं दिवानी भई हु
गळियां[4] रही घुन घुन मै ॥ १

राग – कालेरो
ताल – वसद तितालो

गोरा जोरी स्याईस[5] घूमघूमाळै लहंगावाळी[6] मूं।
थमा पूच सघवै नमर सेरसो
मैंडो बोठो पिस घोरी मां ॥ १

---

[1]मोरेमा। [2]ढेला। [3]मुरलिया। [4]गलियां। [5]स्यायम। [6]लहंगावाली मू। [7]मैंडो।

राग – कालेरौ
ताल – धीमौ तितालौ

साडे नाल करदा राभेटा
जोरा जोरियाणी ।
नेह किया सब आलम करदा
नही कितीया कोई चोरियाणी ॥ १

राग – केदारौ
ताल – धीमौ तितालौ

हो बनाजी थारी आखडल्या रग लाग्यौ[1] ।
रग लाग्यो छै चूडं चूनणी[2]
ज्यू रग सेजडल्या ॥ १

राग – केदारौ
ताल – धीमौ तितालौ

फगवा व्रज खेलन[3] कौं चल री
मगवा मे आयौ कान्ह कवर यौ बोले कगवा ।
आई वसत फूली फुलवारी
पियरी सुरख केसरिया क्यारी
रसीलाराज मनसिज मितवा कौं ले अगवा ॥

राग – केदारौ
ताल – जलद तितालौ

वेलरिया फूली री ननदी
उद्यान सघन वन उपवन वागन वेलरिया ।
द्रुम द्रुम[4] लपट रही हरि-हरिया
नई नई रूप रग रस-भरिया
रसीलाराज मोहि सग ले, स्याम गये तहां वन ॥ १

---

[1]लागौ । [2]चू नडी ख ग । [3]खेल । [4]'द्रुम' नहीं ग ।

राग – कालिंगड़ो
ताल – होरी री

चंपावाडी चालो नै, खेलण मगा मारूड़ाजी।
भाई भाई सांवण तीज
भुरैला[1] बोल्या गैरा डूगरां जी ॥ १
कोयलियां रा छै सिळाय
सैंधनण मबर हुवै राखी जी ॥ २
झीणी पड़ छ बूंद
भींज छै साळूड़ा तीजण्यां रा जी ॥ ३
झूलै राजकंवार
के झूलाद लाडली जी ॥ ४
हाथ सुराही लाडली रै
पिया रै प्यास वाल्हो जी ॥ ५
बिलसै छ बरसात
क रातूं मैंसा रग रमैंजी ॥ ६

राग – कामेरी
ताल – धीमी तिताली

मुरलिया की धुन में जियरो जाय
सजनी रमौ छै उळझाय।
रसराज सुन मैं दिवानी भई हु
कळियां रही धुन धुन में ॥ १

राग – कामेरी
ताल – बजद तिताली

गोरा गोरी ल्याईस[5] धूमघूमाळै लहंगावाळी[6] नूं।
कया खूब लचकै कमर सेरसी
मैंडो कीठो चित चोरी मां ॥ १

---

मोहेमा। मेहनी। मुरलिया। कलियां। [5]ल्यायस। [6]लहंगावाली नूं। मैंडो।

वैणा रा रसीला रैणां रा सवादी
रसराज सैणा रा सगाती प्राण सू प्यारा म्हारा ।। १

राग – कालेरौ
ताल – इकौ

बालपणै रा बिछड्या साजन
अब तौ थे घर आजौ सायबा ।
थां बिन क्यू ही सुहावै काज न
रसराज नेहड़ौ लगाता थानै आई जी लाज न ।। १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

आयो माझल रात, गोरी रौ सिखलायौ ।
रग रमाता हस खेलाता
होण देता परभात ।। १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[1] भूल्यौ नाही जावै
थारी[2] नई नई रमजा कर तू ।
मान करै चाहत दिखलावै औ
रस की बतिया सुनावै ।
कुण मुसताक न[3] हुवै रिझवारण
जिण दिस निजर लगावै[4] ।। १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[5] मानै नांही बात ।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा

---

[1]गुमानीडा रे । [2]हारे थारी । [3]मुस्ताकन । [4]लगावै रे । [5]गुमानीडा रे ।

राग – केदारो

ताल – धीमो तितालो

चंदावदनी चतुर चटकीली
नवल बनी सोहत सांवर की सेज पर ।
सीस फूल नथ कठसरी और
तिलक हीरन[1] की मुक्तालर ॥ १
करणफूल नौसर सर बैनी
कंकन बाजूबंध किंकन नूंपर ।
रसराज बिजली प्रकास को मानूं
उतरी है भू पर आकर ॥ २

राग – केदारो

ताल – धीमो तितालो

बाजन लागे आज मनमोहनी
मधुर धुन नूंपर बिछिया किंकनी ।
चमकन लागे चीर जरी के
सीसफूल नथ सोहनी ॥ १
लपट भलन लागी[2] सौंधे अतर की
होने लगी मुख मधुर रागनी ।
रसराज सांवरे की सेज कूं राखे
आवन लगी है नवल बनी ॥ २

राग – कावेरी

ताल – दुमी

छैलड़ा पीव गुमांनीड़ा
थारा नैणां रा कामणगारा की ।

---

[1] हीरन । [2] लगी । [3] पी ।

वैणा रा रसीला रैणां रा सवादी
रसराज सैणा रा सगाती प्राण सू प्यारा म्हांरा ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – इकौ

बालपणै रा बिछड्या साजन
अब तौ थे घर आजौ सायबा ।
था बिन क्यू ही सुहावै काज न
रसराज नेहड़ौ लगाता थानै आई जी लाज न ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

आयो माझल रात, गोरी री सिखलायौ ।
रग रमाता हस खेलाता
होण देता परभात ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[1] भूल्यौ नाही जावै
थांरी[2] नई नई रमजा कर तू ।
मान करै चाहत दिखलावै औ
रस की बतिया सुनावै ।
कुण मुसताक न[3] हुवै रिझवारण
जिण दिस निजर लगावै[4] ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[5] मानै नांही वात ।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा

---

[1]गुमानीडा रे । [2]हारे थारी । [3]मुस्ताकन । [4]लगावै रे । [5]गुमानीडा रे ।

राग – केदारो

ताल – धीमो तितालो

चदामदनी चतुर चटकीली
नवल बनी सोहत सांवरे की सेज पर।
सीस फूल नथ कंठसरी और
तिलक हीरन[1] कों मुक्तासर॥ १
करणफूल नौसर सर बैनी
कंकन बाजूबंध किंकन नूंपर।
रसराज बिजली प्रकास की मानूं
उतरी है भू पर आकर॥ २

राग – केदारो

ताल – धीमो तितालो

बाजन लागे आज मनमोहनी
मधुर धुन नूंपर बिछिया किंकनी।
चमकन लागी चीर जरी के
सीसफूल नथ सोहनी॥ १
लपट चलन लागी[2] सौंधे अतर की
होने लगी मुख मधुर रागनी।
रसराज सांवरे की सेज पे राधे
आवन लगी है नवल बनी॥ २

राग – कालेरो

ताल – इकी

छलका पीव[3] गुमानीड़ा
थारा नैणां रा कामणगारा पी।

---

[1] हीरन। [2] लगी। [3] पी।

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

पायल साळीजी री किण झणकाई रे।
ऊंची ले ले दोय हाथां में
चोखी तरह बणाई।
इण गई वोल घडी नहि दिन का
आधी रात नें[1] बजाई रे ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

माणी रे माणी रे माणी रे मजलस माणी रे।
इण आलम बिच आय अनोखी
रसीलाराज[2] इक जलैगहाणी रे ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

लेता जाज्योजी राज
हो बाडी रा भवरा नई कळिया री सुवास।
यौ जोबन दिन च्यार रौ रे
काल काई छै काई आज।
रसराज आरतबदी राधा नै
आय मिळै ब्रजराज ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

साळूडै रौ मिजाज देख्यौ चाजै[3] रे विदेसीडा।
साळूडै रै गूघटडै इण
वस कियौ छै ब्रजराज ॥ १

---

[1] 'नै' नही। [2] रसीला रसीलाराज। [3] चाहजै।

दिन रा रूस सौ रात।
याहुर महीनां सरीसो म्यारो
कोठे मालू हाथ[1] ॥ १

राग – कालेरी
ताल – जलद तितालो

जारे मासा उवाही ठौर मिजाजीड़ा।
थानी लाग रही चौसर री
पंसा झूळ छे चहु मोर ॥ १

राग – कालेरो
ताल – जलद तितालो

सारी छाई रात मिजाजीड़ा।
फूलां छाई म्हारी धण री सेजड़ली
मोतीड़ां छायो मैवास ॥ १

राग – कालेरो
ताल – जलद तितालो

नैणां लाग्या मैण नादीणियां[2]
ए सो[3] कोयलाँ छावया सुं छावया
ए सो[3] रंगमहल री रैण।
मोहन राधा रा रातो री
यणां सूं मिळ मैण।
बपू छूट रसराज कहो मैं
राणां सुं मिळ सैण ॥ १

---

हाथ। [2]मालागी हो। [3]हारे पनो। [4]कोयल सव। [5]मैं।

राग – कालेरौ
ताल – होरी रौ

घरा नै पधारौ विदेसीडा
छोटी सी नाजक धण रा पीव।
यौ सावणियौ उमड रचौ छै
हरि[1] नै सोहै छै दिस दिस सीव।
इण समै कितनौयक होसी
लाडीजी रौ थामे जीव ।। १

राग – कालेरौ
ताल – होरी रौ

प्यारौ नही मानैं म्हारी बात।
सुणौ हे सहेल्या नणद पियारी।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा
दिन रा रूसै तौ रात।
बाहरै महीना सरीसौ ख्याली
कोठै घालू हाथ[2] ।। १

राग –कालेरौ
ताल – होरी रौ

मारूजी[3] चगी मारवणी घर ल्याया हो।
चगा राज लगन वी चगा
*चगी नणद बधाया ।। १
चगा पीहर चगा सासरिया*
सब सजना मन भाया।
अब तौ बधौ रसराज सावळडा
सुख और नेह सवाया । २

---

[1] हरी। [2] हात। राग–कालेरौ ताल–जलद तितालौ मे 'गुमानीडा मानें नाही बात' गीत की और इस गीत की आकडी मे अतर है, बाकी चरण समान है। [3] हो मारूजी।
*चिन्हित दोनो चरण नही। *सासरिया चगा ग।

राग – कामेरी

ताल – धीमी तितालो

मारूड़ा सूं मिलण बोलण री
कोने बात बाईजी।
म्हांने सुपण रौ चाव लाग्यो छै
किण रंग बीती रात ॥ १

राग – कामेरी

ताल – धीमी तितालो

मारूड़ा सूं मिलण भेटण रो लाग्यो चाव भारी।
जिस विध हुवे रसराज भेग दे
सो'[1] ही करो ने उपाव ॥ १

राग – कामेरी

ताल – जलद तितालो

मिजाजीड़ा मीरा बोलोजी राज[2]
म्हें तो थासूं अरज करां छां।
भास पास री भटारयां छै मेरी[3]
झांझर झण झण बाजे।
लचके कमर पिलंग टूटे छै
म्हारी में भाव भरा छां जी ॥ १

राग – कामेरी

ताल – धीमी तितालो

बिसर गया मारूड़ा नेहड़ो ल्याय
नैणां रा तीर चलाय।
रसराज सांवरा सैंण सेजरियां में
नई नई रमण बताय ॥ १

---

[1] कोई। [2] राज मिजाजीड़ा। [3] मैड़ी।

राग – कालेरौ
ताल – होरी रौ

घरा नै पधारौ विदेसीडा
छोटी सी नाजक धण रा पीव।
यौ सावणियौ उमड रचौ छै
हरि[1] नै सोहै छै दिस दिस सीव।
इण समै कितनौयक होसी
लाडीजी रौ थामें जीव ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – होरी रौ

प्यारौ नही मानै म्हारी बात।
सुणौ हे सहेल्या नणद पियारी।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा
दिन रा रूसै तौ रात।
बाहरै महीना सरीसौ ख्याली
कोठै घालू हाथ[2] ॥ १

राग –कालेरौ
ताल – होरी रौ

मारूजी[3] चगी मारवणी घर ल्याया हो।
चगा राज लगन वी चगा
*चगी नणद बधाया ॥ १
चगा पीहर चगा सासरिया*
सब सजना मन भाया।
अब तौ बधौ रसराज सावळडा
सुख और नेह सवाया । २

---

[1]हरी। [2]हात। राग–कालेरौ ताल–जलद तितालौ मे 'गुमानीडा मानै नाही बात' गीत की और इस गीत की आकडी मे अतर है, बाकी चरण समान हैं। [3]हो मारूजी।
*चिन्हित दोनो चरण नही। *सासरिया चगा ग।

राग – कामेरी
ताल – कमद तिताली

सहेल्यां म्हारी सांवळशी सज भायो[1]।
बरसे रूप कमळ मुख के पर
मोर सेहरे रंग छायो ॥ १

कैरवा रा ख्याल

फगवा मैं रमण यार्के साथ
हांरे मैं तो नहिं आऊं मा।
निठुर लगरवा बेसक खेलै
पंचू मैं पकर हाथ[2] ॥ १

कैरवा रा ख्याल

तुम सैं लगाया मैंनें[3] नेह
धनमेले मीरां।
नेह लगाया दिलउ दिल उळझाया
हो रही देह वदेह ॥ १

कैरवा रा ख्याल

तेरी साथ मैं चलां
सुण मुरली वाले।
वांको मी पगियां रळती सरहोयां
करवानो चंगी गलां ॥ १

कैरवा रा ख्याल

सयोगी मनाय सूंगी वालमा
मेरा कजला

---

[1] आयी है। [2] हाथ य न। [3] मैनू। [4] 'दिलउ लगाया' नहीं।

वालमा रूसा तौ की हुवा
मेरा रूसै दिलदार ।। १

राग – कानरौ
ताल – जलद तितालौ

नई कलियन कौ रस[1] ले गयौ रे
वेल वेल पर डोल भवरू तू[2] ।
रसीलाराज उनमत भयौ वन मे
वहौ नायक काकौं मितवा भयौ ।। १

राग – कानरौ
ताल – गाठ चौतालौ

हरे द्रुम वेलन मे हर राधा ।
विहरत है गल-बाहिन दोऊ
कुजन कुज खरे ।। १
विहरत विहरत ही जमुना तट
केल की कुज मे पैर धरे ।
आयौ मदन मारुत कौ झोला
व्रछ वेली ज्यू गिर परे ।। २

राग – कानरा री माफ
ताल – जलद तितालौ

या तौ धण माणौ रे वालम राज ।
जाणौ तौ जाणौ गोकुळ रा सावळडा
रसराज अेती न ताणौ रे ।। १

राग – कानरा री माफ
ताल–जलद तितालौ

बना बन आयौ मा, चौसर ढुळती ।

---

[1] तू रस । [2] नई ।

रसराज कर रयो धाव नगर सब
मोतीड़ा माळ[1] रूळती ॥ १

राग – कानरा री मांझ
ताल – चमक तितालो

सांवरे सनेही सु मैं खेलूंगी फाग।
रसराज आयो फागन मन भायो
इन ही दिनू में लगी[2] लाग ॥ १

राग – कानरा री मांझ
ताल – चमक तितालो

बना मैंनूं मोही[3] थे नणां दी रेख।
म्हारो कळस उसराय विदेसी
सईय तो पनघट देस ॥ १

राग – खमायची
ताल – चमक तितालो

अजी म्हांसु बोलोयो सांवरा सजन क्यूं थे रूठा।
सारी रैण[4] संग औरा रे बिहावो
घड़ीय तो म्हारा वी हाजी जो ॥ १

राग – खमायची
ताल – चमक तितालो

अजी रगभीना थारा रंग भर म्हारा डेरासु डेरा नेड़ा।
घूमन उठी घीघ घोक रे
भूलो अधाय देस लोजो जी ॥ १

---

[1]माला। [2]लागी। [3]मोही। [4]रजनरातो। [5]रजन।

राग – खमायची

ताल – जलद तितालौ

झालौ[1] दे बुलावै हो अलबेली रा सायवा
ऊभी ऊभी अगानैणी थानै।
झालौ देती धण लाज मरै छै
थारी[2] सूरतडी दिरावै हो॥ १

राग खमायची

ताल – जलद तितालौ

नजर नचाय रही गुजरेटी।
रसराज नदनदन बस कियौ उन
कौन सरवस की बघोटी॥ १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालौ

पना मारू घणा नै घरा रा मिजमान
अजी काई[3] सावळडा नादान।
रात अनंत प्रात म्हारै आया
तन पर केई सैनाण॥ १

राग – खमायची

ताल –जलद तितालौ

मतवाळौ यौ मोती वेसर रौ।
राधा रै मुख रसराज मोहन पर
रग बरसै मानू केसर रौ॥ १

राग – खमायची

ताल –जलद तितालौ

माझल रात बना थे प्यारा लागौजी।
या धण चगी सेज मन भाई
आज तौ याहि[4] कै सग जागौजी॥ १

---

[1]झाला। [2]'थारी' नही। [3]होजी। यह गीत ग प्रति मे पृ ३० और ३१ पर दो वार आया है। [4]याही ख ग।

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली

मारू मैलां आयौ है मांमल रात
अजी कांई लटपटिया पेच रौ।
अलबेलिया नैंणां री मदमातौ
रग रातौ सग साथ ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली

हो[1] भवरा म्हांरी बाडी री ऊजाड़ कियौ।
पगा अब बिंब फळ लूटघा[2]
और मकरद पियौ ॥ २
अधर बिलुमी अनारां लूंटी
कैळां पेर दियौ।
रसराज सब केसर क्यारी री
लूट लूट रस लियौ। १

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली
मांम भेळ री

धीरा बोलौजी राज मिजाजीडा।
पायल म्हांरी बाजणी रे
झमक विहावैली लाज ॥ १

राग – खमायची
ताल – दीपचंद

मारूड़ी घर आयौ है मा
घणा न दिना सूं आयौ वारूडी री।
आंगण मोत्यां चौक पुरावां
पला में बिछावां म्हारा[5] साळूडै रा[6] ॥ १

---

[1]'हो' नहीं। [2]लुटया न। राग खमायची, ताल धीमी तिताली में भी यह गीत गाया है। उसमें। म्हारा। [6]री।

राग – समायची
ताल – दीपचदी

सावरौ मोहि भूल गयौ री
नैन लगाय बेदरदी भयौ री।
इन बेकजाक कू दिल दे के सजनी
मै तौ जानू थी मोल लीयौ री ॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

अलबेलियौ प्यारौ लागै है[1] सय्या सेजडली नई मै।
होती साझ घर आवै मद-छावयौ
म्हारै कारण रेण जागै कमधजिया[2] ॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

कमधजिया लैरा चाला[3] ली
मोही मोही वाकडी[4] तरं सु।
आय खडौ छै तुरी घर आगण
लूबा भूमा दावण भाला ॥ १
दूर देस री कठण चाकरी
चरण बदी होय पाला।
लाख बात नही जावण देस्या
कोई सौगन दे घाला[5] ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

चमकै छै भूहा बिच गोरिया ए जरी रौ तारौ।[6]
रसराज तिलक हीरा रौ चमकै
हार चमकै छै[7] नौसरी रौ प्यारौ ॥ १

---

[1]छै। [2]कमधजियौ। [3]चालौ ख ग। [4]वाकडली। [5]गाला ग। [6]'जरी रौ तारौ' आदि मे। [7]'हार चमकै छै' नही।

राग – खमायच [1]

ताल – धीमो तितालो

घोरां मोसोजी राज मिजाजीड़ा।
पायल म्हांरो बाजणी रे
झमक बिछावैली लाज ॥ १

राग – खमायच

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी ने मोती सूरत रा
ल्या दीजो जी राज।
काजळ काळ कोट रो झींणी
मैंदी [2] नारनौळ की [3] आज ॥ १
आगरे रो लहगा चंगा नैं रंग रो
साळू सांगानेर [4] रो सिरताज।
बिंदली नैं कुकुं जोधाणे रो
रसीला बालम रसराज ॥ २

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी रै झळके [5] बांक पड़ी।
रसराज उळझ रया मोती अणबेसा
सेणां रै दिल नू लग जासा बीछू रा डोक ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

बहार आज आई छ जी पना राजकंवार।

---

१ मांझरा पेहरा राग। यह गीत म प्रति मे राग खमायची ताल धीमो तितालो में भी है और राग खमायची झाम भेस्टरो मे भी है। २ मेंधी। ३ री। ४ सांगानेरी राग।

एक बहार जिसा ही दूजा
लाडी ऊभा छै जी बार ॥ १
मदन सरूप राज अलबेला
लाडीजी रूप बहार ।
मित मिल्या इकसार सरीसा
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

मोहन बिछड्या नु सुण म्हारी हे सहेली
के दिन रतियां के बीती ।
कठण हियौ निसर्यौ जिय नाही
वार वार उवा पर जळ पीती ॥ १
पहली रात चौसर म्हे खेल्या
मोहन हार्या मैं जीती
चलता प्रात पाळ सरवर री
सामै आ खडी ले गगरीया[1] रीती ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

बालम मिलण नै परदेस चलण री
करी[2] नै तयारी म्हारी आल
घडीयक मुखडौ दिखाय नवेली
बिछर[3] गयौ जाणे देकर ताळी ॥ १
मन रौ उदास वेसास न जिय रौ
खान पान सुख नही उण घाली ।
कद मिळसी रसराज सावळडौ
वनमाळी गोकुळ रौ ग्वाळी ॥ २

---

[1]गगरिया । [2]करां ग । [3]बिरछ ग ।

राग – खमायच [1]

ताल – धीमो तितालो

धोरां बोलोजी राज मिजाजीड़ा ।
पायल म्हांरी वाजणी रे
झमक विछावली लाज ॥ १

राग – खमायच

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी नें मोती सूरत रा
ल्या दीज्यौ जी राज ।
काजळ काळै कोट री झींणी
मैंदी नारनौळ री [2] भाज ॥ १
मागरै रौ लहगा चगा न रंग रौ
साळू सांगानेर [3] रौ सिरताज ।
बिंदली नें कूंकूं जोधाणे री
रसीला बालम रसराज ॥ २

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

नथडी रे भळकै [4] वांक पड़ी ।
रसराज वळभ रया मोती झलमेला
सैणां रे दिल नू लग आता धीछू रा डांक ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

महार भाज माई छ जी पना राजकवार ।

---

[1] मामरा मेकरा क म । यह गीत म प्रति मे राग खमायची ताल धीमो तितालो में भी है और राग खमायची माम्ह मेकरी में भी है। [2] मैंधी। [3] री। [4] सांगानेरी का ।

एक बहार जिसा ही दूजा
लाडी ऊभा छै जी बार ॥ १
मदन सरूप राज अलवेला
लाडीजी रूप बहार ।
मित मिल्या इकसार सरीसा
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमो तितालो

मोहन बिछड्या नु सुण म्हारी हे सहेली
के दिन रतिया के बीती ।
कठण हियो निसरचो जिय नाही
वार वार उवा पर जळ पीती ॥ १
पहली रात चौसर म्हे खेल्या
मोहन हारया मैं जीती
चलता प्रात पाळ सरवर री
सामै आ खडी ले गगरीया[1] रीती ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमो तितालो

बालम मिलण नै परदेस चलण री
करी[2] नै तयारी म्हारी आल
घडीयक मुखडो दिखाय नवेलो
बिछर[3] गयो जांणे देकर ताळी ॥ १
मन रो उदास वेसास न जिय रो
खान पान सुख नही उण घाली ।
कद मिळसी रसराज सावळडो
बनमाळी गोकुळ रो ग्वाळी ॥ २

---

[1]गगरिया । [2]करा ग । [3]बिरछ ग ।

राग – खमायची

ताल – धीमी तिताली

हो मलवेलिया नैंणां मोहोजी मोही माहाराज ने ।
रसराज सालुड़ रा पलूड़ा जुरंतां
साढली रा दिल ले लिया ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमी तितासी

हो म्हारा मीठा मारू चाली नें मारवी बुलाय लें ।
रसराज घणा न दिनां सूं घर आया
उमग गळ लपटावै ॥ १

राग – खमायची

ताल – होरी री

लाडण बनरा जी भवर म्हारा पनाजी
रंग भरी बनरी नै ब्याह चल्या से
सुख दीज्यो रज्यो प्रेममना ॥ १

राग – खमायची

सिबड़ी रै मैळरा

मुखड़ा सोह रह्या महताब मे ।
रसराज भाफताफ जरी जेवर चमके
दो नैंण गुलाब वे ॥ १

राग – खमायच

सिबड़ी रै मैळरा

सुख भरस रह्यो सारी रैण
रसराज मुलह गू देख रह्या मे
बिन गूंघट दोय नैण ॥ १

---

पीवो च प ।

राग – खमायची
ताल – दीपचदी

सय्या[1] ऐसे फगवा मे खेलन *जईये वसीवट कू
जहा[2] फूले हैं जाय जूही गुल खैरु गुल लाला नए
गुलतुर राज जहा[3] गुल सुरख रमैं अलि बोलै[4] त्यू डोलै
मोरा मिल विहार व्रजपत[5] सदेसो ।
गावैं[6] नवेली नवेली व्रज त्रिया
सोहनी तैसे नाचतु है[7] विरवा मे
तस उडै अवीरु चदन कुमकुमा नीर केसर की
वजत मदलरा[8] मा
रीझत स्याम रसराज समाज वन्यौ
जिह देखत मुनिजन मोहै
*सोहै सुहावै सुरपुरी कौ[9] सुख जैसै ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालौ

गुजरेटी दी निजर[10] अलवेलडी ।
अणीयारौ[11] कामणगारी कटारी
और समसेर क सेलडी[12] ॥ १
परस केतकी री कळिय गुलाब री
चपक लता कै चबेलडी[13] ।
खसबोहित मन कियौ सावरै री
मोहनी मोहन वेलडी ॥ २

राग – खमायची
ताल – जलद तितालौ, माझ-भेळरौ

दाग लगा गया यार महीडा ।
कौन हुता और आया कहा सै

---

[1]सईयां । *जाइयै ग । [2-3]जिहा । [4]'बोलै' नही । [5]व्रिजपत । [6]गावैं गावैं ख ग ।
[7]रहैं । [8]मदिलरा । *'सोहै' ग नही । [9]कै । [10]नजर । [11]अणियारी ख ।
[12]सेरढी ख । [13]वेलडी ग ।

राग – खमायची

ताल – धीमी तितालो

हो मलवेलिया नैंणां माहीजी मोही माहाराज वे ।
रसराज सालुड़ रा पलूड़ा जुरता
लाडली रा दिल ले लिया ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमी तितालो

हो म्हारा मीठा मारू चालो नैं मारवो बुलाव छै ।
रसराज घणा न दिना सूं घर आया
उमंग गळ लपटावै ॥ १

राग – खमायची

ताल – होरी री

साकण बनरा जी भंवर म्हारा पनाजी
रंग भरी बनरी न ब्याह चल्या ले
सुख दीज्यो' रज्यो प्रेमनना ॥ १

राग – खमायची

सिवड़ी रै मेकरा

मुखड़ा सोह रह्या महताब वे ।
रसराज आफताफ जरी जेवर चमक
दो नैण गुलाब वे ॥ १

राग – खमायच

सिवड़ी रै मेकरा

सुख बरस रह्यो सारी रैण
रसराज कुमह मू देख रह्या वे
बिच गूंघट दोय नैण ॥ १

---

दीज्यो ख प ।

राग – खमायची

ताल[1] – धीमो तितालो

मिल जाईयीं वे मही़वाले मिया ।
तेरी लगन दिल नू नहि भूलै
पीले नी इस्क पियाले मिया ।। १[2]

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

रमकै वाला रांझणा दिल विच
रैंदी तेरी याद मिया जम कै ।
रसराज सारीगम[3] ख्याल तराना दे
सब कै ऊपर टपैंदी ताना चमकै झमकै[4] ।। १

राग – खमायची

ताल[5] – धीमो तितालो

रमभा दे नाल मोहीं वे,
नंग सयालें दी हो परी हीर निमाणी ।
रसराज क्या क्या कीता विच गमजा[6] ।। १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

रांझैनु मिलाय देणी[7] एरी मेरी स्याणी तू सहेलडी ।
सुकर-गुजार तिहारो मैं होदो
हीरा दी ज्यान बचाय लै ।। १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालो, माझ-भेळरो

मानू ले चल नाल वे नादाणीया ।

---

[1] 'ग' प्रति मे ताल का नाम नही। [2] आदर्श प्रति में नही। [3] सरीगम ख। [4] 'झमकै' नही ग। [5] ग प्रति मे ताल का नाम नही। [6] यह आदर्श प्रति मे नही। [7] दे ग.।

रसीला राम तेरी गम नां परो।
महोहा वे मानु घायल की
नैंण निभार दी सांग चला।
सांग अक्षम दा दारू दुनी में*
नैंण निजारें सें कायल की ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली

मिल के नादांणां मैंनूं विसर गया वे।
क्या जाणां[1] किस विध मन ल्याया
? तो उवो हो गया बिगाणा मौ नया ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली

लगी पिया मे वो नैंणा दी रमजां।
उन रमजां दे नाल मोही गई सांवरा
रसराज नहीं भोवणा बिच कवजां गमजां ॥ १

राग – खमायची
ताल[2] – धीमो तितालौ

छलड़े एदा की गरूर वे
नैंण निजारे हो नहीं मिल दे।
रसराज आणें दी मैं माम किसुंदी
जुलफ जाल विध गये पकड़ ॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमो तितालौ

प्यारे भाज मैंनु बांधद हो सिरदा जूड़ा।
ऊंधा नी होंदा कर दुख दा बंदी दा
पहरानी सांवल चूड़ा ॥ १

---

दूसरा तीसरा चरण प प्रति में नहीं। [1]'जांणं'। लाया। [2]'म' प्रति मे ताल का नाम नहीं। यह मादर्श प्रति में नहीं है।

राग – खमायची

ताल[१] – धीमौ तितालौ

मिल जाईयौ वे महीवाले मिया ।
तेरी लगन दिल नू नहिं भूलै
पीते नी इस्क पियाले मिया ।। १[२]

राग – खमायची

ताल – धीमौ तितालौ

रमकै वाला राझणा दिल विच
रैंदी तेरी याद मिया जम कैं ।
रसराज सारीगम[३] ख्याल तराना दे
सब कैं ऊपर टपैंदी ताना चमकै झमकै[४] ।। १

राग – खमायची

ताल[५] – धीमौ तितालौ

रममा दे नाल मोही वे,
जग सयालै दी हो परी हीर निमाणी ।
रसराज क्या क्या कीता विच गमजा[६] ।। १

राग – खमायची

ताल – धीमौ तितालौ

राझैनु मिलाय देणी[७] एरी मेरी स्याणी तू सहेलडी ।
सुकर-गुजार तिहारो मै होदो
हीरा दी ज्यान बचाय लैं ।। १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालौ, माझ-भेळरौ

मानू ले चल नाल वे नादाणीया ।

---

[१]'ग' प्रति मे ताल का नाम नही। [२]आदर्श प्रति में नही। [३]सरीगम ख। [४]'झमकै' नहीं ग। [५]ग प्रति मे ताल का नाम नही। [६]यह आदर्श प्रति मे नही। [७]दे ग.।

रसीला राज तेरी गम नां परी।
महीड़ा वे मानू घायल की
नैंण निजार दी सांग चला।
सांग अलम दा वारूं दुनी मैं*
नैंण निजारे सैं कायल की ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालौ

मिल क नादांणां मैंनू विसर गया वे।
क्या जाणां[1] किस विध मन ल्याया[2]
तौ उवौ ह्वो गया पिगाणा म्हो मया ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालौ

लगी पिया वे दो नैंणा दी रमजां।
उन रमजां दे नाल मोही गई सांवरा
रसराज नहीं प्रोवणा विच कवजां गमजां ॥ १

राग – खमायची
ताल[3] – धीमौ तितालौ

छलके एता को गरूर वे
नैंण निजारे ह्वो नहीं मिल दे।
रसराज जांणै दी मै नाल किसूंदी
जुलफ आल विच गये पकड़ ॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

प्यारे म्राज मैंनुं मांघदे ह्वो सिरदा जूड़ा।
ऊंचा नी ह्वोंवा कर दुख दा वेदी वा
पहरानी सांवल चूड़ा ॥ १

---

*दूसरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं। [1]जांणे। [2]लाया। [3]ग प्रति में ताल का नाम नहीं। यह चरण प्रति में नहीं है।

राग – खमायची

ताल[१] – धीमौ तितालौ

मिल जाईयौ वे महीवाले मिया ।
तेरी लगन दिल नू नहिं भूलै
पीते नी इस्क पियाले मिया ।। १[२]

राग – खमायची

ताल – धीमौ तितालौ

रमकै वाला राभणा दिल विच
रैदी तेरी याद मिया जम कै ।
रसराज सारीगम[३] ख्याल तराना दे
सब कै ऊपर टपैदी ताना चमकै भमकै[४] ।। १

राग – खमायची

ताल[५] – धीमौ तितालौ

रमभा दे नाल मोही वे,
जग सयाले दी हो परी हीर निमाणी ।
रसराज क्या क्या कीता विच गमजा[६] ।। १

राग – खमायची

ताल – धीमौ तितालौ

राभैनु मिलाय देणी[७] एरी मेरी स्याणी तू सहेलडी ।
सुकर-गुजार तिहारो मै होदी
हीरा दी ज्यान बचाय लै ।। १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालौ, माभ-भेळरौ

मानू ले चल नाल वे नादाणीया ।

---

[१] 'ग' प्रति मे ताल का नाम नही । [२] आदर्श प्रति में नही । [३] सरीगम ख । [४] 'भमकै' नही ग । [५] ग प्रति मे ताल का नाम नही । [६] यह आदर्श प्रति मे नही । [७] दे ग. ।

मुलक बिगानां वारी लोक बिगाना
रब दे हाथ समाल[1] ॥ १

राग – चैती गौड़ी
ताल – धीमो तितालो

भालीजाओ हो बिसर गया
नेहड़ो नैंणां री लाय[2] ।
रसराज म्हांनैं तो संदेसो बिनां ही
मीरां री साथे उळझ रह्या ॥ १

राग – चैती गौड़ी
ताल – धीमो तितालो

गरवा लाय पिछली रात कूं मिल्यौ कुंजन में
नटवर वेस किये अलबेलो
सौन चमेली के बिरवा में ॥ १

राग – चैती गौड़ी
ताल – धीमो तितालो

गळ लगणे दे मोहि हेरी स्याम सुंदर रग रसिया के ।
लोक-लाज कुळ-कांण न जाणूं[3]
अकरसी ज्यूं त्यूं करकै ॥ १

राग – चैती गौड़ी
ताल – धीमो तितालो

गोरड़ी वे जादू कर गई छोटो सी ऊमर मांई
रसराज गोरै मुख बिंदली चमकै
बेसर वाळी गोरड़ी ॥ १

---

[1]सभाल । [2]लगाव । [3]जाणैं ।

राग – चैंती गौडी
ताल – होरी री

मारूडौ मिलण घर श्रायौ हे मारवणी
करौ नै तयारी उठ म्हारी राजवण थारै[1] ।
बिंदली दौ भाळ सवारी श्रलबेलडी
श्रणीयाळा[2] नैणा श्रजन री श्रणी ।। १

राग – चैंती गौडी
ताल – होरी री

मोतियां चौक पुरासा म्हे गास्या[3]
सखि[4] सुहागण मिळ च्यार जणी ।
श्रलइया भवर रसराज पिया नै
देखण री म्हानै चाह घणी ।। १

राग – जगलौ
ताल – जलद तितालौ

ऊभा राज मिजाजीडा श्रमला मे
श्रमलां रा छाक्या सेजडली रै मारग
छक मतवाळी रा बुलाया थे ।। १

राग – जगलौ
ताल – जलद तितालौ

कद निसरैली या वैरण रात ।
कबजा मे सु गयौ श्रब होसी
किसीय धिगाणी कै बौ साथ ।। १

राग – जगलौ
ताल – जलद तितालौ

रळ रही नैन मे नीद गुमानीडा ।

---

[1]धारौ । [2]श्रणियाळा । [3]गासा । [4]सखी ।

तार नस की मार मोसन की
मया हूर सेसा सांसा मीसा ॥ १

राग – पंचमी
ताल – चलत तिताली

ल्याई मासण सेहरो हे सहेली
पनाजी रै सीस गुलाव रो।
रसीलाराज उण राजकंवर नैं
मौर मदावन सेहरी[1] ॥ १

राग – पंचमी
ताल – धीमी तिताली

पनूं म्हारो मुजरो लीजोजी।
रसराज मीठी निजरयां सु मिल्यौ
हुमो कर का गजरा सुं ॥ १

राग – पंचमी
ताल – धीमी तिताली

म्हारे घर आया वे छोटी रा भवर पना।
घणा नै दिनां सु म्हे अरज करां छां वे
थां बिन[3] निस दिन झुमर भरां छां
बिछड़यां प्राण ज्युं[4] पाया वे ॥ १

राग – पंचमी
ताल – सवारी

सायबा म्हांनूं मारी सारै से जावोसा वो[5]।
रसराज सग रैण दी मारजू
ऐस[6] सुहांण रो दिखाओ माओ सायबा ॥ १

---

[1] मदावन सेहरी। [2] मूं मारी। [3] बिनू। [4] ज्यूं। [5] जाम माओ। [6] रौंस।

राग – जगलौ

रेखता चाल मे

औरतू का नेहडा मुसकल[१] जोकू लाला रे सिपाई[२] ।
अवल तौ बाबल[३] का डर
पीछे गुन्हां बादस्याह का ।
जलता है आराम वदन का
फिर गिलारी सराह[४] का
इतना जोर रसराज है सिर
भिस्त तौ क्या था सिपाही ।। १

राग – जगलौ

ताल – जलद तितालौ

रमक बताय गया सावरे नादाणिया ।
कबै मिले रसराज सावळडा
सुपनै की नाई मानू[५] हो रया ।। १

राग – जगलौ

ताल – जलद तितालौ

मोतीडा बुलाक दा, मोहीजा दा मोहना ।
रसराज मुरली की धुन मे ताना
यान तु[६] फैल कजाक दा ।। १

राग – जगलौ

ताल – जलद तितालौ

छलकै[७] गया बे मैडी ज्यान, मिजाजीडा हो[८] ।
इक पल परिया[९] डेरै
रसीलाराज मिजमान ।। १

---

[१]मुसकिल । [२]सिपाही । [३]बाबुल । [४]तराह । [५]'मानू' नही । [६]त । [७]छलक ।
[८]'हो' नही । [९]परियौं ।

राग – जंगली
ताल – धीमी तिताली

झूठी ना करो मीयां मैनूं।
रसराज छूटी मूंठी गला पराइयां
हार दिस दी असा दे नाल निजरां ठेरो रुठी ॥ १

राग – जंगली
धीमी तिताली

निमाणा विसर गया मिल के।
माणा नहीं सूं लेहाज आलम से
रसराज निमाज लगाके दिल मिलके ॥ १

राग – जंगली
ताल – धीमी तिताली

तन मिल तो मिलो परियूं सें
दूर न हो प्यारे आस अतन कर।
आई बहार जिसे गुल स्याणा[3]
आस चलो धन की हुरियू स ॥ १

राग – जंगली
धीमी तिताली

मैन लगाता सो निभाता।
उलझ गया रसराज जिनूं दा दिल
नहीं करी मजिनूं दा[4] सुलझाता ॥ १

राग – जंगली
ताल – धीमी तिताली

झलका लगा नैणूं दा यार
मासूक दा आसकां दे दिल नूं।
रसराज आ मिलसां मिल रहे मेरा स्याणा
नहीं सहतो विरहा सैणूं दा ॥ १

---

प्रमी है। नाम। [3]स्याणा व सुगस्याणा न। रहणा। [4]करी मजनूं दा।

राग – जगली
ताल – धीमो तितालो

मास्यूका दा वे मिलना अजी दिल नू ।
रसराज ओहा सुख जेहा सरग दा वे
क्या जाणु क्या होगा सैयों कल नू ।। १

राग – जगली
ताल – धीमो तितालो

मिलजा मिलजा वे राफा
रसराज दिल भर सावळिया
गळ लगजा रहगा ।। १

राग – जगली
ताल – धीमो तितालो

मोतीयू दी कानू वालीया
मोतीयू दी वेसर वे सोवै सोवे हीरा नू ।
सुख महताव नैन गुलाव
जुलफा काळिया[1]

राग – जगली
ताल – जलद तितालो

मोटो जालम वे मिलकै अजी निजरा[2] सै ।
मोर[3] लगी रसराज विरह की
पार हुई तीखीया सैया[4] खजरू सै ।। १

राग – जगली
ताल – धीमो तितालो

लगणा वे नेजा[5] नैण दा[6] लगणा वे सावरा हो
अजव तरा दा तीखा ।
जित रसराज तित लगता
लो रहता सैणू दा ।। १

---

[1]कालियां । [2]निजरो । [3]मार ख ग । [4]सयो । [5]नेज । [6]नैणू दा ।

राग – जंगलो

ताल – धीमो तितालो

वे नादाणीया मिल जाणी रे ।
रसराज प्रीत लगाई सो सांवरै
लोकां दे यहांण नहीं सरमांणा गुमानीड़ा ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

अलबेली ए मा मारुडो मिळण घर आयो ।
मोह सिरदार सोला सूं सवायो
वालो सासड़ली रो जायो ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

झांडे मळ घाल्यो रे छला नथड़ी[3] रे ।
नौसर तोड गयो नौलख री
दाग दे गयो चुंनड़ी रे परी र ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

तोरै सैं लगाई प्रीत
काहे कु कन्हइया रे मैं ।
तोरे खातर सही लोग चवइया
बेसक लरे मोरी सासु ननदिया ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

पायल म्हांरी बाज थी बाजै जी मारुड़ाजी ।

---

[1]वाणा रे व म ।   [2]'गुमानीड़ा' नहीं ।   [3]नथनी ।   सौ ।

पायल घड़ दी सुनार बाजणो
त्यू ही बिछिया तंत साजैजी साजैजी ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

रे रे[1] केसरिया काई कांई सौगन खाय ।
सोळै सैस नार अलबेली
जिस पर चोरी जाय ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

बिदेसीडा मैं[2] थारी घाली पाणोडै न जावा रे ।
प्यास मरै म्हारी सासु नणदिया
अब तौ राजाजी नै सुणावा रे ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

हो मारूजी म्हारी तीजा री महोलो थे लीजोजी[3] ।
तीज[4] री महोलो रस री भकोळै
इक दुनिया री छै ओळै[5] ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

हो लाडीजी मुख सोहै सोहै नथ भळकारी ।
बिंदली सोहै रतन जरी री
फूलां माग सवारी ।। १
गोरै गात कसूबी अंगिया
सावळडो सिर सारी ।
निपट छबीली थारी तय्यारी
अलबेलिया री रिझवारी ।। २

---

[1]'रे' नही । [2]म्हे । [3]लीज्यो । [4]तीजा । [5]ओलो हो ।

राग – झुंझोटी
ताल – जमद तिताली

चुनरी भिजोय डारी सारी सुहासारी
लाल लाल रंग जाकी जरी की किनारी ॥ १
साख मोसर की या मोल की चुनरिया
हित सों रंगाई मोर ससम दुलारिया।
रसीलाराज एतो धीठ है संगरखा
फार डारी नां सी याकी सुकर गुजारी ॥ २*

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

आयो री मा मा नदको सगरषा।
रसराज आयो फागन मन भायो
कपटी को वचन विहायो दुखदायो ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

चालनि मोरा सइयां दुख पावे।
रसराज ऐसी बेदरदी होय रही
काहे कू सो पनघट जावै री माई ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

झूलना मै तो झानूं री ननदिया।
रसराज ऊधो¹ बिरछ लबी साख
पटरी चिकनो मौर डोरी मखसूलना ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

डोलना मेरो भरदे बिरइया कोई।

---

*आदर्श प्रति मे नहीं। ¹ऊचे।

रसराज आर्ग कु मीर लोक की
देखे[1] दरद तोरी याकी गोन ना ।। १

राग – जुजोटी
ताल–दीपचंदी

नेनू री केसे डारू मा कजरवा ।
रसराज नद का लगरवा न आयो
फगवा के दिन बीते जावै उवाकै वेनू[2] री ।।१

राग – जुजोटी
ताल – दीपचंदी

बाजना मोरा सईया नूपरवा ।
रसराज नैरे नैरे[3] घर गोकुल के
लोग हमइया और याकै लाज ना ।।१

राग – जुजोटी
ताल – इकी

जाणी जाणी रे गला दोस्त दो ।
रसराज एक मै हीर निमाणी
मोरै सग एती ताणा[4]-ताणी रे ।। १

राग – जुजोटी
ताल – इकी

लैरा लैरा रे ले चल राझणा
लोक धिगाना वारी मुल्क[5] विगाना
अपना नही कोई साजणा ।। १

राग – जुजोटी
ताल – इकी

वाली वाली रे मेरा इलाही तु ।

---

[1]देख । [2]विन री । [3]नैरे ग नही । [4]'ताराा' नही । [5]मुलक ।

रसराज एक रांझ दा विछोहा
दूजी वेस मतवाळी रे ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – कवट तितालो

छल वेरे वाले लगदे मैनूं नैण ।
रसराज रमक मताभर स्यांणा
छोड मत जाणा मरा सैण ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – कवट तितालो

सूही सूही रे बोल दी या सूठी
विरह सु नार दुखिया की भाग की कर दा विचार पिया ।
रसराज भाई वसत सुहाई
बोल उठी वन सूठी ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – कवट तितालो

दुपट्टा या जरी या वे ।
रसराज किस नें लीता भौ प्यारा
लगता या परीदा वे ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – कवट तितालो

नजरां दी मारी ये मारी मरदी मैं रीझणी
वन वन फिरदी याद करें दी ।
रसराज बेकल हूंदी गिर पर दी
लोकां दे बोळमे नही उर दी ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – कवट तितालो

नैण चमके चमके आसमान परी ।

रसराज नथनी मैं दी चमकै
ग्रौर चमकै टपै दी तान भमकै भमकै सैण ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

नैणा दी कर गया[1] घात वो छैला[2] ।
रसराज नैण लगा कर विछडा
सैणा दी सुणावै कोई वात वे ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

प्यारा नहीं रैणा[3] मुल्क विगानै हो हो स्याणा ।
चल रसराज जिहा हो दो
जुजोटी दी तानै[4] ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमो तितालौ

पना मैं तो भूलिया वे
नथनी दा लगा मोतीया दे भूमक विच
इस खेडै दी गलिया वे ।
जा दे[5] सैहर दे लोक रसराज वेखण मे
बीजा दी विच सैया गिर गया वे ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

बोल सुना गया वे महीडा वे ।
रसराज बोल मे प्रीत तोल गया
डोल गया जी उस की साथ मेरा छैलडा वे ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

भूल गई गुजर गजरै नु ।

---

[1] गयौ । [2] ज्यानी । [3] रहणा । [4] तान । [5] ज्यादे ।

*रसराज हाजरो लैं दी सासरिया
भाई छलक सांवरे दी सेजां मुजरे नु ॥ १

राग – कुकोटी
ताल – कमव तिताली

मोतीडों बसरका रे सुनारिया[1] ल्या[2] ।
किस मैं गया मोरा[3] चंगा मोती
ना सो लगैगा घरका रे ॥ १

राग – कुंकोटी
ताल – कमव तिताली

यूं छल[4] मोती ए मा इस जादुगारे
मोहनी वसी की तान[5] में
जादू चमाके[6] ।
रसराज सोवना यौ वैरी हुवे गयौ
जो बीती सो बीती ॥ १

राग – कुंकोटी
ताल – कमव तिताली

रांझो चोरियां करदा ।
रसराज हीर निमाणी न वोसवी
इस्क नहीं चोरा-चोरियां ॥ १

राग – कुंकोटी
ताल – कमव तिताली

रांझो एक मायाणी मा सहैर[1] हजारे दा ।
काळा काळा भूमक चुलफां वाला
लगणा सीर निजारे दा ॥ १

---

*रसराज बोस मैं प्रीत दी मय मया डोल मया वो उसकी धाम मेरा पीलजावे । व
[1]सुनरिया । [2]ला । मेरा । [4]छलीती । [5]तगना । [6]शहर ।

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

रे नादाणिया एली बेपरवाइया।
इतनी गरीबा पर बेदरदी
किण वदिया सिखलाइया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

हीरा दा वे केहा हाल मिया।
नही देखै तौ कुछ ना सब कुछ है
जो तू करै[1] तौ खयाल मिया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तिताल

अलबेली नाजो नजरां
खजरू सै तीखी घायल कर दी।
रसराज एक चसम गमजा पर
नही लगणो परिया सौ सौ मुजरा ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालौ

उलझाई मैंडो हीरा
क्या कीता वे तेरे राझै।
रसराज क्या कहू इस ऊमर नू
आख लगी नही सुलझै सुलझाई ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालौ

चगा चगा साळूडा

---

[1]कर।

*रसराज झुमरी लैं दी सासरिया
माई छलब सांवर दी सेजा मुजरे नु ॥ १

राग — झुंझोटी
ताल — जलद तिताली

मोतीडां वेसरका रे सुनारिया[1] ल्या[2]।
किंत खै गया मोरा[3] चंगा मोती
ना सो सगैगा घरका रे ॥ १

राग — झुंझोटी
ताल — जलद तिताली

यूं छल[4] मोती ए मा इस जादुगारे
मोहनी वसी की सान[5] में
जादू चलाकें।
रसराज जोबना यो घरी हुथ गमो
जो बीती सो बीती ॥ १

राग — झुंझोटी
ताल — जलद तिताली

रांझटा चोरियां करदा।
रसराज हीर निमांणी न बोल दी
इस्क नहीं जोरा-जोरियां ॥ १

राग — झुंझोटी
ताल — जलद तिताली

रांझटा एक मायांणी मा सहैर[6] हजारै दा।
काळा काळा झूमक जुलफां वासा
सगणा तीर निजारै दा ॥ १

---

*रसराज जोश में प्रीत को लग गया जोश गया भी उसकी साम मेरा पैसजाये। स
[1]सुनारिया। [2]ला। [3]मेरा। [4]छलीती। [5]तम्बा। [6]शहर।

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

रे नादाणिया एली बेपरवाइया।
इतनी गरीबा पर बेदरदी
किण बदिया सिखलाइया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

हीरा दा वे केहा हाल मिया।
नही देखै तौ कुछ ना सब कुछ है
जो तू करै[1] तौ खयाल मिया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तिताल

अलबेली नाजो नजरा
खजरू सं तीखी घायल कर दी।
रसराज एक चसम गमजा पर
नही लगणी परिया सौ सौ मुजरा ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालौ

उलझाई मैंडो हीरा
क्या कीता वे तेरे राझै।
रसराज क्या कहू इस ऊमर नू
आख लगी नही सुलझै सुलझाई ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालौ

चगा चगा साळूडा

---

[1] कर।

गोरा गोरा गात नाजो ।
क्या भ्रच्छा लगणा नैनू दा नोक चलावे
क्या भ्रच्छी सांवण दी रात भ्राजो ।। १

राग – फुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

नहीं होनां इस्क दिल में ।
जो हुवा तो रसराज
को मुनासिब सोनां ।। १

राग – फुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

निजरां दे मारे मर मर कें ।
रसराज भ्राशक[1] वदन नहीं जींदे
उठ दे हुये मास्यूक गिर पर कें ।। १

राग – फुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

मर भर[2] दं दी वे हीर प्याल नी सइयो ।
रसराज सुकर गुजार सांई वे
मै दा रांझण मतवाला मी सइयो ।। १

राग – फुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

मिल मिल जांदा वे नेण निमांणानी सइयो ।
रसराज रोक रखे के मिलार्व
सोई मरा सैण सुहांणा भी सइयो ।। १

---

[1]भ्रमीयक । मर प्याले । [2]'प्याले' नहीं मतवाले ।

राग – जुजोटी

ताल – धीमो तितालो

राझणा नैणू सें न मार
हारे तेरा मुखडा बाग बहार मिया मतवाले ।
नैणू दा मारना वे ज्यानी दिल नू न भावे
ज्यान कबज कर डार मिया ॥ १

राग – जुजोटी

ताल – धीमो तितालो

राझा रांझा राझणा सिर दा तू[1] साइया वे ।
मुलक पजाबी बारी सहर हजारा मेरा स्याणा
हीर निमानी चल आइया ॥ १

राग – ठुमरिया[2]

पना मारू चगी नाजकडो लाडलडो[3] लाया व्याय
भेट हुई छै थारी जोग तो पूरबलै जो
रख लीजो[4] कठ लगाय ॥ १

राग – ठुमरिया[5]

मिरजौ भागरली पिलावै उवा की सेजरिया न[6] जाऊ ।
भागरली पिलावै दिवानी करावै
वेसक मारै उवौ तो मै तो उवा कै लागै मोरै राम[7] ॥ १

राग – ठुमरिया

मोरी सासरिया कू बटउवा दे न[8] गारी गारी ।
चुनरी भिजोय डारी सारी सुहासारी
लाल लाल रग जाकी जरी की किनारी ॥ १

---

[1] 'तू' नही । [2] ठुमरी चाल । [3] लाडली । [4] लीज्यो । [5] राग जुजोटी, ताल जलद तितालो । [6] नहि ख ग । [7] 'उवाकै लागै मोरै राम' के स्थान पर 'वा मै न मराऊ' 'ख' 'उवापै ना मराऊ' ग । [8] त 'ग' ।

लाल मोहर किया गौनें की चुनरिया
हित सो रगाई मोरे ससम दुल्हारिया।
रसीलाराज एसो धीठ है संगरवा
फार डारो नां सो याकी सुघर-गुजारी ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बलमां बलमां मोरे आवो रे
मै तो खेलूंगी फाग तोसें दिन प्रो रयन
सब [2]वन केसरिया हो रहे हैं
करो जु केसरिया हमारे हु नयन ॥ १
मगवा चलन लगे कटवा ककरवा
खटकेगे मेरे उर बरस नयन।
रसीला राम प्यारे लाल करो अब
फूल[3] की सेजरिया में सुख सों सयन ॥ २

राग – ठुमरिया

कअरवा मोरा आके उवा के लागी मोर राम।
बठनां अटरिया मोरा
चलनां लोकूं ना नीद[4]।
को लग गूघटवा[5] राखूं
क्या करू मै बिगरै मोरा काम ॥ १

राग – ठुमरिया

चुनरिया मोहि कूं रग दे रे
छला रगरेजा तै।
पिय कू कहू ना मोरे
पास तो रुपइया माहीं।

---

राग-बजाटी ताल-बजट (नताल) बलमां बलमां। [2]सब बन ग। [3]पुष्प। [?]राग पुओटी ठुमरी ताल मे। [4]नींद। [5]घूघटवा। [?]ठुमरी ताल। मोर।

मोल चह[1] तौ मै क्या करू
मोरै अधरन को रस लेजा तै ।। १

राग – ठुमरिया[2]

झमक[3] पग धरत गुजरिया वसीवट ।
बिछवा बजातो जाती
हरि हरि बिरिया खाती ।
पिय सौ करन बाती
ठुमरी की तान सुनाती ।। १

राग – ठुमरिया[4]

तुरछी कै बिरवा माही रे
घेरी घेरी मुजै इस नद कै नै
कहा कान्ह[5] कियौ मोर ननदी
खोई गई लाज मोरी सारो रे ।। १

राग – ठुमरिया[6]

नन दिया मोरी, मोरी[7] कास न कहू मै मोरी बात ।
मोरा तौ छाड[8] कै हाथ
अनत बितावै रात
देत है दिखाई प्रात
अैसी आ मिली है कोई कम जात ।। १

राग – जगलौ[8]

मालनिया मीठी मीठी री
अनारा[9] मोहि[10] कौ[11] देती जा ।
तोरै तौ पास[12] पके पके तरबूजवा

---

[1]चहैं । [2]राग-जुजोटी ठूमरी चाल मैं । [3]झटक ग । [4]राग-माझ, ठूमरी चाल । [5]कहान । [6]राग-जुजोटी ठूमरी चाल मे । [7]नही ग । [8]छाडि । [8]ठूमरी चाल । [9]अनारै ख ग ।
[10]मोई । [11]कै । [12]पास है ।

गोरा गोरा गात नाजा ।
भया भछा लगणा नैंनू दा नोक जलावे
भया भछी सांवण दी रात भाजो ॥ १

राग – कुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

नहीं होनी इस्क दिल में ।
जो हुवा तो रसराज
को मुनासिब सोनी ॥ १

राग – कुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

निजरां दे मारे मर मर के।
रसराज भासक[1] वदन नहीं जीवे
उठ दे हुमे मास्यूक गिर पर कै ॥ १

राग – कुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

मर मर[2] वे वो वे हीर प्यास नी सइयो।
रसराज सुकर गुजार सांई वे
मे वा रांझण मतवाला[4] नी सइयो ॥ १

राग – कुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

मिस मिस जांदा वे नैण निमाणानी सइयो ।
रसराज रोक रखे के मिलावें
सोई मेरा सैम सुहामा मी सइयो ॥ १

---

[1]आशिक । [2]मर प्यासे । [3]'प्यासे' नहीं [4]मतवाले ।

राग – जुजोटी

ताल – धीमो तितालो

राझणा नैणू सं न मार
हारे तेरा मुखडा बाग बहार मिया मतवाले ।
नैणू दा मारना वे ज्यानी दिल नू न भावे
ज्यान कवज कर डार मिया ।। १

राग – जुजोटी

ताल – धीमो तितालो

राझा राझा राझणा सिर दा तू[१] साइया वे ।
मुलक पजाबी वारी सहर हजारा मेरा स्याणा
हीर निमानी चल आइया ।। १

राग – ठुमरिया[२]

पना मारू चगी नाजकडी लाडलडी[३] लाया व्याय
भेट हुई छै थारी जोग तो पूरबलै जो
रख लीजो[४] कठ लगाय ।। १

राग – ठुमरियां[५]

मिरजो भागरली पिलावै उवा की सेजरिया न[६] जाऊ ।
भागरली पिलावै दिवानी करावै
वेसक मारै उवौ तो मै तो उवा कै लागै मोरै राम[७] ।। १

राग – ठुमरिया

मोरी सासरिया कू वटउवा दे न[८] गारी गारी ।
चुनरी भिजोय डारी सारी सुहासारी
लाल लाल रग जाकी जरी की किनारी ।। १

---

[१]'तू' नही । [२]ठुमरी चाल । [३]लाडली । [४]लीज्यो । [५]राग जुजोटी, ताल जलद तितालो । [६]नहि ख ग । [७]'उवाकै लागै मोरै राम' के स्थान पर 'वा मै न मराऊ' 'ख' 'उवापै ना मराऊ' ग । [८]त 'ग' ।

लाल मोहर किया गौनें की चुनरिया
हिन सों रंगाई मोरें ससम दुल्हारिया ।
रसोलाराज एतो धीठ है लगरवा
फार डारी नां तो याकी सुकर-गुजारी ।। १

राग – ठुमरियां[१]

बलमां[२] बलमां मोरे भावी रे
मै तो खेलूगी फाग तोसें दिन भौ रयन
सब [३]बन केसरिया हो रहे हैं
करो जु केसरिया हमारे हु नयन ।। १
मगवा चलन लगे कटवा ककरवा
खटकेंगे मरे उर बरस नयन ।
रसोला राज प्यारे लाल करौ भव
फूल[४] की सेजरिया में सुख सों सयन ।। २

राग – ठुमरियां[५]

कजरवा मोरा आक उवा के लागे मोर रांम ।
मठनां मटरिया मोरा
चलनां लोकूं का नीच[६] ।
कौ लग गूघटवा[७] राखूं
क्या करू मै बिगर मोरा कांम ।। १

राग – ठुमरियां

चुनरिया मोहि[८] कूं रग दे र
छैला रंगरेजा सैं ।
पिय कूं कहु ना मोरे
पास ती रुपइया नांही ।

—

[१]राग जोगी ताल-पंजाबी तिताली । [२]बलमां बलमां । [३]मदन बन न । [४]फूल । [५]राग जोगी ठुमरी चाल में । [६]नीचू । [७]घूंघटवा । [८]ठुमरी चाल । मोहिं ।

मोल चहू[1] तौ मै क्या करू
मोरै अधरन कौ रस लेजा तै ।। १

राग – ठुमरिया[2]

झमक[3] पग धरत गुजरिया वसीवट ।
बिछवा बजातो जाती
हरि हरि विरिया खाती ।
पिय सौ करन बाती
ठुमरी की तान सुनाती ।। १

राग – ठुमरियां[4]

तुरछो कै विरवा माही रे
घेरी घेरी मुजै इस नद कै नै
कहा कान्ह[5] कियौ मोर ननदी
खोई गई लाज मोरी सारो रे ।। १

राग – ठुमरियां[6]

नन दिया मोरी, मोरी[7] कास न कहू मै मोरी बात ।
मोरा तौ छाड[8] के हाथ
अनत बितावै रात
देत है दिखाई प्रात
अैसी आ मिली है कोई कम जात ।। १

राग – जगलौ[8]

मालनिया मीठी मीठी री
अनारा[9] मोहि[10] कौ[11] देती जा ।
तोरै तौ पास[12] पके पके तरबूजवा

---

[1] चहैं । [2] राग-जुजोटी ठूमरी चाल मैं । [3] झटक ग । [4] राग-माझ, ठूमरी चाल । [5] कहान । [6] राग-जुजोटी ठूमरी चाल मे । [7] नहीं ग । [7] छाडि । [8] ठूमरी चाल । [9] अनारै ख ग । [10] मोई । [11] कै । [12] पास है ।

भोर भये भये भवषा
ताको मोल मेती भा ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बटमारो तेरो मोहना री
मेरो गाव लूटे मा।
मोरे पास भये भछ साल दुसाले
कर भर दीन तोहू गल नांहो छुट मा ॥ १

राग – ठुमरिया

चोरी चोरो दा दाग मिया लग गया थ।
काहू कूं कसम करो मिरजाजी
इस्क नहीं सिर-जोरो दा लाग ॥ १

राग – तोडी
ताल – इकी

भाई भाई वे बहार
हरे द्रुम फूले फूले फुलवारी मोरी मईया वन छाई
या बेमग्यां दिस दिस मिल मिल महि छिब छाई।
भवर भवन लागे रसराज कलियन में
कोयलिया मवषा की डारो डारो पर कुहुकाई ॥ १

राग – तोडी
ताल –चौताली

मंजर मंजर भ्रमर।
फूम फूल पे मुकवा *देखो डार डार कोयल रही विहर।
पछ पछ पेस सर सर हंसा
रसीलाराज पिय पिय पे क्यों हर* ॥ १

---

[1] ठुमरी बाल। विरह म। पिय पिय। *हरि। *देखे म।

राग – तोडी
ताल – जलद तितालो

अचरा मोर छोड कन्हईया
कुज कुज के मुरवा देखै
पपय्या देखै
डार डार के सुकवा देखै
कवळ कवळ के[1] भवरा देखै*
और गाव के पशुवा[2] देखै
हमारा तुम्हारा जियरा देखै।
मै नही कहुगी तै नहि कहैगा
अछ[3] वेली हु नाही[4] कहैगी
सर डाबर हु कैसें बोल सकता है लगरुवा
मन कै अतर जो कोई बैठा
भली बुरी वो[5] सब जानता है
उवौ ही प्रेरत है सब ही कू
हमारै तुम्हारै क्या है सारै
रसीलौराज[6] वा सायब लेखै ।। १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालो

कंटवा के मिस बैठ गई[7] मा
'कोई निकालौ नाव दई कै।'
यू कैती मै, रसराज मगवा मे
बसीवट तै निकस आयौ कन्हईया ।। १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालो

नैनवा को चूक कन्हईया
मन बिचारौ पाय रह्यौ[8] दुख

---

[1]'के' नहीं। *दोनों पंक्ति ग मे नही। [2]पसुवा। [3]विछ। [4]नाह। [5]जो। [6]जानत ग। [6]रसीला राज उवा साहब ख रसीला ग। [7]रही। [8]'रह्यौ' नही ख।

मोर अछे अछे अवधा
तार्नो मोल लती जा ॥ १

राम – ठुमरिया[1]

घटमारी तेरो मोहना री
मेरो गाँव लूट मा।
मोर पास अछे अछ साल दुसाले
कर भर दीन तोहू गैल नाहीो छुट मा ॥ १

राम – ठुमरिया

चोरी चोरी दा दाग मियाँ लग गया वे।
काहू कू कसम करो मिरजाजी
इस्क नही सिर-जोरो दा दाग ॥ १

राग – तोडी
ताल – इकी

आई आई वे बहार
हरे द्रुम फूले फूले फुलवारी मोरी मईयार धन छाई
या बेलरियाँ दिस दिस मिल मिल महि छिन छाई।
भवर भवन लागे रसराज कलियन में
कोयलिया अबवा की डारो डारी पर कुहकाई ॥ १

राग – तोडी
ताल – चौताली

मंजर मंजर भ्रमर।
फूल फूल पै झुकवा "दसो डार डार कायम रही विहर।
अद्ध अद्ध" बेल सर सर हंसा
रसीलाराज त्रिय त्रिय पैं ज्यों हर" ॥ १

---

ठुमरी नाम। विरह न। दिस दिस। "हरि। "बेले न।

राग – तोडी
ताल – धीमौ तितालौ

बनरा जी राज दुल्हारा
अगानैणी बनी चदाबदनी नै प्यारा लागौ।[1]
नित रसराज पधारौ महला
लाडली करै छै थारा चाव ॥ १

राग – तोडी
ताल – होरी रौ

अबा डार कोयलिया बोलै
बहुत बसती बयार मा।
कुज कुज रसराज दपत जहा[2]
भंवरन ज्यू मिल डोलै ॥ १

राग – तोडी
ताल – होरी रौ

मितवा मोरै आइलौ मोरी मा[3]
करूगी मै आनद उछाह मा।
हाथ जोर कर पईंया परूगी
गरवा लगा लौ है नाह ॥ १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालौ

चबेली कौ बिरवा तामे प्रात भयै हु नही जागे दपत घिर।
धोखे लता द्रुम तोरत माली
पुष्प भूपण हिर फिर ॥ १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालौ

मलिय्या पुकारे कौली वालो लाला
ह वेगे आवो बनी है बहार।

---

[1]ये प्यारा ख ग। [2]जिहा। [3]साय ग।

रसीसाराज करै सो पावै
यो[1] तो मनोसो न्याय कन्हईया ॥ १

राग – तोडी
ताल – ममद तितालो

फुमवा ग्रींगन ग्राई रे कन्हइया
तोरे मिलन को[2] ननदिया नोवल।
सास कै ग्रागैं जाय कहुँगी
झटका पटका करैंगी उदा[3] ॥ १

राग – तोडी
ताल – चौपचरी

ललण चाल चम्पावाग में
ग्रलबेला राजकमर ग्रब।
तीजणियां रा झूलरा चाल
सग लो सात सहेलण ॥ १

राग – तोडी
ताल – धीमी तितालो

चालो चालो चम्पायाडी
सासूं मिल सहेली हे नणंद म्हारी
ईसर गौरजा री व्रत करस्या
ग्रौर रमसां खेलस्यां सारी ॥ १

राग – तोडी
ताल – धीमी तितालो

साहीजी रा मुख रा बोलण री तरह चलण री मनोसी देखी मा[4] म्हे।
कांई चितवन रसरांज नैणां री
उसी छे मूंहां री रेख

---

[1]यौ म। [2]कै। [3]'कमा' नहीं ल, या म। मुख म। [5]'मा' नहीं व।

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

अचरा मोर छोड कन्हईया
कुज कुज के मुरवा देखै
पपय्या देखै
डार डार के सुकवा देखै
कवळ कवळ के[1] भवरा देखै*
और गाव के पशुवा[2] देखै
हमारा तुम्हारा जियरा देखै ।
मै नही कहुगी तै नहिं कहैगा
अछ[3] वेली हु नांही[4] कहैगी
सर डाबर हु कैसे बोल सकता है लगरुवा
मन कै अतर जो कोई बैठा
भली बुरी वो[5] सब जानता है
उवौ ही प्रेरत है सब ही कू
हमारै तुम्हारै क्या है सारै
रसीलौराज[6] वा साथव लेखै ॥ १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

कंटवा के मिस बैठ गई[7] मा
'कोई निकालौ नाव दई कै ।'
यू कैती मै, रसराज मगवा मे
बसीवट तै निकस आयौ कन्हईया ॥ १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

नैनवा कौ चूक कन्हईया
मन बिचारौ पाय रह्यौ[8] दुख

---

[1] के नही । *दोनो पक्ति ग मे नही । [2] पसुवा । [3] अिछ । [4] नाह । [5] जो । [6] जानत ग । [6] रसीला राज ढवा साहव ख रसीला ग । [7] रही । [8] 'रह्यौ' नही ख ।

मोर अच्छे अच्छे भंवरा
ताकों मोल लेती जा ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बटमारो तेरो मोहना री
मेरो गांव लूटे मा।
मोर पास अच्छे अच्छे साल दुसाले
कर भर दीन तोहु गैल मोहो छुट मा ॥ १

राग – ठुमरियां

चोरी चोरो दा दाग मिर्जा लग गया वे।
काहे कूं कसम करो मिरजाजी
इस्क नहीं सिर-जोरो दां लाग ॥ १

राग – तोडी
ताल – इकी

माई माई ये महार
हरे द्रुम फूले फूले फुलवारी मोरी मईया घन छाई
या बेलरियां दिस दिस मिल मिल महि छिव छाई।
भवर भमन लागे रसराज कलियन मे
कोयलिया अवधा की डारो डारी पर कुहकाई ॥ १

राग – तोडी
ताल –चौतालो

मधर मंजर भ्रमर।
फूल फूल पे सुकवा *देखा डार डार कोयल रही विहर।
बच्छ बच्छ बेस सर सर हंसा
रसीलाराज त्रिम त्रिय पैं क्यों हर* ॥ १

---

[1]दूसरी चाल। [2]बिरह म। [3]बिच बिच। [4]हरि। [5]देखे म।

राग – तोडी
ताल – धीमो तितालो

बनरा जी राज दुल्हारा
मृगानैणी बनी चदावदनी नै प्यारा लागो[1] ।
नित रसराज पधारी महला
लाडली करै छै थारा चाव ।। १

राग – तोडी
ताल – होरी रौ

अबा डार कोयलिया बोली
बहत बसती बयार मा ।
कुज कुज रसराज दपत जहा[2]
भंवरन ज्यू मिल डोलै ।। १

राग – तोडी
ताल – होरी रौ

मितवा मोरै आइलौ मोरी मा[3]
करूगी मैं आनद उछाह मा ।
हाथ जोर कर पईंया परूगी
गरवा लगा लौ है नाह ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालौ

चबेली कौ बिरवा तामे प्रात भयै हु नही जागै दपत घिर ।
धोखै लता द्रुम तोरत माली
पुष्प भूषण हिर फिर ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालौ

मलिय्या पुकारे कौली वालो लाला
ह वेगे आवो बनी है बहार ।

---

[1] थे प्यारा ख ग । [2] जिहा । [3] माय ग ।

रसीलाराज कर सो पावै
यो[1] तौ मनोखौ न्याय कन्हईया ॥ १

राग – टोडी
ताल – जलद तिताली

फुलवा बींनन आई रे कन्हईया
तोर मिलन कौ[2] ननदिया नांव ल।
सास के आगें जाय कहूँगी
झटका पटका करेंगी उवा[3] ॥ १

राग – टोडी
ताल – दीपचंदी

खेलण चाल चम्पाबाग में
अलबेला राजकवर भव।
तीजणियां रा झूलरा चाल
सग ले सात सहेलण ॥ १

राग – टोडी
ताल – धीमी तिताली

चालौ चालौ चम्पाबाडी
सातूं मिल सहेली हे नणंद म्हारी
ईसर गौरजा री व्रत करस्यां
और रमस्यां खेलस्यां सारी ॥ १

राग – टोडी
ताल – धीमी तिताली

साहीओ रा मुख[4] रा बोलण री तरह चलण री मनोखी देखी मा[5] म्हें।
कोई चितवन रसरासि नणां री
उसी छै मूंछां री रेख

---

[1]यौ म। [2]के। [3]'उवा' नहीं ख, वा म। [4]मुख म। [5]'मा' नहीं ख।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

आजी म्हारे सावळडा थे मिजमान आज ।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

चाली मन भावनी पीया की सेज[1] ।
रसराज माननी सोहत मतवारी आन
झूलती[2] आवै सवारी[3] तान ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

पियरवा[4] मोहि ताना दे दे मारी हो ।
दोस्ती तिहारी को[5] वेसक नाम कहै कै
रसराज केई बहाना[6] लै लै ।। १

राग – धनासरी
ताल – इकौ

बाला राज चालौ विदेसा ।
तुरिया जीण कसी छै कमरा
नौबत रही छै बाज ।। १
बगतर झिलम किलग्या चमकै
संग वाकौ रावतियौ समाज ।
साची नै कही नै सायबा कद घर आसौ
रण रसिया रसराज ।। २

राग – धनासरी
ताल – आडौ तितालौ

तारन जोरी वे जोरी
तू तौ सम रसिया नै तोरी ।

---

[1]सैजां ख सेज ग । [2]ज्यू आवै ग । [3]असवारी ग. । [4]आलीजाजी म्हानै ख पियरवाजा ग । [5]री । [6]व लै लै ।

फूली बसत रसराज नवेली[1]
मानद मांनौ निहार ॥ १

राग – देवमल्हार
ताल – चौताली

राधे कजरारे तोरे नैन बिना ही
दोनैं मदन के अनियारे।
मतवार रसराज बिनां ही
मद छाके कन्हइया कू पियारे[2] ॥ १

राग – देवमल्हार
ताल – जलद तिताली

सरस बादळी म्हारा राज चमक रही छ बीज।
झम झमती घण महल चढ छै
रम-झम पड़ती बूंद ॥ १
मिळी अंधेरो रेण सुहेमी
मोरा गावै मल्हार[3]।
राजगहैली रै संग मांणी
सरस तीज री रात ॥ २

राग – देवमल्हार
ताल – जलद तिताली

विदेसीडा बेटा राव रा हो
उतरया कोठे सूं आय।
धुकल्या सात सीस पुर म्हांरे
झुली दे गजरो बांध ॥ १

---

[1] रसराज नवेली। [2] प्यारे। [3] मोरा गावै मल्हार' पाठ नहीं।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

आजो म्हारै सावळडा थे मिजमान आज ।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

चाली मन भावनी पीया की सेज[1] ।
रसराज माननी सोहत मतवारी आन
झूलती[2] आवै सवारी[3] तान ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

पियरवा[4] मोहि ताना दे दे मारी हो ।
दोस्ती तिहारी को[5] वेसक नाम कहै कै
रसराज केई बहाना[6] लै लै ।। १

राग – धनासरी
ताल – इकौ

बाला राज चालौ विदेसा ।
तुरिया जीण कसी छै कमरा
नौबत रही छै बाज ।। १
वगतर झिलम किलग्या चमकै
संग वाकौ रावतियौ समाज ।
साची नै कहौ नै सायबा कद घर आसौ
रण रसिया रसराज ।। २

राग – धनासरी
ताल – आडो तितालौ

तारन जोरी वे जोरी
तू तौ सम रसिया नै तोरो ।

---

[1]सैंजा ख सेज ग । [2]ज्यू आवै ग । [3]असवारी ग । [4]आलीजाजी म्हानै ख पियरवाजा ग । [5]री । [6]व लै लै ।

रग सुवास देसी भा स कढी
ज्यू ज्यूं केसर घोरी ॥ १
जोर गयौ भोर सरस गयौ तन
कर गयौ उवां सै चोरी।
कोई की नांई खेल गयौ
तूं सोरी भर लै छोरी ॥ २

राग – धनासरी
ताल – धीमौ तितालौ

स्रवन परी ह्वै कवन सो' फस
सुनियैं याकैं कुञ्ज भवन बास माई
फूली बसंत तामैं पक्षी बोल
नींद आत एक साथ कै गवन ॥ १

राग – धनाधरी
धीमौ तितालौ

पांणी भर रही सरवर पाळ
किण छैला री छ्व या कांमणी।
सीस सुरगी चूंनडी चमकै
मोतीड़ां री माळा दांमणी ॥ १
कंवळ-पत्री मुख मिसी सुहाई
छूटी अलक सुलजावणी।
रसराज किण बादळ गळै' लगसी
चमक झमकसी दांवणी ॥ २

राग – धनाधरी
धीमौ तितालौ

म्हांरा थगा मारू चाल्‍ छै विदेस
जिण रुत केसू फूल धासी।

---

सौ। लय। 'दामणी।

कळिया सु भवर बिलम रया छै
सूवटा आवा डाळी आली ॥ १
लोक विदेसा सु घर आवै
लता बिरछा री मिळण आली ।
रसराज अै छाडै छै आपा नै
किसा हिया रा कथ म्हारी आली ॥ २

राग — धनासरी
ताल — जलद तितालो

म्हारा मारूडा दारूडी रौ सवाद काई होय छै
सो बता नै आलीजा ।
रसराज मै तौ जाणु दूर सु
सजना नै ल्यावै[1] याद ॥ १

राग — धनासरी
ताल — जलद तितालो

सईया कुण छै, अे लागै छै अमीर
किण उळगाणी रा भवरजो ।
लटपटिया सिर पेच पाग रा
भूह कबाण-सी ताणी रा निमाणी रा ॥ १
लहरचा री लहरचा मन लाग्यौ
मौसर भीजती सूरती जवानी रा ।
रसराज अे पिय प्यारा होसी
कौणसी अनोखी नार सयाणी रा ॥ २

राग — धनासरी
ताल — जलद तितालो

सालुडी[2] मगा द्यौ सागानेर री
अजी रग-भीना राजा जी ।

---

[1]लावै । [2]सालूडौ ।

आंगण कटारी भांत अनोखो
लाग्यो छ लपा[1] चहु फेर रो ॥
नया रंग रो कळियां रो सींचो
आगरा रो सैंगो[2] घेर घमेर रो।
रसीलाराज थांरी खातर म्हां सू
रूसणो कियो छ केसो[3] वैर रो ॥ १

राग – धनाश्री
ताल – धीमी तिताली

अब आंन मिलादे कागिदवा रे
मोर मितवा मोहि सेजरियां।
घरी घरी पल पल उथा के दरस बिन
जियरा तरफ रह्यो है न आवं नींदरियां ॥ १

राग – धनाश्री
ताल – धीमी तिताली

स्याम तोरी दखो रे आज जोरा जोरो।
किह सुरत तोरी त्रिपता घोसें
नाहक बहियां मरोरी ॥ १
लटकत आंगन में सूकी रंग
चूनरी[4] भिजो दई वेसर तोरी।
रसीलाराज कापे न्याव कराऊ
कौन गांव की या होरी ॥ २

राग – धनाश्री
ताल – दीपचंद

आव[5] म्हारा मारूड़ा[6] मारवण तो बुलावै छे।

---

[1]चपा भरा। [2]लाईमी। [3]चिठी। अपता य चिपता य। [4]चुनड़ी य। [5]धव य। मारवड़ा रे।

खान पान जर जेवर न भावै
उवै नै श्रेक तुही सुहावै ।। १

राग – धनासरी
ल – दीपचदी

गवालन पनिया कै मिस श्राव
तोरी सास ननद[1] गई[2] गाव ।
पारोसन कु मै अपनाई
कबहु न लै कहु नाव ।। १
श्रेक फागन के दिन मतवारे
आज लग्यौ है मुसकल सौ[3] दाव ।
गोरी गोरी बहिया मे लपटन की मोहि
बहुत दिनन कौ चाव ।। २

राग – धनासरी
ताल – धीमौ तितालौ

अजी म्हारा जाजर[4] बिछिया बाजै राज
क्यू कर आवा हो आलीजा ।
रसराज नथनी महदी चमकै
लोक लखै मन लाजै राज ।। १

राग – धनासरी
ताल – धीमौ तितालौ

अलबेली हे कलायन[5] दारू दै ।
थारी चटक चाल मोहि लागी
एक रात म्हारी मारू लै ।। १
पीछी उतर[6] कर रही छै[7] कलाळन
यौं[8] तौ मेवासी बागा री बहारू छै ।

---

[1]ननदीया । [2]'गई' नहीं । [3]सूं । [4]जांभर । [5]कलालन ख, कलालनी ग । [6]ऊतर ।
[7]कर 'रही छै' नही । [8]श्रौ ग ।

साहब इनें रख्यौ तो बराबर
तूं मोरां नें किण सारू दे ।। २

राग – धनासरी
ताल – धीमी तिताली

देखो देखो ए कलाळी जोबन जोरजी ।
म्हांरा चैंन[1] इसा मोहि दीसैं
म्हांरा पिया में तू चोर सी ।। १

राग – धनासरी
ताल – धीमी तिताली

हो मसा मोहि लांनां दे दे मारी ।
चाहत हु सो तोहि देस कै
करिय न कुलफ सवारी ।। १
भारग भाम गई मे भारग
इक दिन रग की चलाई पिचकारी ।
उवाहो पर रसराज लोकन इन
कर मोहि रसी हुं तिहारी ।। २

राग – धनासरी
ताल – होरी री

आयौ फाग उमंड आली री
मची है मिहरवा[2] की धूम ।
मौ सत साथ गुजरिया आवें
जर जेवर में झूम ।। १
अबीर गुलाल कुमकुमा चंदन
हाथन में फूलन के झूम ।
खेलत है रसराज आनंद म
मम् सावन झर झूम ।। २

---

[1] चैन म । [2] मिहरावा ।

राग – परज
ताल – इकौ

आई छै सावणिया री तीज अलबेलिया कमधजिया
चालौ चालौ चम्पाबाग[1] बाडी मे आज ।
मारू छौ कत मारवणी नारी
था दोना री छै चगी जोडीजी ।। १
अतर पान दारूडौ ल्यौ लैरा
करौ नै तीजणिया रै सगत प्यारीजी ।
पिय सिर पर रसराज लहरियौ
प्यारीजी रै सिर पचरग साडी ।। २

राग – परज
ताल – इकौ

नथनी जगनू हमेळा चमकत टिकवा चुरिया
किंकनी बुलाक छाप छलवे वैनी ककना ।
करणफूल सीसफूल नूपर रसराज
पिया पै ल्यादे[2] सजनी ।। १

राग – परज
ताल – जलद तितालौ

चुडलै सायधण रै जी
आज रग लाग रयौ[3] छै ।
चुडलौ हस्ती दात रौ
रग तौ सुरख नयौ ।। १
म्हो चीरयौ कारीगर कौ यौ
सोवन पात छयौ ।
तीज री रात पिया गळ लगता
सब दुख दूर गयौ* ।। २

---

[1] 'बाग' नही । [2] लादै । [3] रहयौ । *दोनो पक्ति ग मे नही ।

राग – परज
ताल – चमक तिताली

म्हांन छ चाली[1] थांर देसड़
म्हे तो हुवा पना थारा[2] तावेदार मालीजाजी हो ।
छोड 'र जाणो नहीं सला छ[3]
मरजी सूं लाचार ।। १
थांमें भाई तीज सिरा की
नई गोरधां रो तिंवार ।
रसराज संग राखो पावस मे
नेहु सखी रा रिझवार ।। २

राग – परज
ताल – चमक तिताली

माकडी सिकारां आज नीसरधी
सरी लिया[4] सांईना सिरदार सहेल्यां हे ।
सरवर नदीयां बाग वनां की
घणी छ रसीली बहार ।। १
नीकै साज नीको छो सूरत
नीका घेराक्यां असवार ।
नीके कौल रात म आसी
रसराज छ जी रिझवार ।। २

राग – परज
ताल – चमक तिताली

सासूड़े री होय रहयो चामणो
वरा मुलक रो उणसूं सवाय रसियाजी हो ।
सांवणिया रो रैण अंधेरी
चंदो थी छिप्यो मुरझाय ।। १

[1]चालोला प । [2]थारा क प । [3]सला नहीं । [4]लिया ।

इण मारवण रै थे नैडा चाल जो[१]
ज्यू मारग सूज्यो जाय।
रसराज सुख सु देसा थानै
सेभा तक पोहचाय[२] ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

आई वसत वहार ननदिया
वन वन कोयल वोली।
अवा मोरै केसू फूलै
भवरन की झनकार सुनन लाग्यौ[३] ॥ १
ठौर ठौर हिंडोरे वधे है
पहैरे[४] फूलन के चौसर हार।
मिल दपति रसराज आनद मे
वन वागन मे वहार करत भये ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

आज आई छै सावणिया री तीज मिजाजीडा
खेलण चालौ चम्पावाग मे।
ऊचै विरछ हिंडोरो वाध्यौ
झोटा दे दे झुलावै[५] साथण मोरी ॥ १

राग – परज
ताल – धीमो तितालो

मोतीडा भरी छै माग
सुहागण किण नै सहेली[६]।
आधा[७] सीस रा दुपटा सू वह गई
किण रसिया पर साग ॥ १

---

[१]ज्यो। [२]पह चाय। [३]लागी। [४]पहरे। [५]झलावेली। [६]सहेली। [७]आधार ग।

राग – परज
ताल – होरी री

चालो चालो चंपाबाग पनाजी
भाई तीज सावण री।
तीजणियां रा मीठा सुर सूं रयौ छ
सूरां रो झुरमुट[1] लाग ॥ १
तीज गळै तीजणियां झूलै
रसिया नै द रस छाक।
सखि सहेल्यां आसिस देवै
धण रो अचळ सुहाग ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इकी

सांवरो मोहि कूं सुहावै अे मा।
जानत हूं अनुकूल यौ तौ बी
आस लगी उवां सुं आवै अे[2] मा ॥ १
होनी होय सु होय रहेगी
कोई कछु कहौ सोई जोई मन भावै।
रसराज उवो राखौ मत राखौ
साई मोरी तो ना छुटाव अे मा ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इकी

सांवरो लगन लगावत अे मा।
काहु कछु काम बहानें कोई
अपनें नगर में आवत अ मा ॥ १
पूछी सास ससुर कू याकी
सोम प्रकार को महप कहावत।

---

झुरमुट। हवी। [2]दे।

रसराज या नायक कू कोई
नही अनकूल बतावत श्रे मा ॥ २

राग – पूरवी
ताल – धीमो तितालो

कोयलिया बोली अबवा की डार ।
सुक सारचा[1] मिल झूलन लागे
भ्रमर करत झकार ॥ १
नरतत[2] मोर पपईया बोलै
मदन नरेस रिझावन वार ।
जगल मे मगल सौ लाग्यौ
आई रसराज बहार ॥ २

राग – पूरवी
ताल – धीमो तितालो

कळिया सावळ चुन चुन ला दा
गुथ दी अमीरल चौसर वारे ।
गाते वी थे उस वखत मे
सुन मुन उन्हा दी ताना ।
परिया बिरह दी मुस्ताक
न कर दी दिल न्यारे ॥ १

राग – पूरवी
ताल – होरी रो

कौठै बोली होती साझ समै मे या कोयलडी ।
मीलन कवळ सरा ग्रौर नदिया
कुमद फूलण री बेळा रग भीनी ॥ १
एक जिसी छब[3] चद सूरज री
पथी[4] लेत बिसराम ।

---

[1]सारघौ स ग । [2]निरतत । [3]छिब । [4]पखी ग ।

राग – परज
ताल – कलद तिताली

म्हांनै ले चालो थार देसड़े
म्हे तो हुवा पना थारा' तावेदार म्हालीजाजी हो।
छोड र जाणो नहीं' सला छै
मरजी सू लाचार ॥ १
सांमै माई तीज सिरा की
नई गोरयां री तिंवार।
रसराज संग राखो पावस में
नेह नदी रा रिझवार ॥ २

राग – परज
ताल – कलद तिताली

मारूड़ी सिकारां म्हाज नीसरयो
सैरां सिमा' साईना सिरदार सहेल्यां हे।
सरवर नदीयां वाग वनां की
बणी छ रसीली बहार ॥ १
नीकै साज नीकी यो सूरत
नीका भैराक्यां असवार।
नीके कौल रात न वासी
रसराज छै थी रिझवार ॥ २

राग – परज
ताल – कलद तिताली

सासूड़े री होय रहयो चानणो
थेरा मुलक री उणसुं सवाय रसियाजी हो।
सांवणिया री रैण अंधेरी
चदो वी छिप्यो मुरझाय ॥ १

चान्दीमा ग। वारा ब य। सला नहीं। ⁴सिमा।

इण मारवण रे थे नैडा चाल जो[1]
ज्यू मारग नूज्यो जाय।
रसराज सुख सु देसा थानें
मेभा तक पोहचाय[2] ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

श्राई वसत वहार ननदिया
वन वन कोयल वोली।
श्रवा मोरं केमू फूलें
भवरन की भ्रनकार सुनन लाग्यो[3] ॥ १
ठौर ठौर हिंडोरे वधे है
पहेरे[4] फूलन के चौसर हार।
मिल दपति रसराज श्रानद मे
वन वागन मे वहार करत भये ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

श्राज श्राई छै सावणिया री तीज मिजाजीडा
खेलण चालो चम्पावाग मे।
ऊचै विरछ हिंडोरी वाध्यो
भोटा दे दे भुलावे[5] साथण मोरी ॥ १

राग – परज
ताल – धीमो तितालो

मोतीडा भरी छै माग
सुहागण किण नै सहेली[6]।
श्राधा[7] सीस रा दुपटा सू वह गई
किण रसिया पर साग ॥ १

---

[1]क्यो। [2]पहुचाय। [3]लागो। [4]पहरे। [5]भुलावेली। [6]सुहेली। [7]आधार ग.।

राग – परज
ताल – होरी री

चालो चालो चपाबाग पनाजी
माई तीज सांवण री ।
तीजणियां रा मीठा सुर सूं रयौ छ
सूरां री झुरमुट[1] माग ॥ १
तीज गळै तीजणियां भूलै
रसिया नै द रस छाक ।
सखि सहेल्यां मासिस देव
घण री मचळ सुहाग ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इकौ

सांवरो मोहि कूं सुहावै मे मा ।
जानत हूं मनुकूल यौ छौ बी
मास मगी उर्वा सुं जावै म' मा ॥ १
होनो होय सु होय रहेगो
कोई कछु कहो सोई जोई मन भाव ।
रसराज उवो राखो मत राखो
साई मोरी छो ना छुटावै मे मा ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इकौ

सांवरो लगन लगायत मे मा ।
काहु कछु काम यहाने कोई
मपनें वगर में मावत म मा ॥ १
पूछी छात सवन कूं याकी
तोन प्रमार को नहच महावत ।

---

[1] भरपुर । खपी । '३ ।

रसराज या नायक कू कोई
नही अनकूल बतावत अे मा ।। २

राग – पूरबी
ताल – धीमो तितालो

कोयलिया बोली अबवा की डार ।
सुक सारयां[1] मिल झूलन लागे
भ्रमर करत झकार ।। १
नरतत[2] मोर पपईया बोलै
मदन नरेस रिझावन वार ।
जगल मे मगल सो लाग्यो
आई रसराज बहार ।। २

राग – पूरबी
ताल – धीमो तितालो

कळिया सावळ चुन चुन ला दा
गुथ दी अमीरल चौसर वारे ।
गाते बी थे उस वखत मे
सुन मुन उन्हा दी ताना ।
परिया बिरह दी मुस्ताक
न कर दी दिल न्यारे ।। १

राग – पूरबी
ताल – होरी री

कोठै बोली होती साझ समैं मैं या कोयलडी ।
मीलन कवळ सरा और नदिया
कुमद फूलण री बेळा रग भीनी ।। १
एक जिसी छब[3] चद सूरज री
पथी[4] लेत बिसराम ।

[1]सारघी ख ग । [2]निरनत । [3]छिब । [4]पखी ग ।

फूली सांझ रसराज चंबेली रा
सुगघ पवन में झकझोळो मलवेलो[1] ॥ २

राग – बरवै
ताल – जलद तिताली

मैंनू छाड न जा
हो लाला[2] मो देस बिरांनो रे।
कहा भयो जो मैं हु दिवांनी
रसीलाराज तू सयांनो रे॥ १

राग – बरवै
ताल – जलद तिताली

आनैं वाला हो लला फरियाद हमारी सुणजा।
छतियां फट विरहागन झड़ दा
मुखड़े[3] सैं मुखड़ मिलाजा॥ १

राग – बरवै
ताल – जलद तिताली

नजर निआरे दी यार
मन बस गईयां वे।
रसीलाराज महबूबां दी नजरां
फूट कलेजे पार[4] ॥ १

राग – बरवै
ताल – जलद तिताली

मुख बीरा[5] कजरवा नैनू रांम
लाल लाल बिंदलिया भाल बंमोयां।
गोरी गोरी बहीमां हरी हरी चुरियां
भरी[6] बेठो गुजरी जात है भरन पनीयां॥ १

[1] मलवेली नहीं। [2] ललाख प। [3] मीप। [4] मुखड़ा ख। [5] पाश्र्व प्रति में नहीं। [6] बिरा। [7] हां पाणी।

राग – बरवै
ताल – दीपचदी

झर पावस मे मोरी अखिया
निझर हो रही रे हो[1] लता[2] विरहा के असवन तें।
कौन चुगै उस बेदरदी बिन
टप टप मोती हस वे ।। १

राग – बरवै
ताल – धीमो तितालो

घर आ मिलवे रग भीनी परी
तेरे वेखणे नू चादा मैंडा जी घरी घरी ।
मन मुस्ताक हुवा महबूवा
नजर निजाकत खुसबोह भरी ।। १*

राग – बहार
ताल – इकौ

आई बहार कुसुम व्रद स्वेत हरे लाल
वर वरन बनि मानिक छबि हीर पना मोती खान
काम के बसत मित दीनी मानौ नजर जाके ।
मधुर सबद करत नए
रस मई व्र द मिल
पछी ते मनोज विद्या-सालन मे बाल प्रढै
रतिया औ द्यौस जाग सोभा विहालै ।। १

राग – बहार
ताल – इकौ

नवेली वसत
नए द्रुम वेल तहा रही खेल
परिभ्रत कजन वेलै भ्रमर झक्रत ।

---

[1] हो' नहीं ग । [2] लाला ग । *आदर्श प्रति मे नहीं ।

नए भय धेसू
गुल पुग्ल धेसर
नयो ही पराग
हरषो मलयाचल भयो रसराज
जहां सोहैं झन झनै पंछी
सज के राधाकंत महार गावत ॥ १

राग – बहार
ताल – इकी

पिया नइ कलियन नयो रस मत ल हो मोरे
वारी वारी रैन कूं जाय कें।
धारिन में रसक जागत वेरो
मो सरीर चुभ हैं कटया लाग लाग ॥ १

राग – बहार
ताल – इकी

वसंत मनावो' आला
पू सज के चल आई है घर लाडली सिहारे
सारी हु सहेली साथ गडवा नयी लीनें हाथ
हरी हरो बिच उवाके डार और फूल झार' ॥ १
आई है भेट मधन के मोरन को मुकट और
केसुन के फूलन के कुंडल छबि भारे।
मधुर कोयल बोलन रसराज सो रिझावन कूं
रही है गाय रस भई छबि छाइ तो नई बहारें ॥ २

राग – बहार
ताल – इकी

बहार आई राधे
उठ कें सज री सिंगार सोच में क्यूं सूती।

---

बधावो।   झारे ब ब ।

सांवरी आयी देख साभ
अवसही रसराज आज।
तुही तुही सी धुन
कर कर बोल उठी तूतो ॥ १

राग – वहार
ताल – जलद तितालो

वहार[1] मे आयी हे मा
आज[2] नवल-किसोरी जो री नाह।
केसू रग मे पाग[3] रगी है
दुपटै चदनियै उवाह ॥ १
कमल[4]-वदन फूल्यी अलवेली
भौंह[5]-भ्रमरन की सराह।
अवराई सी आस फली है
देखत देखत राह ॥ २

राग – वहार
ताल – जलद तितालो

आई वसत सकल वन बाग फूल हे
कुहक कोयलिया सरस बोलै।
भ्रमर भ्रमत भक्रत रस भोने
समीर सुगध बहत भोलै ॥ १
सुक सारचौं बोलत रसमाते
उनमन[6] भए मदन रग चोलै[7]।
राधा-मोहन रसराज जहा मिल
मिल गलबहिया खेलै डोलैं ॥ २

---

[1] आज वहार। [2] 'आज' नही। [3] पाघ। [4] कमल। [5] भौंह ख ग। [6] उनमनि ख उनमल ग.। [7] भोलै।

नए भव केसू
गुल पुरस केसर
नयो ही पराग
हरयौ मलयाचल भयौ रसराज
जहां सोहैं झन झनै पंछी
सज के राधाकंत बहार गावत ।। १

राग – बहार
ताल – इको

पिया नइ कलियन नयी रस मत ल हो मोरे
वारी वारी रैन कूं जाय कैं ।
वारिन में रक्षक जागत वैरी
मी सरीर चुभ हैं कटया लाग लाग ।। १

राग – बहार
ताल – इको

वसंत मनावो' लाला
जू सज के चल भाई है घर लाडसी तिहारै
सारी ह सहेली साथ गडवा नयौ लीनें हाथ
हरी हरो बिच उवाकें डार भौर फूल झारै ।। १
लाई है भेट अंबन क मोरन की मुकट भोर
केसुन के फूलन के कुंडल छबि भारै ।
मधुर कोयल बोलन रसराज तो रिझावन कूं
रही है गाय रस मई छबि छाइ तो नई बहारैं ।। २

राग – बहार
ताल – इको

बहार आई राधे
उठ कें सज री सिंगार सोच में क्यूं सूती ।

---

बनावो । वारै च न ।

सावरौ आयौ देख साझ
अवसही रसराज आज ।
तुही तुही सी धुन
कर कर बोल उठी तूतो ॥ १

राग – बहार
ताल – जलद तितालौ

बहार[1] मे आयौ हे मा
आज[2] नवल-किसोरी जो रौ नाह ।
केसू रंग मे पाग[3] रगी है
दुपटै चदनियै उवाह ॥ १
कमल[4] - वदन फूल्यौ अलबेलौ
भौंह[5] - भ्रमरन की सराह ।
अब्रराई सी आस फली है
देखत देखत राह ॥ २

राग – बहार
ताल – जलद तितालौ

आई वसत सकल वन बाग फूल हे
कुहक कोयलिया सरस बोलै ।
भ्रमर भ्रमत झकत रस भीने
समीर सुगध बहत झोलै ॥ १
सुक सारचौं बोलत रसमाते
उनमन[6] भए मदन रग चौलै[7] ।
राधा-मोहन रसराज जहा मिल
मिल गलबहिया खेलै डोलैं ॥ २

---

[1]आज बहार । [2]'आज' नही । [3]पाघ । [4]कवल । [5]भोह ख ग । [6]उनमनि ख उनमल ग. । [7]झोलैं ।

राग – बहार

ताल – जलद तिताली

कलियाँ चटक नई नई रस सी भरीली फूलत मा

फूलत बेल विरछ मालती माधवी

लह लहे कुंज कुंज विकस

त्यों सिरूज रहे गुंज भवरे

क्यारी केसरिया बिरवा

दिन दुपहरिया फूले ।

चंदन चंबेली चंपा

मधुधवा' महदिया नवगुंजा

मचका केसु कदम कुंद नागबेल चंद्रकन्या अरचुरी हसती

कचनार

तैसें गुलतुररे गुलमूरत सेवती

प्रति डारन सुक बोलत सरसे

परिभ्रत धुन पपियन' सुन दपत'

हरख निहार

रसराज सारो सखियाँ झुनाय हो प्यारी पिय मिस झूलीं ॥ १

राग – बहार

ताल – जलद तिताली

केसरिया सारो सीस ढरयो सूंभ कंचया छतियाँ हो लाल रंग लहँगो पहरयो

तैसो फूल गूंथ सोधे भीने साज सारे सारे वार सवार भारो

सीसफूल मणिमाल बिंदनिया मुकतामाल विसाल

कजरारी दग पहर नथनिया चमचत चुरियाँ लाल

रर चरान प सुरग महन्दिया पगया रमण निर्गुंज चली है

सब ब्रज-नारी पिया सों प्यारी ॥ १

---

मधुरता । चर्चित । 'दर्पि ।

राग – बहार

ताल – जलद तितालो

कोकिल मोर चकोर बोलै कुजन
चकवै मिल कीर कुमरी[1]।
अगन चंडूल त्यौं जरी तुररे
एक साथ सब ककनस पपऐ[2]।
आयो रितुराज तामै भवरा-भवरी ॥ १

राग – बहार

ताल – जलद तितालो

कोयलिँया कुहक रही इक सार
सखि[3] अबवा की डार।
मजर सौं मिलती अलबेली
कलिया सू करतो प्यार ॥ १
फल चाखती पत्र परसती
निरखती त्यौं फूल बहार।
रमती बन पिय[4] कौ रस लेती
रसराती रिझवार ॥ २

राग – बहार

ताल – जलद तितालो

परिभ्रत बोलै आली
सघन अबन की डार नवेली
पिछली रात रहै[5] रहै प्यारी।
फूल झरै और चटकै कलिया
खटकै अर हठ पनरी[6]।
त्यो हरे खेत दिस दिस मलिया[7] पुकारै ॥ १

---

[1]कूमरी। [2]पए। [3]सखी। [4]पिया। [5]है ग। [6]पनडी। [7]मिलिया पुकारै आली।

राग – बहार

ताल – धमार तिताली

लंगरवा खेलौ फाग चलौ मधुवन कूं
जमुना पैं कुंज कुंज कलियां चटकें
भंवरे गुंज गुंज डोलैं
सब संग गहरौ सोंधा नीर अबीर लैलौ ।
मंजरीन की मुकट सुमार, कुंडल फूलवन केरे
पंखुरीन की चौसर में पहरू, किसलौ कंचुवा मेरे करौ अबीर
परागन की पिय
परिमल अंस मकरंद वस[1] रस खिर झेलौ अकेले दोऊ ॥ १

राग – बहार

ताल – धीमी तिताली

बादरवा आए[2] आय झुके घन पपय्या पुरवाया
मंद बूंद बरस मेहा चालौ सीत पौन कारे पीर स्वेत
सोहै अ गी अंधेरी राती ॥ १

राग – बहार

ताल – धमार तिताली

ससि[6] फूलवारी सोहै
सुरंग केसरिया रंग रंग की
पियरी स्वेत हरी सुखकारी ।
मालती माधवी चंदन चंबेली
स्वर्न[7] जूही सहकारे ।
केतकी कुंद चहुं दिस
मदम केसर[8] की क्यारी ॥ १

---

[1]बहीं म । [2]बरती । [3]मामे । पपईमा । बरसै दा म । [6]सखी । [7]स्वरन । दिद दिस । [8]केसरि ।

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

हरे द्रुम हरी लता हरे चीर भूपन हु
हरे हरे[1] बन मे मिल्यौ हर।
उवेसैही सिंगार राधा ग्रापस मे हेरे[2]
पावै नही लाग्यौ ग्रानद भर ।। १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

वसत खेलै री ब्रुजजन निकुज मिले
जुवति-जन[3] सग मे सुख फाग समै[4]
जहा होत नूपर का झन झन झमक
मुख तान तरग नवेली।
केसर उडत ग्रबीर कपूर चदन
नीर फूल[5] बन गेंद झूलत हिंडोली
यू रसाल कै त्रीया[6] मोहन कै सग
रगी समै बहार कै सुहेली ।। १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

समीर चालौ री,
दिस दिस सुगध भरचौ
कोयल बोल त्यू ग्रलिव्रद वन भ्रमै
नवीनै सुकलियै उडत मुख कुसुम केसू रगीलो।
बोलत मधुर ग्रनेक विहग नई नई डार पर रस बोल
यौ रसराज
सदा बन्यौ सुख रहे सुन सुन छक छक ग्रैसो बहार
कै प्यालै ।। १

---

[1]हरे ख ग। [2]हरे। [3]जुवतिन ख ग। [4]'समै' नहीं। [5]कुल। [6]त्रिया।

राग – बहार
ताल – चमत्र तिताली

कलियाँ चटक नई नई रस सी भरीली फूलत मा
फूलत बेल विरछ मालती माधवी
महू लहे कुंज कुंज विकस
त्यों सिरूज रहे गुंज भवरे
क्यारी केसरिया बिरखा
दिन दुपहरिया फूलै ।
चंदन चबेली चंपा
मधुमवा¹ महदिया नवगुआ
मबवा केसु कदम कुंद नागबेल चद्रकन्या सरजुरी हसंती
कचनार
सैसे गुलतुररे गुलसुरख सेवती
प्रसि बारन सुक बोलत सरसे
परिभत धुन पपियन² सुन दंपत³
हरख निहार
रसराज सारो सखियां झुलाय हो प्यारी पिय मिल झूलैं ॥ १

राग – बहार
ताल – चमत्र तिताली

केसरिया सारो सीस हरयो कुच कंचवा छतियां हो लाल रंग लहंगो
पहरयो

बैंनी फूल गूंथ सोभे भीने भाज कारे कारे बार सवार भारी
सीसफूल मणिमाल बिंदलिया मुकतामाल विसाल
कठसरी दस पहर मचनियां चमकत चूरियां लाल
कर चरनम पें सुरख महदिया पगवा रमण निकुंज चली है
सब व्रज-नारी पिया सों प्यारी ॥ १

---

¹मधुमुवा । ²चर्चन । ³दंपति ।

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

कोकिल मोर चकोर बोलै कुजन
चकवै मिल कीर कुमरी[1]।
अगन चंडूल त्यौ जरी तुररे
एक साथ सब ककनस पपऐ[2]।
आयौ रितुराज तामि भवरा-भवरी ॥ १

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

कोयलिँया कुहक रही इक सार
सखि[3] अवबा की डार।
मजर सौ मिलती अलबेली
कलिया सू करतौ प्यार ॥ १
फल चाखती पत्र परसतौ
निरखनी त्यौ फूल बहार।
रमती वन पिय[4] कौ रस लेती
रसराती रिझवार ॥ २

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

परिभ्रत बोलै आली
सघन अबन की डार नवेली
पिछली रात रहै[5] रहै प्यारी।
फूल झरै अौर चटकै कलिया
खटकै अर हठ पनरी[6]।
त्यो हरे खेत दिस दिस मलिया[7] पुकारै ॥ १

[1]कुमरी। [2]पए। [3]सखी। [4]पिया। [5]है म। [6]पनडी। [7]सिलिया पुकारै आली।

राग – बहार

ताल – बसन्त तिताली

लंगरवा खेलौ फाग चलौ मधुवन कूं
जमुना पें कुंज कुच कलियां चटकें
भंवरे गुंज गुंज डोलें
तस सग गहरौ सौंधा नीर अबीर लेलौ ।
मंजरीन कौ मुकट तुमारें, कुडल फूलवन केरे
पसुरीन कौ चोसर में पहरू, फिसलौ कचुवा मेरे करौ अबीर
परागन कौ पिय
परिमल अस मकरद वस[१] रस खिर झेलौ अकेले दोऊ ॥ १

राग – बहार

ताल – धीमी तिताली

बादरवा आए आय झुके घन पपय्या[२] मुरवामा
मद बूंद वरस मह्ना चाले सीत पौन कारे पीर स्वेत
सोहे अंगी अधेरी राती ॥ १

राग – बहार

ताल – बसन्त तिताली

सखि[३] फूलवारी सोहे
सुरस केसरिया रग रग की
पियरो स्वेत हरी सुखकारी ।
मालती माधवी चदन चंबेली
स्वर्न[४] जूही सहकारें ।
केतकी कुद बहु दिस
कदम केसर[५] की क्यारी ॥ १

---

बहीं न । [१]बसती । भाये । [२]पपईया । बरसे घ य । [३]सखी । [४]स्वरन । दिस दिस । केसरि ।

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

हरे द्रुम हरी लता हरे चीर भूषन हु
हरे हरे[1] बन मे मिल्यौ हर।
उवेसेही सिंगार राधा आपस मे हेरे[2]
पावै नही लाग्यौ आनद झर ।। १

राग – बहार

ताल – त्यौरो

वसत खेलै री व्रुजजन निकुज मिले
जुवति-जन[3] सग मे सुख फाग समै[4]
जहा होत नूपर का झन झन झमक
मुख तान तरग नवेली।
केसर उडत अबीर कपूर चदन
नीर फूल[5] बन गेंद झूलत हिंडोली
यू रसाल कै त्रीया[6] मोहन कै सग
रगी समै बहार कै सुहेली ।। १

राग – बहार

ताल – त्यौरो

समीर चाली री,
दिस दिस सुगध भर्यौ
कोयल बोल त्यू अलिव्रद बन भ्रमै
नवीने सुकलियै उडत सुख कुसुम केसू रगीले।
बोलत मधुर अनेक विहग नई नई डार पर रस बोल
यौ रसराज
सदा बन्यौ सुख रहे सुन सुन छक छक असौ बहार
कै प्यालै ।। १

---

[1]हरे ख ग। [2]हरे। [3]जुवतिन ख ग। [4]'समै' नहीं। [5]फुल। [6]त्रिया।

राग – बहार
ताल – त्यौरो

ससक सोहैं री,
ससि नव प्रकास भरयौ
सरवर मैसे ही नव नदी जल भरे सुहावैं
तहां फूले कंवल भौर कुमुद मुनि मन मोहैं
चालत उडत पराग सुगंध श्रवत हैं
सोग झर मकरद त्यौं कलहस रमैं
भति भ्रमैं कंजन में बहार को समै
सुख भरयौ बन्यो है ॥ १

राग – बहार
ताल – धीमी तिताली

बहार भाज भाई छै जी पना राजकंवार।
कंमळ वदन सेवै छ सुदर
नन भंवर झकार।
मेसू फूल पाघ केसरिया
भव मोर पट पीत सवार ॥ १

राग – बहार
ताल – धीमी तिताली

हेरी मा भाज कोयलिया बोलै
भंमरदन की डारन पर भा।
भभ्रत धाम सैं भीर पडत हैं
जुवती जन घर घर मे भानंद सौं
साजी सिंगार सवारन पर
पनी पूली भमारन पर ॥ १
बसत पदायम भाय छकी रस
रमीलाराज रिझयारन पर ॥ २

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

हरे द्रुम हरी लता हरे चीर भूपन हु
हरे हरे[1] बन मे मिल्यौ हर।
उवैसैही सिंगार राधा आपस मे हेरे[2]
पावै नही लाग्यौ आनद झर॥ १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

बसत खेलै री जुवजन निकुज मिले
जुवति-जन[3] सग मे सुख फाग समै[4]
जहा होत नूपर का झन झन झमक
मुख तान तरग नवेली।
केसर उडत अबीर कपूर चदन
नीर फूल[5] बन गेंद झूलत हिंडोलै
यू रसाल कै त्रीया[6] मोहन कै सग
रगी समै बहार कै सुहेलो॥ १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

समीर चालौ री,
दिस दिस सुगध भरचौ
कोयल बोल त्यू अलिव्रद वन भ्रमै
नवीने सुकलियै उडत मुख कुसुम केसू रगीलो।
बोलत मधुर अनेक विहग नई नई डार पर रस बोल
यौं रसराज
सदा बन्यौ सुख रहे सुन सुन छक छक असो बहार
कै प्यालै॥ १

---

[1]हरे ख ग। [2]हरे। [3]जुवतिन ख ग। [4]'समै' नहीं। [5]कुल। [6]त्रिया।

राग – बहार
ताल – रूपैरे

ससक सोहें री,
सखि नव प्रकास भरचो
सरवर बसे ही नद नदी जल भरे सुहावें
तहां फूल कंवल और कुमुद मुनि मन मोहें
चालत उड़त पराग सुगंध अवस हैं
लोग भर मकरंद त्यों भसहस रमें
भरि भ्रमें कजन में बहार को समें
सुख भरची बन्यो है ॥ १

राग – बहार
ताल – धीमो तितालो

बहार आज आई छै जी पना राजकमार।
कंवळ बदन सेव छ सुंदर
नन भंवर झकार।
केसू फूल पाग केसरिया
अव मोर पट पीत सवार ॥ १

राग – बहार
ताल – धीमो तितालो

हेरी मा आज कोयलिया बोलै
अबराइन की डारन पर मा।
अम्रत बान तें कीर पढ़त हैं
जुवती जन घर घर मे आनद सों
मागी सिंगार सवारन पर
फूली फूली अनारन पर ॥ १
बसंत बदावन आव छकी रस
रसीलाराज रिझवारन पर ॥ २

राग – बहार
ताल – धीमो तितालो

उदै भयौ ससि आलो ताकी साझ समै छूट चलंती किरणै
च्यारौ[1] ओर मै हु कैसी सोहै ।
लस[2] रही रस मे भरी रतिया
वन वन चकोर चकवन कौ सोर
गल पहरै हार कर गडवा जहा लियै,
जुवती जन रसराज मिलत जुव जन को मन मोहै ।। १

राग – बहार
ताल – धीमो तितालो

राधे मिल चली है सघन निकुज ता मे उमग सौ ।
मिल्यौ प्यारौ कान छानै गळबहिया लाऊ[3]
उड उड दीनी बतलाय विहग ।। १

राग – भटीयार
ताल – धीमा तितालो

निजरा[4] तेंडी रग दी सावळवे मैंनू बी रगी
साथ तुसाडे नू छाड न सक दी घडी वे ।
माल मकान दी परवा नदारद
आगै सुहाणे दे आकै खडी वे ।। १

राग – भटीयार
ताल – धीमो तितालो

एतो सईया छैला छै
ए छैला बाला बाका
बाका अलबेला अलबेला[5] ।
ना घणौ नही घणौ दिल या मे
रसराज नही छै अकेला ।। १

---

[1]च्यारू । [2]ल रही रसीली रतिया । [3]ला । [4]निजरयां । [5]'अलबेला' नहीं ।

राग – भैरवी

ताल – मागो तितालो

वन वन बोल कोयल मंजुवा की डारी है मा।
आईलो वसत सरस केसरिया
पिऊ आयो नां री॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इकी

मारू बिलमा[1] सियो[2] है कामणगारी
किसो सरो सूं रसराज पीयारो[3]
दिल रौ भांटो सुळजाय लियो है॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इको[4]

सिधाय[5] चाकरी वासो राज।
काई नै करां म्हे उपाव सहेली
कोई राखे सेण आज॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इकी

कलाळी तै मैंनूं मदवा पिलाय।
मोहर तोल गुल सुरख केसर का
भर भर प्याले लाय[6]॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इकी[7]

न्याज[1] भरी नाओ मा दिखलाई वे मैंनूं मेरी ज्यांम

---

[1]ताल–इकी ख व। [1]भाव। [2]मयी। [3]पियारा री। [4]'रौ' नहीं प। [4]'रेखता इकी' नहीं। [5]'सिधावे चाकरी वासो राज' चरण नहीं। [6]रेखता इकी नहीं ख ताल इकी प। [6]लाय। [7]रेखता ताल में ख ताल–इकी प। [1]भाव। [1]ना बोर।

दिल तरसता है मेरा
इतना तै क्या करतो गुमान ।
जलती है चिराक तेरे इस्क की
दिल मे हजार वेस तामे[1]
रसराज तेरा हुसन है[2] की बागबहार ।। १

राग – भैरवी
ताल – इकौ रेखता इकौ[3]

मुखडा ए महबूब तेरा दिसदाणी विच सावरे नुकाब[4]
सोहता री क्या खूब सावन के बदलै में मानू महताब ।
मारा है बिन खून मुसाफर, तीर से नैन चला सताब
सो मुजै रसराज बता[5], साहब कू क्या देगी जवाब ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

कन्हईया काहे कु लगाई मोसौं[6] प्रीत ।
प्रीत लगाकर मिलन न करही
सावरे रग की रीत ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

किही बिरमायौ तेरौ कान कन्हईया
झूठी[7] गवालन दोस लगाती ।
मोरै सग वदिया करत बन बन मे
सो मोरौ जानै सांईया गुसाईया[8] ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

मोरा खेलत मोती वेसर का

---

[1]ता । [2]ही ख 'है' नहीं ग । [3]रेखता चाल मे ख ताल–इकौ ग । [4]नकाब ख ग, । [5]बताय । [6]मोसूं । [7]झूठी री ग । [8]सु साईया ग ।

सोलक नौसर का
गिर गया है स्याम तोरो होरियां में ।
यों ही गुजरिया चोरी देत[1]
तोरा कचुवा समाल पला दावन का ।
कैसा अलोलक मौसर का
गिर गया नां गुजरिया मोरी होरियां में तोरा ॥ १

वसम[2] चुरावै महि मटकिया मानें
रतनन की इचरज को मानें
अब ही आय दाबा नद पें पुकारूंगी
एतौ आन दियें ही बनेंगी
उवैसा अमोल अलोलक मोरा
जात रहैंगा[3] चोरी होरियां में कैसें मोरा ॥ २

रतन झगामग नदराय घर
रूपा सोना की कबहु नहिं आदर
महीं समालै को तूं मतवारी
मोही कूं समाक्षम दे अगियां विहारी
अब ही लाय दूं याही वेर में
कहां जात है री मोरी होरियां में तोरा ॥ ३

देखी जू देखी गवामन, बोलै
काहै कुसंगरू मोरी छतियां खोल
यूं सुन कचवा समाल्यौ गुजरिया कौ
चित मै आयौ[4] सो कियौ हाल वाकौ
रसीलेराज[5] एलै रतन गेंद दो
लाय दिये है अमी मोरो होरियां में तोरा ॥ ४

---

[1] पू । देत है ब न । [2] बस । [3] इचर । [4] रहना । [*-*] इसके अंतर्गत का पाठ प प्रति में नहीं । [5] रसीला ।

दिल तरसता है मेरा
इतना तै क्या करतो गुमान ।
जलती है चिराक तेरे इस्क की
दिल मे हजार वेस तामे[1]
रसराज तेरा हुसन है[2] की बागबहार ।। १

राग – भैरवी
ताल – इकौ रेखता इकौ[3]

मुखडा ए महबूब तेरा दिसदाणी विच सावरे नुकाब[4]
सोहता री क्या खूब सावन के बदलै मे मानू महताब ।
मारा है बिन खून मुसाफर, तीर से नैन चला सताब
सो मुजै रसराज बता[5], साहब कू क्या देगी जवाब ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालो

कन्हईया काहे कु लगाई मोसौ[6] प्रीत ।
प्रीत लगाकर मिलन न करही
सावरे रग की रीत ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालो

किही बिरमायौ तेरौ कान कन्हईया
झूठी[7] गवालन दोस लगाती ।
मोरै सग वदिया करत बन बन मे
सो मोरी जानै साईया गुसाईया[8] ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालो

मोरा खेलत मोती वेसर का

---

[1]ता । [2]ही ख 'है' नहीं ग । [3]रेखता चाल मे ख ताल–इकौ ग । [4]नकाब ख ग, । [5]बताय । [6]मोसू । [7]झूठी री ग । [8]सु साईया ग ।

लोलक नौसर का
गिर गया है स्याम तोरी होरियां में।
यों ही गुजरिया चोरी देत[१]
तोरा कंचुवा समास पला दावन का।
कैसा भलोलक नौसर का
गिर गया नां गुजरिया मोरी होरियां में तोरा ॥ १

बसन[२] चुराय महि मटकिया मानें
रतनन को इकरख को मानें
अब ही जाय बाबा नद पें पुकारूंगी
एतो मान दियें ही बनेंगी
चवैसा भमोल भलोलक मोरा
जात रहैगा[३] तोरी होरियां में कैसे मोरा ॥ २

रतन भगामग नदराम घर
रूपा सोना को कबहु नहिं भादर
नहीं समाल जो तू मतवारी
मोही कू समालम द अंगियां तिहारी
अब ही लाय दूं माही वेर मैं
कहां जात है री मोरी होरियां में तोरा ॥ ३

देखो जू देखो गवासन बोले
काहे कुलगक मोरी छतियां खोले
यू सुन कंचवा समाल्यौ गुजरिया को
चित मै भायी[४] सो कियौ हाल वाको
रसीलेराज[५] एक रतन[६] गेंद दो
लाय दिये है अभी मोरी होरियां में तोरा ॥ ४

---

[१]यू। [२]देत हैं व प। [३]बच। [४]इबर। [५]रहूगा। [६-६]इसके अंतर्गत का पाठ प प्रति में नहीं। [७]रसीला।

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

वाकी[1] होरिया मे मै नहि जाऊ री अमा ।
आज गोकुल वरसाने गाव विच
जाझ मदलरा[2] वाजै[*] जुझाऊ[3] ।
कुल की वहुरिया वेसक होय खेलू
पचू मे कौन सौ सुजस कैसै पाऊ ।। १
करू काम तौ उवैसौ[4] ही करू मा
साग जैसौ ही नाच बनाऊं ।
रसोलेराज[5] नहि जाऊ अवस[6] ही
जाऊ तौ जोतही कै आऊ री अमा मोरी ।। २

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

सावरौ बुलावै तौ मै आऊ री ननदिया ।
सरम मरू व्रजगाव रै सोर पर
जुलम कियौ इन वस की वसरिया ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

सावरौ मोही दै गयौ ताना
ना जानू री[7] कर गयौ की वहाना ।
जो होय सौ रसराज होय अब
उसकै मिलनवा री अलबत जाना ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

चमकै चपा चीरा महबूबा ।
चद-सा मुखडा चमकै वे रसराज

---

[1]उवाकी ख ग । [2]मदिल रा । [*]वाजै रै ग । [3]जुझाऊ । [4]वैसौ । [5]रसीला ख ग ।
[6]अवस्य । [7]'री' नहीं ग ।

अग चस्म चूड़ा जूडा ।
छाप छल्ला और जेवर प्ररी
कंठ-सिरी दा' हीरा ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताली

जिद लगी वे सांवरी हूर में
रोज गुजर दे उसी मगरूर में ।
रसराज मिलस्यां जरूर में
टपे दी तान गरूर मे ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताल

"याम भरी परियूं दी मभर मियां
दीन जराई मओकसें ये ।
हासल हुई है ऊमेद दूर की
फजल इलाही क होती फजर मियां ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताली

भर[3] भर दे दी सराब दे प्याले
गिर गिर जांवा जिये गया पीडा ।
चसा जांदा रसराज मान में
इस घड़ी सी टप दी तान में ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताली

भलक्या सेस जे' हास पै
विनिमक रण के वो' गये ।

---

[1]तरीप पूरा बरस नहीं। इमाई। [3]भै। [4]मै बीरा ग ग। [5]मू सहियां ग घ।
[6]मर्ईयां स म।

चढ्या सिर चद ग्रानद सैं
वमै किरती के झूमक सैं[१]।
ऊजाली रैण सौहेणी
फिरस्ते[२] जाद मोहेणी ॥ १

चमकता था उवौ लस्करिया
की सिर पर चीरा* केसरिया।
चमकते नैण चगेणी
की सुरखैं रग रगेणी ॥ २

दुलहणी ज्यू सभा - रैनू[३]
की बुलबुल गेंद हजारैं नू।
वौपारी ज्यू इजारैं नू
मैं नैणा दे तिजारैं नू ॥ ३

रहा सारी रैण मुझ सग उवो
लगा गया दिल कु इक रग उवो।
रहा भरपूर नैंनू मे
न सक दी ग्राख बैंनू सैं ॥ ४

तरसती मीन पाणी नू
विरहणी ज्यान ज्यानी नू[४]।
चौमासै ज्यू वदँरा झुक दा
न ग्रासु नैण सै रुक दा ॥ ५

मिलावैं राझ नू कोई
जियावैं दोस्त उवो मोही।
पनादे[५] उसकी मे ग्राईयाणी
रसराज दी दुवाइयाणी[६] ॥ ६

---

[१]झुमकै सैं। [२]फरस्ते। *चीर ग। [३]रनू'। [४]'विरहणी ज्यान ज्यानी नू' चरण नही। [५]पना मै उसकी। [६]दूवायाणी।

अंग भस्म चूड़ा जूड़ा।
छाप छल्ला और जेवर जरी
कंठ-सिरी दा[१] हीरा ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धमार तिताली

जिंद लगी वे सांवरी हूर में
रोज गुजर दे उसी मधकूर में।
रसराज मिलस्यां जरूर में
टप्पे दी तान गरूर में॥ १

राग – भैरवी
ताल – धमार तिताल

ग्याज भरी परिमूं दी नजर मियां
दीन जराई मजोकसें वे।
हासल हुई है उमेद दूर की
फजल इलाही क होती फजर मियां॥ १

राग – भैरवी
ताल – धमार तिताली

भर भर द दी सराब दे प्याले
गिर गिर जांदा किथे गया जीड़ा।
चला जांदा रसराज प्रान में
इस घड़ी सी टप्पे दी तान में[४]॥ १

राग – भैरवी
ताल – धमार तिताली

ममक्या सेल ज[५] हास पै
कितियक रण क यो[६] गये।

---

[१]हीरा [२]पूरा चरण नहीं। [३]इलाई। [४]भै। [५]मैं बीडा रा म। [६]मृ. परियो म न।
पर्दो न न।

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

अनवेले चंपा चीर मे
विजळी सौ चमकै सरीर पियाजी[1] री
पिय री घटा की भीर मे ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

मारवणी आई महल में
सरद चद की चानणी सी* ।
पिय[2] मन री अधियारौ दूर गयौ
सुख सैजा री सैल मे ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

रमझम वदरिया वरसै
मेरो प्यारौ वसै परदेसन में ।
रळ रह्यौ क्यू अजना अखियान मे
पायल[3] क्यू वाज दी झमझम ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

केसरिया चीरा चमकेणी
अमा तुररा सोनेरी बालाणी ।
रसराज सज कर आया नी दुलहा
औरता दी ज्यान विच चमकै झमकेणी ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

गुलसन की लेती बहार परी
खरी हरी विच घरी घरी मे मिया ।

---

[1]पियारीजी । *'सी' नही ग । [2]पिया । [3]पायलडी ख ग ।

राग – भैरवी

ताल – चलत तिताली

मोही वे मैंडी हीर निमाणी
क्या किया तेर रांझण[1] न।
रसराज सो स्याणा सीया सयाणी
इस्क कारण हो रही वे दिवानी ॥ १

राग – भैरवी

ताल – चलत तिताली

या नबी इश्कदा की मामला
मेहरवान[2] पूछ दा तूं करीमा।
रसराज एक तीर खड़ी हीरां
एक तीर साई तख्त हजारे दा ॥ १

राग – भैरवी

ताल – चलत तिताली

वसजा चसमां दे बीच, नादाणिया वे।
रसराज हरानी विरह कर जा तूं वे[3]
नहीं दी नजरां स[4] सींच ॥ १

राग – भैरवी

ताल – चलत तिताली

सांवरा चसमां दे दरम्यान में
बस गया छैलड़ा मैंडडी ज्यान में।
ध्यान में बमड जुवान मैं रसजां
दिल[5] तो लगा है टप्पे दी तान में ॥ १

---

[1]रांझणो। [2]महरबान। [3]'मैं' नहीं ग। [4]नजरां वे च., निजरां सैं न। [5]चस्म
[6]रसराज री सब मया भैरवी री तान में ल म।

रसराज जेही समसेर दी धार धार
इस्क दी[1] लडाई में सावरा तू मैनू मत मार मार ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमौ तितालौ

लीलीया[2] मिलिया बागा दे वीच
जिथे[3] फूलिया बेलिया वे ।
रसराज कैसी बहार बणी
गुलाब से सोन[4] चबेलिया वे ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमौ तितालौ

हमला ज्वानी[5] रुकदा सावळ नाही वे ।
मिल दा नी क्यू रसराज
ऊमर नादानी दा कमला ॥ १

राग – भैरू
ताल – चौतालौ

एहो गुरु तैं मोरा जोसीया बताय मोहिकु[6]
उवो दिन कब मिल हैं प्यारौ नवल लाला ।
जब ते विदेस गयौ, तब ते है यो हाल
आतुर भई है सारी ब्रजबाला ॥ १

राग – भैरू
ताल – चौतालौ

स्रवन भनक परी एरी मेरी माई उवाही दिसन तें
जाही दिसकु खेलें कुवर[7] कान ।
गईया चरावैं बैन बजावैं
मन भरमावैं ले मधुर तान ॥ १

---

[1]इस्क की। [2]लियां। [3]जिथा ख जिथ ग । [4]सोवन। [5]ज्वानी दा ख ग । [6]मोकू। [7]कवर।

चम्मा लगा[1] रसराज स्यराव दा[2]
ईस्कदे[3] नेनूं से देस नदेसी ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तिताली

ढूंढ दी ढूंढ दी नी हीर निमांणी
रांझे दा मुकाम वे लोको।
वस्ता नी हेरी वारी वे जंगल भी हेरघा मेरा मियां
नहिं पाया वे विसरांम ॥ १

राग – भैरवी
ताल – जमद तिताली

तेरे वेखणे दी मनूं लाग वे मियां रांझा।
रसराज हीर निमाणी प्रांख दी
रन गुजारी केई जाग जाग ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तिताली

परियूं दे[4] नैन निआर दी
हवा चलदी रैंदी खुसबोही मियां।
होरे[5] हु भंवर चस्म प्रास्कां दे
गुल खिले दिल से हुरियूं दे ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तिताली

रमजां तेरी यार यार
दिल विच भगियां मेरे दिमदार स्यामा[6]।

---

[1]लगा पाठ। [2]सराव दा। [3]-[4]ईस्कदे पूरा चरण नहीं। [4]'परियूं दे नैन निआरें दी' नहीं।
[5]होरे पाठ। [6]प्रास्क म। से। [6]स्याणी

रसराज जेही समसेर दी धार धार
इस्क दी[1] लडाई में सावरा तू मैनू मत मार मार ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

लैलीया[2] मिलिया बागा दे वीच
जिथे[3] फूलिया बेलिया वे ।
रसराज कैसी बहार बणी
गुलाब से सोन[4] चबेलिया वे ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

हमला ज्वानी[5] रुकदा सावळ नाही वे ।
मिल दा नी क्यू रसराज
ऊमर नादानी दा कमला ।। १

राग – भैरू
ताल – चौतालो

एहो गुरु तैं मोरा जोसीया बताय मोहिकु[6]
उवो दिन कब मिल है प्यारौ नवल लाला ।
जब ते विदेस गयौ, तब ते है यो हाल
आतुर भई है सारी ब्रजबाला ।। १

राग – भैरू
ताल – चौतालो

स्रवन भनक परी एरी मेरी माई उवाही दिसन ते
जाही दिसकु खेलै कुवर[7] कान ।
गईया चरावै बैन बजावै
मन भरमावै लो मधुर तान ।। १

---

[1] इस्क की। [2] लियां। [3] जिया ख जिय ग। [4] सोवन। [5] ज्वानी दा ख ग। [6] मोकू। [7] कवर।

मोर मुगट कट काछनी बाछ
पीत पिछोरा उरसों छिब को निधान।
रसीलेराज जागिया की मिहरतें
गोकुल त्रियन के बस किए है प्रान ।। २*

राग – भैरू
ताल – जलद तितालो

कोकिल मोर चकोर मराल
बोलत हैं उपबन बन[1]।
सुक चातक चकवा[2] मिल सारस
मस्त भवर भमरीगन ।। १
मिहर रहे उन बन छबि छाके
देखत फूली बहार फूलें मन।
रसीलोराज सहेलिन के संग
लाडली राधा लियें ललन ।। २*

राग – भैरू
ताल – धीमी तितालो

रंग बरसत भयो।
रसराज भाज मिलत भये दंपत
नई दुलही दुलहन नयो ।। १

राग – भैरू
ताल – धीमी तितालो

तोसें मोरा जीरा लागा बिरहईया मोरे।
मैं तो सहयो न जावे बिरहा मोस।
रसीलाराज मोरा दरद न देखे तू तो
मैं तो तिरदई रई तिहारे भरोसे ।। १

---

*दूसरा पद नहीं क में। [1]बे ग। चकवी ग। *दूसरा पद नहीं क ग। यह गीत आदर्श प्रति में नहीं। [2]हंसो। यह गीत आदर्श प्रति में नहीं।

राग – मल्हार

ताल – गाठ चौतालौ

सोहनी वूद लागत है मोरी माई ।
ऊमड्यौ घन बिजली चमकत है
मुरवन धूम मचाई ॥ १

सीतल मद सुगध पवन उवै-सौ
हरे विरछन लता लपटाई ।
कुज भवन रसराज मिलन कू
पिय की जात बुलाई ॥ २

राग – मल्हार

ताल – चौतालौ

उमड ग्रायौ मेघ चहु दिस एरी राधे
सघन धार छूट ग्रवर छायौ है ।
सियरौ सुगध भर्‌यौ पवन बहैन[1] लाग्यौ
मुरवन त्यौ मिल सोर मचायौ है ॥ १

हरे द्रुमबेल रहे लपट लपट उवैसै
जल भरे ताल समै सबन सुहायौ है ।
ग्रायौ ग्राज रसराज पिया कू देख
ग्राज हो[2] ग्राखन कौ फल पायौ है ॥ २

राग – मल्हार

ताल – चौतालौ

उमड घुमड नभ चक्र कारे पियरे सुरग
सुकल धुम्र बादर ग्राए हैं चढ उवा पै लाला ।
तनत इद्रधनुस चमकै चपला त्यौ धारा छूटै
मारुत झकझोलत[3] द्रुम बेल माला ॥ १

---

[1]वहन ख । [2]'हो' नही ग । [3]झकझोरत ।

मुरव मल्हार गाव पपय्या मन भाव
बोरा सोहत बक-पत ऊडत, चहुदिस स्यौं मिसाला।
प्रतिदिन मग निरखत, घन ज्यौं चातक[1] प्यार
चालहु भय कप रही है ब्रजबाला[2] ॥ २

राग – मल्हार
ताल – चौताली

सियरौ पवन भारौ[3] हो कान्ह चहु दिस कूं
एतै माह सिहर उठत सुरस धुम्र कोर पियरे।
सुरधनु बनियत उडत बकपत
अविरल प्रबल परत सलिल धार।
परिभ्रत धुन मुरयन सुर सोहत धरनि
अबर देखत पावत सुख हो मैं हियर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – चलत तिताली

उमड आए री मा[4] बदरा
चमकन लागी बीज।
सब ही गोरी सज सज मिळ गावत
तरुणी खेलन तीज ॥ १
मै भी कहै तो जाऊ सासरिया
मोहि न करै जो तूं खोज।
रसराज राधा-कुंवर यूं चाली
सांवरे मिळन को रींझ ॥ २

राग – मल्हार
ताल – चलत तिताली

निमख न भूल्यौ री आवै
उन वेवरदी कौ नेहु।

---

चातक। प्रिय की आशा। भारथौ। 'एतै' ख ग। [4]'मा' नहीं।

राग – मल्हार

ताल – गांठ चौतालो

सोहनी बूद लागत है मोरी माई ।
ऊमड्यो घन बिजली चमकत है
मुरवन धूम मचाई ।। १

सीतल मद सुगध पवन उवै-सी
हरे बिरछन लता लपटाई ।
कुज भवन रसराज मिलन कू
पिय की जात बुलाई ।। २

राग – मल्हार

ताल – चौतालो

उमड आयो मेघ चहु दिस एरी राधे
सघन धार छूट अवर छायो है ।
सियरौ सुगध भरयौ पवन वहैन[1] लाग्यौ
मुरवन त्यौं मिल सोर मचायो है ।। १
हरे द्रुमबेल रहे लपट लपट उवैसे
जल भरे ताल समै सवन सुहायौ है ।
आयौ आज रसराज पिया कू देख
आज हो[2] आखन को फल पायो है ।। २

राग – मल्हार

ताल – चौतालो

उमड घुमड नभ चक्र कारे पियरे सुरग
सुकल धुम्र वादर आए है चढ उवा पै लाला ।
तनत इद्रधनुस चमकै चपला त्यौ धारा छूटै
मारुत झकझोलत[3] द्रुम वेल माला ।। १

---

[1] वहन ख । [2] 'हो' नही ग । [3] झकझोरत ।

मोर मुगट कट काछनी काछ
पीत पिछोरा उबेसो छिब को निधान।
रसीलेराज जोगिया की मिहरसें
गोकुल त्रियन के बस किए है प्रान ॥ २*

राग – भैरू
ताल – जमद तितालो

कोकिल मोर चकोर मराल
बोलत हैं उपवन वन[1]।
सुक चातक चकया[2] मिल सारस
मत्त भंवर भमरीगन ॥ १
विहर रहे उन वन छवि छाके
देखत फूली बहार फूल मन।
रसीलाराज सहेलिन के संग
लाडली राधा लियें मसन ॥ २*

राग – भैरू
ताल – धीमो तितालो

रग बरसत भयो।
रसराज आज मिलत भये वपत
नई दुलही दुलहन भयो ॥ १

राग – भैरू
ताल – धीमो तितालो

तोसें[3] मोरा जीरा लागा विरहईया मोरे।
मे तो सहयो न आवे विरहा मोस।
रसालाराज मोरा दरद न देख तूं सो
मैं तो निरखई रई विहार भरोस ॥ १

---

*दूसरा पद नहीं ख ग। [1] वै न। [2] चकवी ग। *दूसरा पद नहीं ख ग। [3] पीत मावर्ष प्रति मे नही। [3] ऐसो। यह पीत मावर्ष प्रति मे नही।

एक नेह दूजौ चढ आयौ
यौ सावन कौ मेह ।। १
तीसरौ विरह ऐसै है सजनी री
कैसे कहु जळ जावेगी देह ।
रसराज अब तौ जानत हु न दैगौ
सावरौ[1] सनेही मैंनू छेह ।। २

राग – मल्हार
ताल – जलद तितालौ

याही रितु मे लगी अमा
सावरै सनेही सु लगन ।
याकौ दरद करतार जानत है
कै जानत मेरौ मन ।। १
आयौ सावन अब तौ आवैगौ
कौल निभावैगौ कियौ है वचन ।
रसराज उवाकौ विरह-विख कैसौ
मीठौ अम्रत सौ मिळन ।। २

राग – मल्हार
ताल – धीमौ तितालौ

बालम रे मोरा सावरा नदकवर बर ।
जाकै वस तू भयौ अलबेला
ऐसी को मोही तै नागर ।। १
कौन ग्यान तै सीख्यौ सुघरमी
अपनी तजल बिना ही दोख पर
निठुर लगरवा तू पर घर जा
आक अहत अबा परहर ।। २

---

[1] सावरै ग ।

मुरव मल्हार गावे पपय्या मन भावे
मोल सोहत बग-पंत उड़त, चहुदिस स्यों सिखाला।
प्रतिदिन मग निरखत घन ज्यौ चातक[1] प्यार
चाहहु प्रय रूप रही है ब्रजबाला[1] ॥ २

राग – मल्हार
ताल – चौताली

सियरो पवन चलो[1] हा कान्ह चहु दिस फूं
एवं[1] मांह् सिहर उठत सुरस धुम्र कोर पियरे।
सुरधनु तनियत उड़त वकपत
अविरल प्रबल परत सलिल धार।
परिमल धुन मुरवन सुर सोहत धरनि
अवर देखत पावत सुख हों में हियर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – जलद तिताली

उमड़ आए री मा[1] बदरा
चमकन लागी बीज।
सब ही गोरी सज सज मिल गावत
तरुणो खेलन तीज ॥ १
मैं भी कहै तो जाऊ सासरिया
मोहि न कर जो तूं खोज।
रसराज राधा-कुंवर यूं चाली
सांवर मिलन की रीझ ॥ २

राग – मल्हार
ताल – जलद तिताली

निमग न भूल्यों री जावे
उन बेदरदी को नेह।

---

चातक। ब्रिज की बाला। [1] चलती। एवं पर। [1] मां नहीं।

या अलबेले सुखद समै मे
रसीलेराज[1] पिय पाये ॥ २

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

मोर बोलन लागे पपीहरा ।
सावन मे मनभावन बी[2] नही
सारी रैन के जागे ॥ १

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

स्याम हिंडौरै भूलै
संग किसोरीजी कै ।
सघन कुज चपा श्रौ[3] चबेली
जहा द्रुम वेली फूलै ॥ १
रतन जटित[3] पटरो कचनमय
रग रग की गूथी मखतूलै ।
°सखी सुहागन देत भूलाना
या छिब निमख न भूलै° ॥ २

राग – गौड मल्हार
ताल – गाठ चौतालौ

कन्हईया[4] आयौ मेघ उमड सिर मोरै हो ।
लागहु गळ रसराज डरत मे
आज कियो[5] सिरजोरै ॥ १

राग – गौड मल्हार
ताल – गाठ चौतालौ

हो कन्हइया, बंहिया मेल मिल मिली द्रुम वेली हो ।

---

[1]रसीलाराज ग । [2]विन ही ग । [3]श्रौर ग । [3] °-°इसके अतर्गत का पाठ ग मे नहीं । [4]'कन्हईया' आदि मे नही है, अपितु 'सिर मोरे हो कन्हइया है । [5]कौ यौ ।

राग – मल्हार
ताल – धीमो तिताला

हो हर हर हर हर महादेव घन ह्व गगाधर ।
जग पर बरसन आयो ।
सकल सरूपी धारा छूट कर
पवन नाथ को चलायो सकल आनद कर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – धमद तिताला

आज धन भाग मोरे
नटनायक घर आयो ।
सुभ दिन सुभ रजनी सजनी री
मोतियन म्हे[१] बरसायो ॥ १

राग मल्हार
ताल – होरी री

आज रग लाग रह्यो स्याम सुंदर के द्वार ।
नवल कुंवर वृषभान-नदिनी
सज आई है सिंगार ॥ १

राग – मल्हार[३]
ताल – होरी री

उमड घुमड घन आये सहेली री
जग-जीवन मन भाये ।
देखत देखत कारे पियर[४]
सब दिग-मंडळ छाये ॥ १
बडी बडी बूद परत है सीतळ
मुरखा बोलत सबद सुहाये ।

---

हर ४ बार है ग । मेहू ग । राग-सोरठ मल्हार ताल-होरी और राग मल्हार ताल होरी घ । इस प्रकार पुनरावृत्ति हुई है । उमड-घुमड घ । [४]पियरे में ग ।

राग – मिया की मल्हार

ताल – होरी री

चमक माई बादर बिजरिया री
बोली कोयल बगवा मे कूक मचा।
गरजत बरसै सोहती
मही बूंद नाचे मिल[1] मोर ।। १

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

चालौ नै स्याम्राजी म्हारा मारू हो
मारवणी आई महैल[2] मे।
चानणी चौक मे सेज फूला री
मौहर तोळा री दारू हो ।। १
सग सहेल्या रै लागै जिण आगै
फिरता मे चद उतारू।
रसीलाराज देखण नै मिलण नै
बण-ठण नै था सारु हो ।। २

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

मारूडौ मारवी दोऊ चौसर खेले छै आज।
चद्र महैल[3] री अटारी की चानणी मे
सारी सहेल्या रै समाज ।। १
विच विच नौक-चौक री बतिया
नटता करता लाज।
बाज रही छै तीबा बाजणी
रग बण्यौ छै रसराज ।। २

---

[1]मिले। [2]महला। [3]महल।

राग – मल्हार
ताल – धीमो तितालो

हो हर हर हर हर[1] महादेव घन ह्व गंगाधर।
जग पर बरसन आयो।
सरस सरूपी धारा छूट कर
पवन नाद को चलायो सकल आनंद कर॥ १

राग – मल्हार
ताल – चमद तितालो

आज घन भाग मोरे
नटनायक घर आयो।
सुभ दिन सुभ रजनी सजनी री
मोतियन म्हे बरसायो॥ १

राग मल्हार
ताल – होरी री

आज रंग लाग रह्यो स्याम सुंदर क द्वार।
नवल कुंवर वृसभान-नंदिनी
सज आई है सिंगार॥ १

राग – मल्हार[2]
ताल – होरी री

उमंड घुमड घन आये सहेली री
जग-जीवन मन भाये।
देखत देखत कारे पियरे[3]
सब दिग-मंडळ छाये॥ १
बडी बडी बूंद परस है सीतळ
मुरवा बोलत सबद सुहाये।

---

[1]हर ४ बार है न मेहु म। [2]राग-सोरठ मल्हार, ताल-होरी और राग मल्हार ताल होरी न। इस प्रकार पुनरावृत्ति हुई है। उमड-घुमड न। [3]पियरे में न।

या अलवेले सुखद समै मे
रसीलेराज[1] पिय पाये ।। २

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

मोर बोलन लागे पपीहरा ।
सावन मे मनभावन वी[2] नही
सारी रैन के जागे ।। १

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

स्याम हिंडोरै भूलै
संग किसोरीजी कै ।
सघन कुज चपा औ[4] चबेली
जहा द्रुम वेली फूलै ।। १
रतन जटित[3] पटरो कचनमय
रग रग की गूथी मखतूलै ।
°सखी सुहागन देत भूलाना
या छिव निमख न भूलै° ।। २

राग – गौड मल्हार
ताल – गाठ चौतालौ

कन्हईया[4] आयौ मेघ उमड सिर मोरै हो ।
लागहु गळ रसराज डरत मे
आज कियौ[5] सिरजोरै ।। १

राग – गौड मल्हार
ताल – गांठ चौतालौ

हो कन्हइया, बंहिया मेल मिल मिली द्रुम वेली हो ।

---

[1]रसीलाराज ग । [2]विन ही ग । [4]और ग । [3] °-°इसके अतर्गत का पाठ ग मे नहीं । [4]'कन्हईया' आदि में नही है, अपितु 'सिर मोरे हो कन्हइया है । [5]कौ यौ ।

सावन में रसराज मांननी हु
मान सजत अलबेली ॥ १

राग – गौड़ मल्हार
ताल – चलद तितालो

चमकै छै चंगा केसरिया चीरा ।
तुररा सोनै री किलंगी चमकै
कंठसरी रा हार ॥ १
कानां सोहै मोती सिर सिर सोभा
दुपटा केसरिया जरी रा ।
रसराज घर आया सांवण में
म्हांरी वाली नणद रा वीरा ॥ २

राग – गौड मल्हार
ताल – चलद तितालो

झुक झूम झूम बदरा
बरसन लागे नांनी बूंदन से ।
रसराज पिया अजहु नहीं आए
बिरह लसा रह्या लूंम लूंम ॥ १

राग – गौड़ मल्हार
ताल – चलद तितालो

नवल बिहारीजी री देखो ए मा प्रीत ।
आंपां सुं और दूसरां और ही
ए पढ़या छ अनोखो नीत ॥ १
स्याता प्रीत बणावे बतीयां
पीछ दिखाव नादांनी अनीत ।
रसराज अब तो पिछांणियें एही
म्हो नायक की गीत ॥ २

---

का च न ।

राग – मिया की मल्हार

ताल – होरी री

चमक माई बादर विजरिया री
बोली कोयल बगवा मे कूक मचा।
गरजत वरसै सोहती
मही बूद नाचै मिल[1] मोर ॥ १

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

चालो नै स्याबाजी म्हारा मारू हो
मारवणी आई महैल[2] मे।
चानणी चौक मे सेज फूला री
मोहर तोळा रो दारू हो ॥ १
सग सहेल्या रै लागै जिण आगै
फिरता मे चद उतारू।
रसीलाराज देखण नै मिलण नै
वण-ठण नै था सारु हो ॥ २

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

मारुडो मारवो दोऊ चौसर खेलै छै आज।
चद्र महैल[3] री अटारी की चानणी मे
सारी सहेल्या रै समाज ॥ १
विच विच नौक-चौंक री वतिया
नटता करता लाज।
वाज रही छै तीबा वाजणी
रग बण्यो छै रसराज ॥ २

---

[1]मिले। [2]महला। [3]महल।

राग – माड
ताल – धीमी तिताली

सायधण साहूवो[1] दोऊं चौसर का रिझवार।
रतनमई पासा राज छ
सुंदर सोनें को सार॥ १
बाजी लाग रही छ आपस में
जामन सखी जिणवार।
इतर सुन[2] सवाय पियाजी
नटण न पावै पार[3]॥ २

राग – माड
ताल – होरी री

माड़ बिछड़ैलो प्रास
रयण सब बीतन लागो।
रे चंदा खट मास की कर दै
गोकळ सरद की ज्यू रात॥ १
भरीयारी हु धरी न बखा तूं
मन की मन में रह जावेली बात।
तीन पीहर रसराज भड़ी सा
रगीला बालम रो साथ॥ २

राग – माड
ताल – होरी री

कुंज भवन की रतियां
बिसारो बिसर नही धामी।
फूले चपक कुम चंबेली
मौर बहु बिरछन सखियां॥ १

---

[1] साजनी। [2] सुन। [3] हार।

राग – मिया की मल्हार

ताल – होरी री

चमक माई बादर बिजरिया री
बोली कोयल बगवा में कूक मचा।
गरजत बरसै सोहती
मही बूंद नाचे मिल[1] मोर ॥ १

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

चाली नै स्याबाजी म्हारा मारू हो
मारवणी आई महैल[2] मे।
चानणी चौक मे सेज फूला री
मौहर तोळा री दारू हो ॥ १
सग सहेल्या रै लागै जिण आगै
किरता मे चद उतारू।
रसीलाराज देखण नै मिलण नै
बण-ठण नै था सारु हो ॥ २

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

मारूडी मारवी दोऊ चौसर खेलै छै आज।
चद्र महैल[3] री अटारी की चानणी मे
सारी सहेल्या रै समाज ॥ १
बिच बिच नौक-चौंक री बतिया
नटता करता लाज।
बाज रही छै तीबा बाजणी
रग बण्यौ छै रसराज ॥ २

---

[1]मिले। [2]महला। [3]महल।

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

सायधण साहबो[1] दोऊं चौसर का रिमझवार।

रतनमई पासा राज छ

सुवर सोने की सार ।। १

बाजी लाग रही छ प्रापस में

ग्रामन सखी जिणवार।

इतर सुन[2] सबाय पियाजी

नटण न पावै पार[3] ।। २

राग – मारू

ताल – होरी री

मारू बिछड़ेलो प्रात

रयण प्रब बीतन लागी।

रे चंदा खट मास की कर दे

गोकळ सरद की ज्यूं रात ।। १

घरीयारी हूं घरी न बजा तूं

मन की मन में रह् जावेली बात।

तीन पोहर रसराज घड़ी सा

रंगीला बालम री साथ ।। २

राग – मारू

ताल – होरी री

कुंज भवन की रतियां

बिसारी बिसरे नहीं ग्रासी।

फूले चंपक फूल चमेली

और बहु बिरछन पतियां ।। १

---

[1] सायबो । [2] सुन । [3] पार ।

मोहन चन्द्र मुख सौं[1] मैं सुनी जे
अम्रत प्रीतरस भरी बतिया।
लाग मिली जे रसराज सावरै
छैल छबीलैं - सौं[2] छतिया ॥ २

राग – मालकोस
ताल – जलद तितालौ

आई री बहार नव्यौ रग ल्याई माई।
बिनु ही बदरिय्या कै बरसत जळ
भूम बेलरियन उ च्छाई[3] ॥ १
पुस्प परागन की अधिय्यारी
मुरवन - सी पिक धुन सरसाई।
लेहै बुलाय कनाई ॥ २

राग – मालकोस
ताल – जलद तितालौ

निजारे नाल मोही राझण वालिया।
जग सयालै छोडी जागीरी स्यहर हजारै[4] दै ईजारे ॥ १

राग – माझ
ताल – इकौ

आलीजा रिझवार छो जी म्हारा सायबा।
नैणा रा लोभी पनाजी राजगहेला मारू
साईना सिरदार सजदार[5] ॥ १

राग – माझ
ताल – इकौ

कोई सेण मनावै
म्हासू मारूजी रूठडा जावै रे।
रसराज काई जाणा कुण भरमावै
म्हे किस भांत मनावा बिलमावा जी ॥ १

---

[1]मुख सोम। [2]सू ख सा ग.। [3]'छ' यहीं ख ग। [4]'हजारै' नहीं ग। [5]'सजदार' नही।

बाबल छोडावा री वेग्रमानी छोडी वे मीया
सब से गई तोसें जोरी ।। १

राग – मांझ
ताल – इकौ

राझे दी सूरती भूल दी नहीया[1] वे लोका[2] मे ।
लोक न जाणे उत्रारी वे
केहा बेदरदी वे मीया
अजब इलाही कुदरती ।। १

राग – मांझ
ताल – जलद तितालौ

छोडौ छोडौ बालम हाथ राज
नाजक बहिया उभट जायली म्हारी ।
बेसर डाड बाक पडी श्रौर
सालूडौ रह्यौ छै मुरझाय राज ।। १

राग – मांझ
ताल – जलद तितालौ

नणदल गवरल रौ थौ आयौ छै सुहाणौ तिंवार ।
सात सहेल्या मिलकर द्यौ नै
सावळडी नै सिणगार ।। १
सीसफूल बाजूबध सवारौ
गजरा चौसर हार ।
रसराज इण तूठा[3] घर आसी
आलीजा रिझवार ।। २

राग – मांझ
ताल – जलद तितालौ

भीजै भीजै चुनडी सुरग राज
केसर अंगीया रग चुवै[4] म्हारी ।

---

[1]नईया । [2]लोकौ । [3]वूठा ग । [4]चुवै श्र ग ।

राग – मांझ
ताल – दर्को

गूघटड़ो मगझ कर छ मांहरा राज।
सामा दोय कदम घो साहबा[1]
मोछावर लायक छै ॥ १

राग – मांझ
ताल – दर्को

रस से बेलड़ियां री भवरां[2] रे।
या रित आवै छ वसंत दुहेली
रसराज नीकी नवेलड़ियां री ॥ १

राग – मांझ
ताल – दर्को

मेंथा आओ जी[3] सलांम म्हारी
नीले रा असवारां जी।
रसराज भलबेला नवेला सिरदारां थे
घोड़ो ती मह्लोली घो न नेणां रा रिझवारांजी ॥ १

राग – मांझ
१९ ताल – दर्को

जरी री तारो चमक छ
मूंगा बिच गोरियां ए[4]।
रसराज नथनी म्हैंघो[5] चमकै
हार चमकै नौसरी री प्यारी ॥ १

राग – मांझ
ताल – दर्की

तेरे माल जोराजोरी, चोरी नही वे मेरे लामा।

---

[1]साहबा। [2]भवरे। [3]'जी' नहीं थ। [4]'गोरियां ए जरी री तारी। जरी री तारी' आदि है न होकर पंठ में है। [5]महंगी।

बाबल छोडावा री वेग्रमानी छोडी वे मीया
सब से गई तोसं जोरी ।। १

राग – माझ
ताल – इको

रांझै दी सूरती भूल दी नहीया[1] वे लोकां[2] मे ।
लोक न जाणे उवारी वे
केहा बेदरदी वे मीया
अजब इलाही कुदरती ।। १

राग – मांझ
ताल – जलद तितालो

छोडो छोडो बालम हाथ राज
नाजक बहिया उझट जायली म्हारी ।
वेसर डांड बाक पडी ग्रौर
सालूडौ रहचौ छै मुरझाय राज ।। १

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

नणदल गवरल रौ यौ आयौ छै सुहाणौ तिवार ।
सात सहेल्या मिलकर द्यौ नै
सावळडी नै सिणगार ।। १
सीसफूल बाजूबध सवारौ
गजरा चौसर हार ।
रसराज इण तूठा[3] घर ग्रासी
ग्रालीजा रिझवार ।। २

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

भीजै भीजै चुनडी सुरग राज
केसर ग्रगीया रग चुवै[4] म्हारी ।

---

[1]नईया । [2]लोको । [3]वूठा ग । [4]चुवै ग्रै ग ।

फूल मार[1] जिन मारो मोहन
ऊमटे[2] छ नाजक मगराज ॥ १
किसी तरां सु पिचकार चलावो छो
वदन मिलावो छो सूको रग।
पीयारो[3] मणायो सिंगार उजाड़यो
रसराज थांरे परसग राज ॥ २

राग – मांझ
ताल – चमक तितालो

म्हांने भर दीजो ए कलाळी थगा दारूड़ा।
रसराज सांवळ बिछड़्या[4] पाया
म्हारे आया सो कोसां सू मारूड़ा दारूड़ा ॥ १

राग – मांझ
ताल – चमक तितालो

विरहा धूम मचाई तन मांय
कांई म्हे कियो छो थांरी वेर[5] हो।
असन बसन निद्रा हू भूली
भूली सब सुख री सेर ॥ १
गांव नगर जगळ सब हेरया
हेरी नद नदियां री मेर[6]।
कद मिळसी रसराज सांवळ वे
मन सग रह्यो उवारी लेर ॥ २

राग – मांझ
ताल – चमक तितालो

घड़ियां वासा सांवरा वे मेहदी ज्यांन।
रसराज मुस्ताक रदी जिदडी
टपे दी सुनाली मरही दान ॥ १

---

[1]मार। [2]ऊमटै छ। [3]पियारो। [4]बिछड़्या। [5]वैर। [6]मेर।

राग – माझ
ताल – जलद तितालौ

राझणा हस बोल निमाणा वे
अरज करा दी लख वेरी।
लाज की मारी बारी बोलन सक दी
इस्क दा मारी फिर दी ।। १

राग – माझ
ताल – जलद तितालौ

राझणै दी हजूर मेरा साईया वे
खडी तौ पुकार दी हीर।
जो तू मालिक[1] दिल मे रैंदा मीयां
निमख न रैंना दूर ।। १

राग – माझ
ताल – जलद तितालौ

सइया मेरी जिंदडी दा राझण[2] वाली नी।
जिंदडी दा[3] वालो राझा और राझे पर
साहब दी रखवाली नी ।। १

राग – माझ
ताल – जलद तितालौ

सावरा जिद हो रही कमली।
रसराज चिठीया भेजण सेतौ
नही होना यार तैसलो[4] ।। १

राग – माझ
ताल – जलद तितालौ

सावळ चलणा नी* चलणा वे
क्या कहुगी उस हीर नू।
लगन लगी उवारी[5] वे रसराज स्याणा मेरा
वेखणै तुसी दे विन नेणा नू कलना ।। १

---

[1] मालक। [2] राझणा। [3] जिंददा। [4] तसली। *'चलणा नी' नहीं ग। [5] बारी।

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

हो मेरी परिमू दी नजरां न्याज मरी ।
न्याज भरी रसराज जुवानो
माद रैंदी वाकी घरी घौ घरी ।। १

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

अब तो न आणा परदेस हो नवली रा बना ।
नैंण तो जोबन में सुरख होय रह्या छै
उळझ रया छे लया केस ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमी तिताली

छोटी सी नाजक मण रो मुजरो लीजो जो ।
रसराज नैंणा हो सूं गुघटड़ा मैं
मारू चगा मोठा मन रो ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमी तिताली

पना म्हांरे सेवती रा गजरा लाजो जी ।
बागां पधारो सायबा गजरा लाज्यो
होती सांझ घर आज्यो पना ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमी तिताली

म्हारी बैरण सौत मारू बिलमायी है ।
कांई जांणों कांई जादू सो कीनों
भंवर मेल लपटायी ।। १
महुत जतन कर रही कितेही[१]
किति वार परचायी ।

---

[१]नीम्बी की । [२]मारी । [३]'मना' नहीं । [४]बांगा पर न । [५]कैते ही ।

रसराज मोसू अनोखी कोई जिण सू
नही सुळझै उळझायो ॥ २

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

म्हारै मन री अदेसो मारूडा मिटा दे प्यारा ।
रसराज कागद यू लिख भेजू
लेजा रे पातकवा सदेसो ॥ १

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

सारो रस लै रे म्हारा भवरा बेलडिया रो ।
या रित जावै छै वसत दुहेली
फूली फूली कलियान बेलडिया रो ॥ १

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

कोई[1] राझै नू लाय मिलावै रे
दोस्त उवो मैडडी ज्यान जिवावै ।
असन वसन वारी कछु न सुहावै मेरा स्याणा वे
वालैंनी नैना वारी नीदरी न आवै मेरा स्याणा वे
विरह् अगन सारो वदन जळावै ॥ १

राग – मांझ
ताल – धीमो तितालो

तखत हजारै नू राझण चलावे
रैदी वे हीर निमाणी मनाय ।
आखै नी वरसे दी पावस झर मेरा स्याणा वे
वेखन सकदा कोई यो विछोहा मेरा स्याणा वे[2]
साई यौ विरह्मिटावै तो मला ॥ १

---

[1] काई ग । [2] 'वे' नही ख ग ।

फूल मार[1] जिन मारो मोहन
ऊभटे[2] छ नाजक अंगराज ।। १
किसी तरां सु पिचकार चलावो छो
मदन मिलावो छो सूको रग ।
पीयारो[3] वणायो सिंगार उजाड्यो
रसराज थांरे परसग राज ।। २

राग – मांझ
ताल – चलद तितालो

म्हांने भर दीजो ए कलाळी प्याला दारूड़ा ।
रसराज सांवळ बिछड़या[4] पाया
म्हांरे आया सो कोसां सूं मारूडा दारूड़ा ।। १

राग – मांझ
ताल – चलद तितालो

बिरहा धूम मचाई तन मांय
कांई म्हे कियो छो थांरी बेर[5] हो ।
असन बसन निद्रा हू भूली
भूली सब सुख री सर ।। १
गांव नगर जगळ सब हेरया
हेरी नद नदियां री नेर[6] ।
कद मिळसी रसराज सांवळ बे
मन लग रह्यो उवारी लर ।। २

राग – मांझ
ताल – चलद तितालो

छड़ियां वाला सांवरा वे मेंहदी ज्यान ।
रसराज मुस्ताक रदी जिदड़ी
टपे वी सुनाती वरही तांम ।। १

---

[1] मार । [2] उलटे ग । [3] पियारी । [4] बिछड़या । [5] बैर । [6] नेहर ।

रसराज मोसू अनोखी कोई जिण सू
नही सुळझै उळझायो ।। २

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

म्हारे मन रो अदेसो मारूडा मिटा दे प्यारा ।
रसराज कागद यू लिख भेजू
लेजा रे पातकवा सदेसो ।। १

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

सारो रस लो रे म्हारा भवरा बेलडिया रो ।
या रित जावै छै वसत दुहेली
फूली फूली कलियान बेलडियां रो ।। १

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

कोई[1] राझै नू लाय मिलावै रे
दोस्त उवो मैडडी ज्यान जिवावै ।
असन वसन वारी कछु न सुहावै मेरा स्याणा वे
वालैंनी नैना वारी नीदरी न आवै मेरा स्याणा वे
विरह अगन सारी वदन जळावै ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमो तितालो

तखत हजारे नू राझण चलावे
रैंदी वे हीर निमाणी मनाय ।
आखें नी वरसे दी पावस झर मेरा स्याणा वे
वेखन सकदा कोई यो विछोहा मेरा स्याणा वे[2]
साई यो विरहमिटावै तो मला ।। १

---

[1]काई ग । [2]'वे' नहीं ख ग ।

राग – मांझ
ताल – धीमो तितालो

मैनू छांड न जाइयो रे
सांवरा मसि मूं लगाई मिलक।
रसराज रमजा दिस बस गई मेरा स्याणा मैं
नेहा करया तो निभा करीयो ॥ १

राग – मांझ
ताल – होरी री

बाईजी कमधजियो रमै छै सिकार।
कस्यां बांकडलो कमर सजदार
चंचळ तुररा रो नोहो असवार
मयेली लाडलडी रो सिर रो सिणगार।

राग मांझ
ताल – होरी री

हे वैरण म्हांरा छकिया नैं वेग बुलाय
रहयो नहिं पल हो उण बिन जाय
वैरी यो जोबनियो रहयो छ सताय
रसीकाराय नें भाभ हो भाज मिलाय ॥ १

राग – मांझ
ताल – होरी री

धण गली मोस लड़ी सुणदीयां भली सयाणी।
रसराज जा हीरां दी पहदो रमभा
जांणदी सांवरा ज्यांन मैडडी ॥ १

राग – मांझ
ताल – होरी री

माई माई सांवळीयां री तीज
हींडी नें बंधावो चंपाबाग में म्हांनीजा जी म्हारा राज।

---

पाठां री च म ।

दे गळबांही मारवणी सू
हीडै म्हारौ भवर सुजाण ।। १

राग – माढ
ताल – होरी रौ

महोलौ सावणीया री तीजरी रे लीजो मारूडा।
पना मारू किण दिस छे थारौ वास
किण दिस[1] व्याणै प्यारा चालणौं रे ।। १
पना मारू जिण दिस देखौ जिण दिस नैं
अगानैण्या री छै प्यारा भूलरौ रे ।। २
गोरी म्हारी रसनगरी छै म्हारौ वास
दिल राखै जिण दिस नै अजी[2] चालणौ रे ।। ३
पना मारू चालौ चालौ म्हारैं घर मिजमान
तन मन करस्या अजी वारणै रे ।। ४
पना मारू या धण चगी सेज सुरगी
यौ आनद बरसै छै सौं गुणौ रे ।। ५
पना मारू यौ झुक आयौ छै मेह
चमकै बादळ मे अजी बीजळी रे ।। ६
पना मारू सोनैं री सीसी प्यालौ रतना रौ
पनैं रै रग री दारूडी रे ।। ७

राग – मांढ
ताल – होरी रौ

लायौ[3] रगरेजा चूनर सारी
कंचुकी कसूमी हरयौ लहगा घूमघुमाला कलीदार।
क्या खूब सीया मेरा सुघर दरजिया
कोर किनारो का लपादार ।। १

---

[1] 'दिस' नही। [2] 'अजो' नही। [3] ल्यायौ।

राग – ललित
ताल – इकी

अब तो जागौ न राज बनरा हो ।
नणद जेठाणी रा बोल सुणी ज
फिर रही घर र काज ॥ १

राग – ललित
ताल – इकी

अमलां री मातो दारूड़ो रो छायो
आयो है मा म्हांरै मेहलां ।
जोबन जोर रंगराती मारू
सणा रा नैणां नु' सुहावो ॥ १

राग – ललित
ताल – इकी

भाई रग मह्लार मालो
भवा मोरे केसू फूल
मवरन को भनकार ॥ १
फूले फूल कळी त्यों बोहो
कोमल मधुमा की बार ।
रसीसाराज जहां मबीर कुमकुमें
खेल राजकुंवार ॥ २

राग – ललित
ताल – इकी

मामी नोबत मोभल रात में
बिणोय सयाणो यिलमायो सारी रारयूं
सास दई परभात म म्हांरी भामी ॥ १

---

म । बिलु ग ।

राग – ललित

ताल – इकौ

चीजा जो म्हासू बोल्या अजाण मे ।
नाव न जाणू उवा रो गाव न जाणू
सोरठ री सहनाण पनाजी ।। १

राग – ललित

ताल – इकौ

तयारी जोर वणी मोरो राधे ।
वाको वेसर चाल रय्यो[1] झुक
वेसर वारौ मोर ।। १
चुनरी कुमली अजन कुकुम
फैल्यो जखम बहु ठौर ।
प्रात भयौ रसराज पहैली
जोसौ[2] नद - किसोर ।। २

राग – ललित

ताल – इकौ

मनोहर लागत मुख महताब ।
नए गुलाब फूलत उत है
इत[3] कुमळत[4] नैन गुलाब ।। १
गहरे बोल भये मुख केरे
अलसाती तन आव ।
इक थी परी नव नायक जीत्यौ
कोन सी द्यू मैं किताव ।। २

राग – ललित

ताल – इकौ

विगानी ध्यू सैनेडा[4] न ज्याईये[5] वे
ल्याईयै तो ल्याय निभाईयै ।

---

[1]रह्यो । [2]जीत्यो । उत फूलत हैं गुलाब नए इत ख ग । [3]तेरे । [4]सैं नेहडा । [5]ल्याईयै ।

रसराज प्रीत करी सौ सांवरे[1]
इस्क नदी महा[2] आइयै ।। १

राग – ललित
ताल – इको तिताली

रांझण डेरे आया सांवरा वे
आया मेरी हीर निसांणी दे।
रसराज लिख लिख भेज दा कितावां
जग सियाल सैं ल्याया वे ।। १

राग – ललित
ताल – जलद तिताली

मान मनावै मारूडौ माननी।
रसराज मोहन पाय परयौ अब
तू केही बात बनावै ।। १

राग – ललित
ताल – जलद तिताली

वाली वे प्यार भुलफां तेरो काळी।
रसराज इण भुलफां में सरसी
उळझी सुहाणै वाळी ।। १

राग – ललित
ताल – जलद तिताली

सांवरो सनेही मां मोहि कूं सुहावै।
विन ही काम महानी कर कर
अपने नगर में आवै ।। १
योस रसीलो सब रस जानै
मद मद रमक मतावै।

---

[1] सांवरे हुए है। [2] मद। [3] हमारी।

रसराज तू व्रपभान कू कह मा[१]
या कु मोहि विहावै ।। २

राग – ललित
ताल – धीमो तितालो

राधे सिर चमकै सोसनीय्या साळू ।
बादळ जिसै गूघट मे चमकै
चद जेहो वदन रसाळू ।। १
मोतीय्या री लडिया असी[२] सोवै[३]
बुगला - सो पात विसाळू ।
रसराज पीय्या पपईय्या रै कारण
आई छै[४] रित वरसाळू ।। २

राग – ललित
ताल – धीमो तितालो

हो छंदागारी रा बालम बोलो
वन वन तो भवर वेलरिय्या[५] मे बोलै ।
फूली अचानक ही फुलवारी
किसा ही पवन रो बहै झोलो ।। १

राग – ललित
ताल – जलद तितालो

चद घर चाल्यो तू भी चाल ।
मेरो[६] मोहन मोह[७] लिय्यो तै
इन नेना नू पाल ।। १
क्यू बरजै अब ही घर आई
तेरे नायक मे जजाळ ।
व्हो[८] नायक रसराज तिहारो
आज और और काल ।। २

---

[१] कहे । [२] इवैसी । [३] सोहे । [४] गोरी ख ग । [५] वेलडिया ख ग. । [६] मेरै । [७] मोहि । [८] वहो ।

राग – ललित
ताल – धीमी तिताली

भमकन लागो विरहा की आग माई।
द्रुमन कोयलिया कूक मचावै
ज्यु ज्यु नरो भावे फाग॥ १

राग – ललित
ताल – होरी री

मारूडाजी म्हारा माया मोभली' रात।
लटपटीम्या सिरपेच छू रम्या
धास लगी छू गोरै गात॥ १

राग – ललित
ताल – होरी री

मारूडाजी म्हारा हो राज भमसा रा माता हो राज
किण सिखलाया थांनै'।
मूधी बात में तरक करो छो
कांई थारो हो गयो मिजाज॥ १

राग – ललित
ताल – होरी री

बनाजी थांरी सेजडल्यां रंग लाग्यो।
रंग बरसै केसरिम्या साड़ी
मौर केसरिम्या बागो॥ १

राग – ललित
ताल – होरी रो

सहेल्यां म्हारी मायरी छवागारी।
बपू नहीं छू रगराज थो भसो
तन मन माऊ रौ बारी॥ १

[illegible]

राग – ललित

ताल – होगी री

सांवराजी म्हारा हो राज, मत बोलो म्हासु प्यारा।
थे अणखीला म्हे तेखीला
थासु म्हारै नही काज ॥ १

राग – विभास

ताल – आड़ो तितालो

वन वन मे फूले सुमनमा[1]।
वन वन मे कलियन फूलत विकसत मंजर
नव पत वन द्रुम द्रुम वेलन[2]
वेल निहार सहेलिन मोद भय्या
कदम कुंज प्रति भ्रमर पुंज विहरन उड उड कै
सोर मचाय रहे तिनका
कुसमाकर रितु वहार का अगमन भईलवा
तिह पर सखि अब आय है नाह नय्या ॥ २

राग – विभास

ताल – चौतालो

आई वसंत वन घन फूलो।
रसीलो[3] राज आए पथिय्या विदेसन तै
अजहु न आय्यो है कंत ॥ १

राग – विहाग

ताल – इकौ

मुदरिया कोई ले गयौ मेरी चोर।
रजनी सौ जहा दिन दिखियत है
ऊरभो लता चहु ओर ॥ १

---

[1]सुमनमा ख सुमना ग। [2]वेलैंन। [3]रसीला ख ग।

गई सघन घन रमण सखी में
जहाँ पिक कूजत मोर।
आयो अधांग न जानूं कौन थो
रसराज उवो सिरजोर ॥ २

राग – बिहाग
ताल – चम्पक विलासी

झाई झाई सांवणियां की रित आ
परदेसिया क मेले पाती
झूम झूम' घन बरसे, बदरिया बिजली चमके।
मुरवा नाच कोयल बोले
पपय्या पिउ पिउ पुकारे।
उमड घुमड नभ सिखर चढे हैं
सुरस पियरे कारे ॥ १

राग – बिहाग
ताल – तीनताली

मतवारो मोती बेसर रो
मोनैं म्हांसो ळै'र झुलावे पना जी।
मधुग्न की रस लेतो लोभी
रंग बरसातो बेसर रो ॥ १

राग – बिहाग
ताल – तीनताली

रंगभीनों रसिया थारी चाकरी
एठै मैं' दिन दिन रातूं सुभाम रात्री।
रसीमाराज माहि ब्याह चेहरदी
पहलौ फिरै मो मैं या करी ॥ १

झूम। पैदो।

राग – विहाग
ताल – धीमो तितालो

गैरी गैरो चपा फूल्यौ
एरी मोरो वंन मोरै अगना मे।
रसीलाराज याकै फूलन मे[1] आवन की
कौल कियौ कर भूल्यौ ॥ १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

जांणी जी थारी बातडली म्हे
रसोलाराज प्यारा अलवेलिया।
छिन भर ठहरत नही थारौ
कोई तौ चढी छै चित मे सयाणी[2] ॥ १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

मनावत रैन गई सगरी री*।
तू माननी अजहु नही मानत
वार किती मै भगरी री* ॥ १
सीतल मुक्ताहार भये है
जेहै[3] ते जगमग री।
रसराज अबहु ऊठ चटकीली
सोय ऊठी नगरी री ॥ २

राग – श्रीराग
ताल – जलद तितालौ

बाडी री रस ले गयौ भवरा रे।
फूल फूल और कळी कळी रै
पखुडी पखुडी[4] दाग दियौ ॥ १

---

[1] पै ख, पें ग। [2] सयाणीजी। * *'री' ग मे नही। [3] जेहो ख ग। [4] 'पखुडी' ग. नही।

राग – श्री राग

ताल – बलद तितालो

केही न्याज भरी नवरी मेबूबां[1] री ।
रग भरी रसराज सग रांभण दे
चगी नैंन रसीलां दे नोकां दी पल्ल दी वे ॥ १

राग – श्रीराग

ताल – पीमो तितालो

नंहि मुभ्र दी सांवल ए गला
मैं तो कह दी सहजें भाय मीयां[2] ।
इक मास्यूक उवारी इक आस्यक[3] मेरा स्याणा
एक ही इस्क कहाय ॥ १

राग – पट

ताल – बलद तितालो

अब घर जावण दो आलीजा जी
प्रात हुवो मेरो[4] लाज छुटसी ।
जातां प्राण प्रीत नंहि छूट
लाज के जातां प्रीत तूटली ॥ १
उवा किसी प्रीत कहेलो[5] सखियां
लाज ही ब जाता अहुटसी ।
पण बिसोयण रातां बहु खोई
पूटत पूटत नदियां गूटसी ॥ २

राग – पट

ताल – होरी री

अब घर जाने दे मोहना मोहि
प्रात भयो मरा लाज छूटेगो ।

---

म॰ बूबां । मर तो । मियां । आस्क । कोरी । कहोला । लाज न ।

राग – विहाग
ताल – धीमो तितालो

गैरी गैरी चपा फूल्यौ
एरी मोरी बैन मोरै अगना मे।
रसीलाराज याके फूलन मे[1] आवन कौ
कौल कियौ कर भूल्यौ ॥ १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

जाणी जी थारी बातडली म्हे
रसोलाराज प्यारा अलबेलिया।
छिन भर ठहरत नही थारौ
कोई तौ चढी छै चित मे सयाणी[2] ॥ १

राग – विहाग
ताल – होरी री

मनावत रैन गई सगरी री*।
तू माननी अजहु नही मानत
बार किती मै भगरी री* ॥ १
सीतल मुक्ताहार भये है
जेहे[3] ते जगमग री।
रसराज अबहु ऊठ चटकीली
सोय ऊठी नगरी री ॥ २

राग – श्रीराग
ताल – जलद तितालो

बाडी रौ रस ले गयौ भवरा रे।
फूल फूल और कळी कळी रे
पखुडी पखुडी[4] दाग दियौ ॥ १

---

[1] पैं स, पें ग। [2] सयाणीजी। * *'री' ग मे नही। [3] जेहो ख ग। [4] 'पखुडी' ग. नहीं।

राग – श्री राग

ताल – जमत तितालौ

केही न्याज भरी नयरां मशूकां[1] री ।
रग भरी रसराज सग रीभण दे
पगी नैंन रसीलां दे नौकां दी चाल दो थे ॥ १

राग – श्रीराग

ताल – धीमो तितालो

नहि बुझ दी साबस उ गला
मै तौ कहू दी सहजें भाय मीयां[2] ।
इक मास्यूक उवारी इक मास्यक[3] मेरा स्याणा
एक ही इस्क कहाय ॥ १

राग – नट

ताल – जमत तितालौ

मम घर आवण दी मालीजा जी
भाग हुवो मेरी[4] लाज छुटली ।
आसां प्राण प्रीत नहि छूटै
लाज कै आतां प्रोत तूटली ॥ १
उवा किसो प्रीत महैली[5] सखियां
लाज हो क आतां महूटेली ।
पण कितीयक रासां वहु सोई
छूटत छूटत नदियां छूटसी ॥ २

राग – नट

ताल – होरी रो

मम घर आने दे मोहना मोहि
भाग भयो मेरो लाज[6] छूटंगी ।

---

[1]मशूकां । [2]कर ली । [3]मियां । [4]आशिक । [5]मेरी । [6]महोला । [7]लाज न ।

प्रान कै जात प्रीत तोसौं जोरी[1]
लाज कै जातै प्रीत छूटैगी ।। १
कैसी उवा प्रीत कहैगी सखिया
लाज कै जातै जो अहुटैगी ।[*]
पर कितियक राखौ[2] बहु खोई
खूटत खूटत नदिया खूटैगी ।। २

राग – पट
ताल – जलद तितालौ

झम झननननन[3] बाजै झाझरु
क्यौं घर जाऊ मेरा प्राण पियरवा ।
बडी कील दे डारो सुनारियै
निकसन पावै नही जानैगौ लोकवा ।। १
हो गयौ प्रात न जान्यौ[4] परचौं मोहि
बतिया लगा दइ जान रसिकवा ।
रसिकराज रसराज सावलिया
अबहु तौ मेरौ छोड अचरवा ।। २

राग – पट
ताल – जलद तितालौ[5]

लाल रगीलौ मोरौ स्याम रगीलौ
वैसी कुवर मोरी राधा रगीली ।
सखा सखी सब छैल छबीले
गोकळ और बरसाणौ छबीलौ ।। १
रूप नवेला नैण नसीला चटकीलौ
तन साज सजीलौ ।
सहज सुभाव प्रीत गरबीलौ
रसोलाराज समाज रसीलौ ।। २[6]

---

[1]जोरू । [*]'कैसी' और 'लाज' दोनो चरण नहीं । [2]राखा । [3]भनन । [4]जान्यौं न ।
[5]दूसरा पद्य नहीं । [6]रेखतौ ।

राग – पट

ताल – ब्रमद तितालौ*

इस्क दी भाजी है नोबत
कीस्या दे भाग[1] चले दुसमन।
तसत पर मा खड़ा मास्पूक
भदालत जुलम को करके।
सजन कीता जुलम मुज[2] पर
की मारा बेगुनै मुज कु।
करगा को इनसाफ भला
पकड़ सोंपे मुझ तुज कु॥ १
परी सहुकीक मै कीता
जो जांणा था सो झूठ था सब ही।
जुलम दिल में भवस था प्यार
न था नैनू में नेहु कब ही॥ २

राग – सरपरदौ

ताल – ब्रमद तितालौ

भाज तौ भलबेली सी[3] निजर सूं
महैर करौ म्हांर डेरै भ्रगानैंणी जी।
कर त्यारी म्हारी कवर
बागो करण विहार।
सरसी भाई बाग मै
लियां सहेल्यां सार मे॥ १
रग भरया काजळ रळयो
द्रग भ्रणियारा वेस।
मिसी गुलाबी मिल रही
रुचिर भलीसी रेस मे॥ २

---

*रैसती। [1]भाज मयी। [2]माशूक। [3]'मुझ' नहीं। 'सी' नहीं।

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

आलीजाजी हो आलीजाजी बाजी ल्याकर आई ।
ना राजी म्हारी सासु नणदल
रसराज म्हारौ मन राजी ॥ १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

काई रस बरसैं या चगा नैणा सावराजी[1] ।
चगा नैणा[2] रा चितवन मिळता
रसराज म्हारौ मन तरसैं जी[3] ॥ १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

कोठैं बोली मीठै बोल होतैं प्रात या[4] कोयलडी ।
वाडी गुलाब फूलण री वेळा
कळिया रही छैं चटक मुख खोल ॥ १
भवर उडया कवळा सु साथ ही
फूला[5] भरया छैं रसता अतोल ।
काई छिब[6] दोय घडी की चगी
मलिया रहया छैं चहु दिस डोल ॥ २

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

थारा[7] तौ नैणा रा कामण लाग्या[7] ।
रसराज क्यू सह सकस्या अकेला
हमला तीज री रैंणा रा ॥ १

---

[1] माहजी ख ग । [2] नैंणा निजारा मिळता ख ग । [3] औ ख ग । [4] आ खे । [5] फूल्या ।
[6] छब । [7] लागा ।

राग – सरपड़दो

ताल – जलद तिताली

दारूड़ो भर दीजो ए कलाळी
मैलां भायो म्हांरो मारू मतवाळो ए[1]
फूल पांन भौर फल रहघा
मतरदान मेवास।
राजे कंचन रतन रा
प्यालो सीसी पास थे॥ १

राग – सरपड़दो

ताल – जलद तिताली

भर दीजो ए कलाळन[2] दारूड़ो
मैलां भायो म्हांरो मारू मतवाळो।
रसीलाराज उवारे उवारण होय कर
रीझ मैं देसां सांगानेर रो साळू॥ १

राग – सरपड़दो

ताल – जलद तिताली

मारूजाजी हो मारूजाजी थे सौ म्हांरी ज्याम बिलमाई।
रसराज हित चित सु संग[3] रमता
हँस हँस देता दारूड़ो॥ १

राग – सरपड़दो

ताल – जलद तिताली

मिजाजीड़ा रे सेता आज्यो जी राज
बहता बटाऊ री खबर
म्हांरी एक तूही रखवारो
सग म कोई समाज॥ १

---

[1] 'ए' नहीं। [2] कलाळी। [3] 'संग' नहीं। [4] नाचो।

राग – सरपदो

ताल – जलद तितालो

आलीजाजी हो आलीजाजी बाजी ल्याकर आई ।
ना राजी म्हारी सासु नणदल
रसराज म्हारो मन राजी ।। १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

काई रस वरसै या चगा नैणा सावराजी[1] ।
चगा नैणा[2] रा चितवन मिळता
रसराज म्हारो मन तरसै जी[3] ।। १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

कोठै बोली मीठै बोल होतै प्रात या[4] कोयलडी ।
वाडी गुलाब फूलण री वेळा
कळिया रही छै चटक मुख खोल ।। १
भवर उडचा कवळा सु साथ ही
फूला[5] भरचा छै रसता अतोल ।
काई छिब[6] दोय घडी की चगी
मलिया रह्या छै चहु दिस डोल ।। २

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

थारा तो नैणा रा कामण लाग्या[7] ।
रसराज क्यू सहू सकस्या अकेला
हमला तीज री रैणा रा ।। १

---

[1]माहजी ख ग । [2]नैण निजारा मिळता ख ग । [3]ओ ख ग । [4]आ खे । [5]फूल्या ।
[6]छब । [7]लागर ।

राग – सरपरदी
ताल – चमत तितालो

दारूड़ी भर दीणी ए कलाळी
मैंनो मायो म्हांरो मारू मतवाळो ए[1]
फूल पांन और फल रहया
मसरदान मेंवास।
राजे कंचन रतन रा
प्यालो सीसी पास वे ।। १

राग – सरपरदी
ताल – चमत तितालो

भर दीजो ए कलाळन[2] दारूडी
मैंनो मायो म्हांरो मारू मतवाळो।
रसीकाराज उवारे उवारणे होय कर
रीझ मैं देसां सांगानेर री साळू ।। १

राग – सरपरदी
ताल – चमत तितालो

मारूणाजी हो मारूडाजी पे तो म्हांरी ज्याम बिसमाई।
रसराज हित चित सुं सग[3] रमता
हंस हंस बैता दारूडो ।। १

राग – सरपरदी
ताल – चमत तितालो

मिणामीड़ा रे मेता आज्यो जी राज
महता बटाऊ री खबर
म्हांरी एक तूंही रखवारी
सग म कोई समाज ।। १

---

[1]'ए' नहीं। [2]कलाळी। [3]'संग' नहीं। [4]कायो।

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

म्हे तो थाने छैलाजी हो थांरा सु[1] न जाण्या ।
बाकी अकस किसा[2] देस रा वासी
रसराज[3] दीसो अलबेला ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

राज गहेला हो पना थे लाडीजी रा बना
अगानेणी बनरी ने विलमा ली काई करसी ।
सुख दीजो[4] जी साजन अलबेला
छोटी-सी या धण राज[5] नवेला ।
रसीलाराज पीया सुख रा सुहेला ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

राझणा राझणा राझणा मेरा वे
रसराज इस्क लगा की लाजणा[6] ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

अबुवा[7] की डारी[8] कोयल बोलै
नहिं बोलै मेरो कान रिसानो ।
रसराज कहा लुं[9] विनती करियै
कर मीलु[10] मोरी छतिया छोलै ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

झूल* ना मै तो जानू री बिरहीया
तू हठ लागी मेरी[11] सुधर ननदीया ।

---

[1]सू । [2]किसे । [3]अ । [4]दीज्यो । [5]और थे बी नवेला स ग । [6]जाणां । [7]अबवा ।
[8]डार । [9]लू । [10]मिलूं । *झूलाना ग. । [11]री ।

रसराज सोरै संग कर दी-नहोरा मैं
भला करैगी तेरो साइयां गुसय्यां[1] ।। १

राग – सरपरदो
ताल – बसद तितालो

ढोलना मेरी भरदे सनेहीया
मैं नहीं भरजांण दी सांवरै की सू ।
रसराज मई मा रुसाय रहैगी
भीज जायगी मोरी सुरग चुनरीया[2] ।। १

राग – सरपरदो
ताल – बसद तितालो

दुपट्टे वारो प्यारो म्हांरो[3] मन लियां जाय जी ।
महीयां भराय बंसी बजावैं
मइ नइ रमक बताय जी ।। १

राग – सरपरदो
ताल – बसद तितालो

रग भीनी हो रही गुजरेटी
रन रमी सांवरै संग झूम री ।
रसराज क्यूं साळूडो सुळझा गयो
किल गयो भणवट कितकूं अंगूठी ।। १

राग – सरपरदो
ताल – बसद तितालो

आसकी मत होमा किसू सै
आसिकां नुं महबूबा दी[4] दवाई बे ।

---

[1] गुसांईसां । [2] चूंनरिया । [3] म्हारो मही । [4] भाशकां मैं । [5] दी न म ।

मारे निजरा दे मूये
आसिक केरे अग[1]
जर मर कै फिर जी उठै
सच मास्यूका सग वे ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – जलद तितालौ

आख लगाइयां वे मजनू तैनै चीरै वाले ।
अब तौ नांहि मिल दा तू किस नै गला सिखलाइया ।
सब सग सुलभ तो सें उलभाइया
देखौ जो निभाई बेग विसराईया
रसीलाराज अेती बेपरवाईया ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – जलद तितालौ

चमकै दी सिर पै सौनै री वमे[2] तुररे
पगडी[3] नी चकरदार मिया मजनू दे
उवैसा दुपट्टा रसराज सोहैं सुहेदा
वस रहया जी लैलियू[4] दे ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – जलद तितालौ

ज्यान मेरी नू कीभेडा[5] ल्याया लाया[6] वे स्याणा[7] ।
सुण दा वे रसराज की आखा[8] आन तेरी नू ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – जलद तितालौ

ज्यानी महर-मयार वे तू दिल दा वे

---

[1]संग ख ग. । [2]धमैं । [3]पघडी । [4]लियौं । [5]कीभेडघा । [6]'लाया' नहीं । [7]स्याणी ।
[8]अखां ख. ग ।

इस्क तुसी दा सारी जीवन मैंडा वे
रसीलाराज सिरदार तूं सिरदा वे ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – जलद तिताली

मैंडा वे मिजमान मोही जांदा वे[1] मही बागड़े।
मोहि लियौ मनमोहनी मूरत
मिलण दी[2] मरज रांझा मैंडो[3] मांन ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – जलद तिताली

बिजली चमकां दी याद देंदी वे।
हिक बिरहा मे[4] दूजी मल्हार रस[5]
दो दो दरद न सैंदी ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – जलद तिताली

सजण दा हाल मैंहेर दा[6] याद रैंदा वे।
रसराज पेच दुपट्टा निकस दा[7]
जोर[8] सरां सैं मण दा ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – जलद तिताली

पर्मू म्हारो मुजरो लीजो जी
हो सांवळिया पीरे वाले छैला।
रसराज सजरी मीठी निजरयां सूं
मिस्री घुली करवा गजरा सूं ॥ १

---

[1] वे नहीं। [2] मिलण दी न। [3] मैरी। [4] मीर म। [5] रसराज ब न। [6] मह्रर दा। [7] मीरम दा। [8] दो दरद सूं मण दा।

राग – सरपडदौ

ताल – धीमौ तितालौ

म्हांरै गळ लागौ नें साहबा[1]
भवर सुजाण मारूडाजी थे।
मे[2] थारा चाव करा छा निस दिन
चरण[3] बिछावा म्हारा साळूडाजी थे ॥ १

राग – सरपडदौ

ताल – धीमौ तितालौ

म्हारै डेरैं चालौ ने, सायधण कर रही चाव खडी छै जी।
रसराज या चंदावदनी राधा
नाजकडी मुकता लडी छै जी ॥ १

राग – सरपडदौ

ताल – धीमौ तितालौ

मारूडौ छै रिझवार म्हारी आली हे।
जाय सलाम कहै आलीजा ने
कुरन सवार हजार ॥ १

इतनौ सदेसौ और कहीजै
चाल्या तुरत विसार।
रसीलाराज रसराज सिरोमण
आवा म्हे थारी लार ॥ २

राग – सरपडदौ

ताल – धीमौ तितालौ

मै सरायौ[4] हे म्हारी नणदी
प्यारे[5] बालम ईं बनरा नै।

---

[1]साहिबा। [2]म्हे। [3]चरणां। [4]सराहयौ। [5]नगौ ल ग।

इस्क सुखी दा भारी जीवन मैंडा वे
रसीलाराज सिरदार सूं सिरवा वे ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – बसप तिताली

मैंडा वे मिजमान मोही आंदा वे मही वालडे ।
मोहि लियो मनमोहनी मूरत
मिलण दी* अरज रांभा मैंडी मान ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – बसप तिताली

बिजली चमकी दी याद देंदी वे ।
हिक विरहा ले दूजी बहार रस[1]
दा दो दरद न सेंदी ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – बसप तिताली

सजण दा हाल मेहर दा[3] याद रैंदा वे ।
रसराज पेच दुपट्टा निकस दा[5]
जोर[6] तरा सें वण दा ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – बसप तिताली

परमूं म्हारो मुजरो मीजो जी
हो सांवळिया थीरै वासे खेला ।
रसराज सजरी मीठी निजरचा सूं
मिल्मी हुवो करका गजरा सु ॥ १

---

[1]वे नहीं । [2]मिलण दी च । मेरी । मीर च । [4]रसराज का च । नहर[5]
[5]नीरव दा । [6]जो तरह सूं मस दा ।

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जिंद ग्रटकी सावळ नाल तुसी दे
नही रुकदी रेंदी किसू से पनु।
रसराज रमजा दिल विच खटकी
सहर सुहाणे दी ससि भूली भटकी ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जो दम गुजरै सो दम तेरा
सुकर गुजार तू हो साई दा वे।
राजी कुसी[1] उसी मे रहैणा
रसीलाराज उवौ ही सुख चाणो ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दिल तरसै सावळ वेर वेर
नही ग्रादा तू कभी मिल दा पियारे[2]।
रसराज गाव सहर ग्रौर जगल
जिथे जादीया मै तिथे तूही दरसै ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दूतां दे फदनू वे स्याणा[3]।
मैं की जाणा रसराज
इस्क दुहेला जिंद नू ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – रेखतौ[4]

चस्म चोट चलाय कै सावरा
दिलकु चेटक दे गया वे।

---

[1]खुसी। [2]मिया रे। [3]स्यौणा। [4]इकौ रेखतौ ग

दिल राख थो रखावै लाडलडो[1]
यो गुण अमोलक किण तो पढायो नणदी ॥ १
इक रूख हेठ मोहत सी बागे *
उवो चतरो न नहीं आयो।
रसीलाराज दोनु ओर सरीखो
धन छ उथ ओर सुख उवां ही छ सुहायो नणदी ॥ २

राग – सरपरदी
ताल – धीमो तिताली

बनरा नी माया मा, करूंगो मैं आनद वधावना।
रसराज मोत्यां चोक पुरावां, प्रान पियारा मन भावना ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – धीमो तिताली

सांमाने पधारो धण मद छकियो ऊभो बार।
लाज्यो लाज मत सौगन थांन
मिलज्यो लाग गळ-बांह् पसार ॥ १
बांकी तरह ओर वेस बांकड़लो
प्यारो नाना रो असवार।
रसीलाराज कांई छब अलबेली
मारूडो देखण जिसो सिरदार ॥ २

राग – सरपरदी
ताल – धीमो तिताली

अटियू दे नाल उलझाई वे जिदडी
नहीं छूटे लग गई मेरे महीवासे।
इस्क किया के वैर बसाया
हो गया अजब[1] स ख्याल ॥ १

---

*यह चरण आदर्श प्रति में नहीं। [1]धण। [2]मती। [3]हुवानो। [1]'ब' नहीं।

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जिंद अटकी सावळ नाल तुसी दे
नही रुकदी रेंदी किसू से पनु ।
रसराज रमजा दिल विच खटकी
सहर सुहाणे दी ससि भूलो भटकी ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जो दम गुजरै सो दम तेरा
सुकर गुजार तू हो साई दा वे ।
राजी कुसी[1] उसी मे रहैणा
रसीलाराज उवौ ही सुख चाणो ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दिल तरसै सावळ वेर वेर
नही आदा तू कभी मिल दा पियारे[2] ।
रसराज गाव सहर और जगल
जिथे जादीया मै तिथे तूही दरसे ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दूतां दे फदनू वे स्याणा[3] ।
मै की जाणा रसराज
इस्क दुहेला जिंद नू ॥ १

राग – सरपडदौ
ताल – रेखतौ[4]

चस्म चोट चलाय कै सावरा
दिलकु चेटक दे गया वे ।

---

[1]खुसी । [2]मिया रे । [3]स्यौणा । [4]इकी रेखतौ ग

लोफूं सें गया कें मुझ कुं
भाप मैं मनमस्त रह्या[1]
जला कें सास ल दस्त रखो ॥ १
उसक मॅन गुलाबां दे फूल सायो
मासकां का दिल मुस्ताक किया[2] ।
भासकां का दिल मुस्ताक रह्या
मास्फूक नै भपना रूप दिया ॥ २

राग – सरपड़दी
ताल – होरी री

कामणगारा हो नैंणां रा भालीजाजी म्हारा छल ।
रसराज या नैंणां रै मिलन री
नित री करामौ सायबा म्हांन सल ॥ १

राग – सरपड़दी
ताल – होरी री

बन रे बाग बहार गुल लाला से लाला लागणे ।
मैन गुलाब कवळ सा मुसका
बन रह्या सांवरा प्यारा सजदार ॥ १

राग – सरपड़दी
ताल – होरी री

गरीबां दा दिल ले जांणा नैं भासांन ।
रसराज जो ले गया लो जबर तुम
भपना भाप दे जांणा ॥ १

राग – खावर
ताल – चौताली

भभर फूले तैसे हो फूले फूल ।

---

[1]भ्या भ । [2]कीता भ । भ । [4]सुभै ।

कलिया विकास पत बाहु हरीले
नीकै सोहत झूल ॥ १
पल्लव म्रदुतर सोहत डारन मे
सरसी साखा अकुरे नवीने मजुर तैसौ मूल ।
अैसे व्रछ वेली के कुज मे
झूलै रहे है दोऊ झूल ॥ २

राग – सागर
ताल – चौतालौ

सरस रूप तेरौ जुगलकिसोर लाल
रति मन्मथ ज्युं खेलत कुज भवन
प्रात भयौ जागौ मेरे लाल
कली कुसम फूलन की वार
चटकत कली चहकत चिरिया
झीनी झीनी बान बोलत पछी
मानु वाजै वीन सतार ॥ १

राग – सारग
ताल – इकौ

उमड घुमड[1] गगन वादर आए
सीरी बूदन तें तैसे विजली हु मिल चमकती बोलें मोर प्यारे ।
केसरिया पिय आकर पीछे जावतु है ॥ १

राग – सारग
ताल – इकौ

केसरिया वन रै देखौ नीकै[2]
केतकिया फूली है वारी क्यारी बीच मे ।

---

[1]घमड । [2]नीकौ ।

लोकूं सें गया कैं मुज कूं
भाप मैं मनमस्त रह्या[1]
जला क खास क दस्त रखी ।। १
उसके नन गुलाबां दे फूल सामो
भ्रासकां का दिल मुस्ताक किया[2] ।
भ्रासकां का दिल मुस्ताक रह्या
मास्यूक नैं भ्रपना रूप दिया ।। २

राग – सरपड़दौ
ताल – होरी री

कामणगारा हो नैंणां रा भ्रालीजाओ म्हांरा छल ।
रसराज या नैंणां रे मिलन री
नित री करावौ सायबा म्हांनै सैल ।। १

राग – सरपड़दौ
ताल – होरी री

बन रे बाग बहार गुल लाला से लाला लागणे ।
नैन गुलाब कवळ सा मुखड़ा
बन रह्या सांवरा प्यारा सजदार ।। १

राग – सरपड़दौ
ताल – होरी री

गरोबां दा दिल से जाणा नैं[3] भ्रासान ।
रसराज ओ ले गया छौ भ्रबर तुम
भ्रपना भ्राप दे जाणा ।। १

राग – खावर
ताल – चौताळौ

भ्रमर फूल्ने तैसे हो फूल फूल ।

---

[1] स्या व । [2] कीता ध । [3] न । [4] तुमै ।

हो हैं तौ घनो आवैगे मुकर माई
गोरस हो है तौ औहै मिजमानी कू।
जिन देखी उवा व्रखभानजू की सपत
उवौ न सरावैगी[1] तिहारी राजधानी कू॥ २

राग – सारग लूहर
ताल – जलद तितालौ[2]

अलबेलिया घराने पधारौ
अगानैणी जोवै थारी वाटडली।
यौ सावणीयौ उमड रयौ छै भूल्यौ न जावे
उण सूरत री उणिहारी॥ १

राग – सारग लूहर[3]
ताल – जलद तितालौ

अलबेलियौ तौ अस ह्वै रह्यौ
छवागारी थारा लोयण लागणा।
अजी वाई आवै छै तनै खट नट घणा
और यौ मतवाळौ सिरदारजी॥ १
अजी थारै पीहर रा कहै छै जणा जणा
इरौ कामणगारौ छै सुभाव जी॥ २
अजी औतौ तिरछी निजर चलावणा
वरछी सुं तीखा घाव जी॥ ३
अजी अग मीन कवळ सू बी मोहणा
खजन सू चपळ खतगजी॥ ४
चिरजीव रहौ ए बनी बना
रसराज सहेल्या री आसीस जी॥ ५

[1]सराहैगी। [2]ताल-होरी रो ख. ग.। [3]'लूहर' नहीं।

चले चहुं दिसा कसे झोले नीके सावन के[1]
झगमग[2] ऊपर चढ़ अटरिया ॥ १

राग – सारंग
ताल – इको

बदरिया बरसें झीनी बूंद
बिजलियाँ चमके मा बोलें मोरा कोकिला[3] ।
मिली सुहावनी निस उर्वसी
तामे किसनके दिनन में बसत पिऊ केसरिया ॥ १

राग – सारंग सूहर[4]
ताल – चौताली

माई रित ग्रीषम में प्यारे लगत लागे
पवन उसीर नीर सघन अमराई ।
सीत लपटी की बिछायत तापर
लपट अलस सोरंभ अति सुखदाई ॥ १
ऐसी जेठ दुपरी के माँही
छाँही[5] सोहु चाहत छाँई ।
रसराज जोवन धूप में, नवल-वधू छाँही
रूप प्यारे की चाहत गलबाँही ॥ २

राग – सारंग सूहर[6]
ताल – चौताली

काहे कू रिसानी मेरी माई नवरानी
मैं तो इहाँ आई थी सुनन कहानी कू ।
कहा कहु इस पारोसन सयानी कू
मोहि कर ग्रहि मानी मेरी-सी अयानी कू ॥ १

---

[1]'के' नहीं । [2]'झगमग में च.. मापम भभमन प । [3]'कोकिले प । [4]'सूहर'
[5]'छाई । [6]'सूहर' नहीं ।

हो है तौ धनी आवैगे मुकर माई
गोरस हो है तौ ग्रैहै मिजमानी कू।
जिन देखी उवा व्रषभानजू की सपत
उवौ न सरावैगौ[1] तिहारी राजधानी कू॥ २

राग – सारग लूहर
ताल – जलद तितालो[2]

अलवेलिया घराने पधारो
म्रगानैणी जोवै थारी वाटडली।
यौ सावणीयौ उमड रयौ छै भूल्यौ न जावै
उण सूरत री उणिहारी॥ १

राग – सारग लूहर[3]
ताल – जलद तितालो

अलबेलियौ तौ व्रस ह्वै रह्यौ
छदागारी थारा लोयण लागणा।
अजी बाई आवै छै तनै खट नट घणा
और यौ मतवाळौ सिरदारजी॥ १
अजी थारै पीहर रा कहै छै जणा जणा
इरी कामणगारी छै सुभाव जी॥ २
अजी ग्रैतौ तिरछी निजर चलावणा
बरछी सु तीखा घाव जी॥ ३
अजी म्रग मीन कवळ सू बी मोहणा
खजन सू चपळ खतगजी॥ ४
चिरजीव रहौ ए बनी बना
रसराज सहेल्या री आसीस जी॥ ५

---

[1]सराहैगौ। [2]ताल-होरी रौ ख. ग.। [3]'लूहर' नही।

राग – सारंग मूहर[1]
ताल – चमक तितालो

म्हांरी छोटी भाईजी री साहवौ।
भजी उर्वारो मोहन चद री सौ भायबौ
कांई मेटण विरह री धूप जी ॥ १
भजी कांई धण री राधा सौ सोम जायबौ
रैन[2] कवळणी रै रूप जी ॥ २
भजी कांई धण बादळीयां री बीजळो
भोर पिय सांवण[3] रो मेह जी ॥ ३
भजो कांई सौन चंवेली सी साहबी
म्हांरो मारूड़ौ चंपा[4] रौ फूल जी ॥ ४
भजी कांई सायधण रै सिर चूनड़ी
भोर पियाजी रै पचरंग पाग जी[5] ॥ ५
उठ राधा करो ने वधावणा
ब्रिजराज आयो छै मिजमान जी ॥ ६

राग – सारंग मूहर
ताल – चमक तितालो

आवां छां सम्भारा री रण रा मुजरै
रसराज मोहन मिळन जी तरस
रोक राखी छ इण लोक भ्रज रै मुजरै ॥ १

राग – सारंग मूहर[6]
ताल – चमक तितालो

घणां न दिनां सुं घर भाया री, म्हांरै छोटी रा गुमानीड़ा।
रसराज पहलै मिलाप रा विछड़ा
इतनी दरद म्हांरी देस[7] री म्हांरी[8] ॥ १

---

[1]मूहर नहीं। [2]साइनी। [3]कांई रैरा। [4]सांवरिया। [5]चंपे। [6]पाग जी। [7]'मूहर' नहीं। [8]'मूहर' नहीं। [9]देस री म। [10]मारी।

राग – सारग लूहर[1]
ताल – जलद तितालो

थारा वीरा नै समझाय म्हारी[2] नणदी ।
म्हा सू[3] झूठा कौल करै छै
नित रा पर घर जाय[4] ॥ १

राग – सारग लूहर[5]
ताल – जलद तितालो

रग भीना[6] राजवण झीणा राजाजी बुलावै ।
थे मद-छकीया री सेजा चालो
सनरा नै थारो चाव ॥ १

राग – सारग लूहर[7]
ताल – जलद तितालो

लीजोजी लीजोजी महाराज मुजरो म्हारो थे ।
रसराज इत गोकल बरसाणो
जो गुजरै सो सिर पर गुजरो ॥ १

राग – सारग लूहर[8]
ताल – जलद तितालो

अब मान पियरवा मोरे
मन केरी कहानी जो तू सुनै तो
सच है रसकराज की द्वाई तो कु ।
कोयलिया कै रग त्रिय मे देखो तोरै
घर तै निकसत ताको तोहि[9] को नित है ध्यान ॥ १

राग – सारग लूहर[10]
ताल – जलद तितालो

आए आए उमड मेघ वरण वरन कारे मिल लाल केसरिया ।
चमक बिजरिया मा, बूदै मद छूटी लो
फूली फूलो चहु ओर केतकिया ॥ १

---

[1]'लूहर' नही । [2]'म्हारी' नही । [3]म्हो म्हासू । [4]जाय म्हारी नणदी । [5]'लूहर' नही ।
[6]भीनी स ग । [7]'लूहर' नही । [8]'लूहर' नही । [9]तूही । [10]'लूहर' नही ।

राग – सारंग सूहर[1]

ताल – चलद तिताली

आज फगवा रमण कू, सज सज आई व्रजबाला री।
रसराज इत सब हो व्रजनारी
उत मोहन मतवारा री ॥ १

राग – सारंग सूहर[2]

ताल – चलद तिताली

असो[3] केसो देख्यो री मा नद को लगरवा।
रसराज वहीयां[4] मुरक गई गोरीयां
चूरीयां[5] तरक गई सारी री तेरी ॥ १

राग – सारंग सूहर[6]

ताल – चलद तिताली

गरज घन चढ़े है अलबेले मा
नभे स्याम गगन में
सियरी छूटी है झीनी बूंद।
पिऊ आयो नहीं री नभे[7] रसराज
झनकत पंछी
रहूंगी सवन दाहूं[8] मूद ॥ १

राग – सारंग सूहर

ताल – चलद तिताली

नद का लगरवा मोहि डर लागे रे।
मै तो अमांणी रसराज कला कूं देख गई
तरह अनोखी जियरा जाग[9] रे ॥ १

---

[1]सूहर नहीं। सज सज आई व्रजबाला री आज फगवा रमण कूं। [2]सूहर नहीं। [3]ऐसो। [4]बहियां। [5]चुरियां। [6]'सूहर' नहीं। [7]नभ नहीं। [8]दौऊं। [9]'सूहर' नहीं। लगरवा। लागै।

राग – सारग लूहर[१]
ताल – जलद तितालो

पना हस बोल वे लाडलो छोटी रा पना[२] ।
कुज भुवन रसराज
मोहनो ताना नी ले लै
मुरली से ले गया मोल वे[३] ॥ १

राग – सारग लूहर[४]
ताल – जलद तितालो

पहले मुकलावे गयौ मेल री, कोई सावरौ मिळावै ।
रसराज उण बिन कळ नही निस दिन
होरी की सूझै कैसे खेल री ॥ १

राग – सारग लूहर[५]
ताल – जलद तितालो

फूली फूली नवल लाल
सरस सबज वारी
चढ देखौ अटरिया ।
हल कू बिदलिया हो
और मोरी सोस की लाल चुनरिया ॥ १

राग – सारग लूहर[६]
ताल – जलद तितालो

बसरी की तान सुनाय गयौ सावरौ ।
कुज भुवन रसराज आधी रैण कू री
मेरौ मन कर गयौ बावरौ ॥ १

राग – सारग लूहर[७]
ताल – धीमौ तितालो

सजनी कारे बादर आए
उमड घुमड चढ मेरे सिर पै नवेले ।

---

[१]'लूहर' नहीं । [२]बनो छ ग । [३]मै ग । [४]'लूहर' नहीं । [५]'लूहर' नहीं । [६]'लूहर' नही । [७]'लूहर' नही ।

तिन्हैं देख वन वन में बोलै मुरवा पपया
कोयल कूक मच्छ मेलैं ॥ १

राग – सारंग मूहर
ताल – कमत तिताली

सजनी नियरौ सावन आवै, बादर ध्याव
बोलै मुरवा मा मिळ बनू में।
त्यौं कछु कछु मिळी चपळा हु कैसी
चमके पिया के कहि घी सगनूं में ॥ १

राग – सारंग मूहर[१]
ताल – कमत तिताली

सामवा थारी सेजरिया में म्हांनै डर लागै हो[२]।
काई कहौ रसराज म्हे नही आणां साँवरा
नैंण उळझ रया नींदरियाँ मैं ॥ १

राग – सारंग मूहर[३]
ताल – कमत तिताली

साँवरे सुदर बिन यूं प्रीतल्यां कोई* तोरै री सयां।
रसराज मारवा कोयलिया बोलै
वन वन आंबा मोरै री ॥ १

राग – सारंग मूहर[४]
ताल – कमत तिताली

सांवरो बसै परदेस री कैसैं आऊं री कजरवा।
रसराज कर कूं महैदीया[५] गाऊं कैसें
सदाऊं लेव मेख री मैंना ॥ १

---

[१]'मूहर' नहीं। [२]'मूहर' नहीं। [३]म्हाने डर लागै हो सामवा थारी सेजरिया मैं। [४]'मु... । *कोई तोरै री न। [४]'मूहर' नहीं। [५]महदीमा।

राग – सारंग लूहर[1]
ताल – जलद तिताली

सावरी वेदरदी प्रीत लगाकर[2] भूल्यौ री मोहो।
रसराज ग्रे मतवारे दिन जावे
वन बन केसू फूल्यौ री ॥ १

राग – सारग लहर[3]
ताल – जलद तिताली

सुन प्यारे बात हमारो
राखै ना मोरा जिया।
मोहि सम वोहती है, लख जुरवा
तोसा तू ही पीया ॥ १

राग – सारग लूहर[4]
ताल – जलद तिताली

सुन मा बोल रहे है
मुरवा कोयलिया
बन मे फूली लता नई री
मितवा नहो हैं घर सुख की चीज सब
दुख-दायक मई री ॥ १

राग – सारग लूहर
ताल – दीपचदी

इन नैनन[5] का मोरे राम जादू लग गया।
जादू लाग्या वैदे मिटावै[6]
नैनू दा दुहेला कांम ॥ १

राग – सारग लूहर
ताल – दीपचदी

ठाढी का देखै परदेसी तू कर खात।

---

[1] 'लूहर' नहीं। [2] लगाय कर। [3] 'लूहर' नहीं। [4] लूहर नहीं। [5] नैंन ग। [6] मिलाव।

सांवन कळस भरे जळ सिर प
पनिहारन की पांत ॥ १
मन सौं मन मिळे तब तेरी
हो रही माननी की भांत।
रसीलाराज तब राग पिछांनी
बजन लगी जब तांत[1] ॥ २

राग – सारंग सूहर
ताल – चौपचंदी

मनदीया कौन सुनें कासु कहियै।
रसराज आयो फागन मतवारो
सांवरें बिनां क्यूं रहीये ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – चौपचंदी

मनदीया नंद को संगरवा न आयौ।
रसराज बहु अगन परजाळत
बैरी ओबन तन छायौ ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – चौपचंदी

लाला ऐसी भर पिचकार[2] न मारौ।
रसराज चूंनर भीजगीं निवारो
मांख अबीर न डारौ ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – चौपचंदी

ससरिया काहे कूं व मोय गारी।

---

[1] ताप क। [2] पिचकारी मारी। मोहि।

रसराज मोहन लग्यो मन न रहु
लख समसेरन मारो ।। १

राग – सारग लूहर[१]
ताल – धीमो तितालो

आली[२] अवा अवा कोयल बोली, सिखरा नाचै मोर
काई कमळ कमळ पर भवरा डोलै फूली मा वसत[३] ।
फूली छै वसत नवेली
तू क्यू कुमळी जाय ।
काई सरस सनेही घर मित, न
आयो दीसै धण री कत ।। १

राग – सारग लूहर[४]
ताल – धीमो तितालो

चपला री छाया[५] पना मारू चालोनै रमणनै ।
हरया हरया पात सुरगा किसलै
रसराज फूल छै सुहाया ।। १

राग – सारग लूहर[६]
ताल – धीमो तितालो

नैणा री वाता, प्रीत थे लगाई पना मारू जी ।
रसराज नैण नादाणा लग जावे
दोहिलो मन नू निभाता ।। १

राग – सारग लूहर[७]
ताल – धीमो तितालो

म्हारै डेरै चालो नै छोटी रा भवर पना
अनत क्यू विलम रया छो[८] ।

---

[१]'लूहर' नहीं। [२]'आली' नही। [३]वसत। [४]'लूहर' नहीं। [५]छाहया। [६]'लूहर नही। [७]'लूहर' नही। [८]छोजी।

काईं र सिखलायें मालीजाजी थे
नई प्रीत लगाय पना, थोड़ा सा दिनां में विसर गया ॥ १

राग – सारंग मूहर
ताल – होरी री

मासक तेरी नदोयां गहरी' वरन हुई रे।
घस भाई लोक सरम विसार
क्यूं कर प्यारे उतरूली पार
रसराज विन मिले होसी ज्यांन खुई ॥ १

राग – सारंग मूहर
ताल – होरी री

भतर कलाळी तूं बतलादे हे
या दारूड़ी कोठे कोठे जावे छे मतवाळी।
इण दारूड़ी रा मनवार में मारू इस सा रमें
मोहि लीयो छै उण ज्यूं त्यूं विलमादे हे
या दारूड़ी कोठे कोठ जावे छ प्रोत जादो ॥ १

राग – सारंग मूहर
ताल – होरी री

हो हो पनाजी मब घर मावो
मब घर मावो म्हारा राज
मब घर मावो म्हांनै थांरो छै उमावो हो।
सिर पर मायो छ चोमासो पनाजी म्हारा राज
रसराज म्हारो कांई मन तरसावो हो ॥ १

राग – सिन्दूरी
ताल – दीपचन्दी

मर मर झारत मबीर गुलाल कुमकुमा
कसर रंग पिचकारी।

---

वैरी। चतुर। 'घब घर भावी नहीं।

एक बहार सोहत फाग न
दूजी वेस मतवारो ॥ १
गेंद गुलाब वहैत आपस मे
तक तक वारी वारी* ।
इत रसराज त्र जेस लाडलौ
उत ब्रषभान-दुलारी ॥ २

राग – सिन्दूरौ
ताल – दीपचदी

सज सज आवत है ब्रजनार खेलन कू
ससिवदनी अगनेनी ।
केसरिया सिर चीर वसती
फूलन गूथी वेनी[1] ॥ १
भूहा नैन नचावत सरसी
गावत कोयल बैनी ।
सोहै रसराज आखै अलसानी
जगी फागन की रेनी ॥ २

राग – सिन्दूरौ
ताल – होरी रौ

कन्हइया मोरे अनवट बिछवा समेत ल्यादे
मोरे पैरू कू रतन नूपरवा ।
फगवा मे खेलत वाजत नीकै
सौत का कलेजा जलाऊगी सुनाकै ॥ १
झीना झीना वाजना गूघरवा
होरा मोती पना उवा मे मानक लगादे
रसीलाराज पिय लट्टुवा भयौ जो तू
अपनै करन सौ वेसक पहरा दे ॥ २

---

*'गेंद' और 'तक' दोनों चरण नहीं । [1]वेनी ।

राग – सिन्दूरी
ताल – होरी री

सय्यां उयै दिन क्य[1] आवैंगे
जिन दिनन सांवरिया सौं[2] लागी लगन।
केसर क्यारी चमेली के बिरवा
दाख मंडप उलझावेंगे ॥ १
गुल माला गुल सेज सुनावेंगे।
रसीलाराज पिय ल्यावेंगे कौल भर
गुनिय बसत बहार गावगे ॥ २

राग – सिन्दूरी
ताल – होरी री

हेरी मैं नाव न जानू, उवा की गाँव न जानूं[3]
को गोकुल बरसाना।
यूंही गुजरिया दोष लगावत
कौनसी राधा को कांना ॥ १
डारी गुलाल करी कछु हांसी
सब ही करत है जांन अमानां।
होरी के दिनन मेरा मनें हासि करौ
लिख दियौ है परवानां ॥ २

राग – सिवकी
ताल – जवद तिताली

नैणांदे निजारे नाल मोहि रांझणा वे
आड यमी हुण[4] जग सियाणाणी[5]
आंख लगो अब की पखतांणा नी।
रसराज यद चढा आसमान मैं
कुल आलम सिर चांनणा वे ॥ १

---

[1]अब कब। [2]सौं। [3]उवा की गाँव न जानूं नहीं। [4]कान्हा। [5]हुए। [6]सयाणाणी।

राग – सिंधडौ
ताल – जलद तितालौ

रांझे दी नाल मेरा कौल सयाणी ।
रसराज कसम नबी दी रब जाण दा
इस्क लगा किस डोल ॥ १

राग – सिंधडौ
ताल – जलद तितालौ

सावरा निमाणा सानू भूल गया वे
इस्क लगाय बेदरदी हुआणो
क्यू कर रहा सिखला नै गया वे ।
केई केई गला वताके[1] धिंगाणा*
सबज बाग दिखलाय गया वे* ॥ १

राग – सिंधडौ
ताल – जलद तितालौ

सावरैदा हमसे मिजाज केहा ।
रसराज मैं भी होती चपाहारे
जो जाणती उसमें लेहजा[2] भवरैंदा ॥ १

राग – सिंधडौ
ताल – जलद तितालौ

हो महीडावे जुलफा उलझी गोरै मुखडे सुलझाज्या[3] ज्यानी यार ।
रसराज तेरै वेषणै नू विरोही
निस दिन रंदी मुरझी उलझी ॥ १

राग – सिंधडौ
ताल – धीमौ तितालौ

अणवट मू न गही[4] मा
विछिया री धुन सुण[5] कर कै, लाडलै री सेझां

---

[1]वतलाके । *-*ये दोनो चरण ग. मे नही । [2]लहजा । [3]जा । [4]गई । [5]सुण सुण ।

मलवेली रग भरी रग री, राजकवर मारवी रै।
लपक छ लक कमर री
मचक रह्यौ छै पिलग मलवेलौ।
झण झण झमक रही छ पायल
मत मत मोल पियारीजी रा
नाजी नाखी सरह्रदार, इतनां जखम कपोल अधर कुच प
वेसर बांक दाग चुनड़ी र ॥ १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमी तितालौ

राज म्हारी मांनौ छोटी रा भंवर[1] आलीजा जी हौ।
इतनी अरज रसराज सुर्णौ सायबा
म्हूं तो सारी विध थांसूं राजी बनरा जी हो ॥ १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमो तितालौ

आ मिलक आणां दोस्त, तेरा क्या जाता।
रसराज तूं नहीं आता
मेरा दिल दुख पाता ॥ १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमी तितालौ

दैं दी वे सरसी भर भर प्याल
सैं दा सांवरा ओरतरां की मजा वे स्याणां।
रसराज इस्कां दी गलां आंण गए
वे विसमादे गांर्णे वालें ॥ १

---

[1] भवरजी म।

राग – सिंधड़ौ

ताल – धीमौ तितालौ

सावरे नु मिलादेणी कोई सइया
उस विन वेकल रंदीया मे।
वेप वेष मुख पाणी नी पीती
रसराज हुश्रे दिन के विछरे नू ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

आज की अनोखी तयारी मोरी[1] राधे।
भूहा बक तणी छे कबाण[2] सी
मन अग द्रग सर साधे ॥ १
चंपा चीर ओढण[3] अलबेला
अगीया कसन छिब[3] साधे।
रसराज मोहन लटवा होसी[4]
जुलफ जाळ बिच वाधे ॥ २

राग – सोरठ

ताल – इकौ

काहे कू अखिया[5] लगाई नटनायक[6]।
समज[7] मिजाल[8] रूप मन मोह्यौ
मिळी[9] विछरे दुखदायक[10] ॥ १
तुम बाके सूधौ मन मेरौ
बदी नही किसु[11] लायक।
जोबन[12] जिहाज बचे रसराज
या प्यारा जो होय सहायक ॥ २

---

[1]म्हारी। [2]कबाना ग। [3]ओढणी। [3]छव। [4]हो ग। [5]अखीयां। [6]हो नन्द-नायक। [7]समझ। [8]मिजाज ख ग। [9]मिल ख ग। [10]दुखदाय। [11]किसू। ख ग। [12]जोव।

अलबेली रग भरी रग री, राजकंवर मारवी र।
लचकै छ लक कमर री
मचक रह्यौ छ पिलग अलबेलौ।
झण झण झमक रही छ पायल
मत मत मोल पिआरीजी रा
माजी माजी सरहदार, इतनां जखम कपोल अधर कुच पर
बेसर वांक दाग चुनडी र ।। १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमी तिताली

राज म्हारी मांनौ छोटी रा भंवर' आलीजा जी हौ।
इतनी अरज रसराज सुणौं सायबा
म्हैं तो सारी विध थांसूं राजी वनरा जी हौ ।। १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमी तिताली

आ मिलके जाणां दोस्त तेरा क्या जाता।
रसराज तूं नहीं आता
मेरा दिल दुख पाता ।। १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमी तिताली

दें दी वे सरसी भर भर प्याला
लैं दा सांवरा औरसरां की मजा वे स्याणां।
रसराज इस्कां दी गमां जांण गए
वे विवसादे गांणें बामे ।। १

---

भवरजी म।

राग – सोरठ

ताल – इकौ

लगी छै म्हानै साहिबा मिळण री उम्मेद ।
आठ पहैर[1] इक सार अनोखा
विरह बाण रह्या वेध ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

वनाजी थारै[2] सैहरियै रग लाग्यौ[3] ।
गूघटड़ै रग लाग्यौ मारवण रै
और रग नेहरियै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

बादरिया तू मत बरसौ[4] मेरौ पियरवा विदेस ।
ऊन विन रसराज आज
ह्वै गयौ वैरी केस केस ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

कन्हइया[5] चुन चुन कलिया ल्यावै[6]
राधा गूथत चौसर नौसर[7]
पहरै आप पहरावै ॥ १
भवर मस्त भए लुटत पराग मैं
पुष्प[8] कै धोखै[9] कर मे चल आवै ।
रस लूटत रसराज वसत कौ
दोऊ सुख मे न समावै ॥ २

---

[1]पहर। [2]थ्हारै। [3]लागी। [4]वरसै ख ग। [5]कहनईया। [6]लावै। [7]'नौसर' नहीं। [8]पुष्पन। [9]धोखै ग।

राग – सोरठ

ताल – इको

गुमानीड़ा कहीं समासे न* जा ।
पणघट बाग बगीचे सांवळ
आवे तौ सब' मत' जा ॥ १
सरह किसू के जिय लग जासी
इसमी अरज म्हांरी मान जा ।
सांवळीया रसराज सिरोमण
मांहो रहजा गळ लग जा ॥ २

राग – सोरठ

ताल – इको

पना म्हांसु बोलो क्यूं ने राज, मासीमा बोलो क्यूं न राज
पिमारा प्रीतम किण सिखलाया थांनै सैना ।
निजर न मेळो छाती छोलो
मसा सकसो कांई तोलो ।
रसराज मीरां री साथ नित डोलो
म्हांसु' दिस री नहीं सोलो ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इको

पना म्हांसु रूठड़ा जावे जी
हो सम्या म्हारी कोई समझावे उवांनै जाय ।
नैणां रा अंजन ज्यूं लागे छा
हार हिया रा दिखलावे छा ।
रसराज म्हें मय क्यूं कर मनावां १
कांई जांणां कुण सिखलावै
कांई जांणां कुण भरमावै ॥ २

---

मन । [2]तम । नहिं । [4]म्हारा न । समझावे ।

राग – सोरठ

ताल – इकौ

लगी छै म्हांनै साहिबा मिळण री उम्मेद ।
आठ पहैर[1] इक सार अनोखा
विरह बाण रह्या बेध ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

बनाजी थारै[2] सैहरियै रग लाग्यौ[3] ।
गूघटडै रग लाग्यौ मारवण रै
और रग नेहरियै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

बादरिया तू मत बरसौ[4] मेरौ पियरवा विदेस ।
ऊन विन रसराज आज
ह्वै गयौ वैरी केस केस ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

कन्हइया[5] चुन चुन कलिया ल्यावै[6]
राधा गूथत चौसर नौसर[7]
पहरै आप पहरावै ॥ १
भवर मस्त भए लुटत पराग मैं
पुष्प[8] कै धोखै[9] कर मे चल आवै ।
रस लूटत रसराज वसत कौ
दोऊ सुख मे न समावै ॥ २

---

[1]पहर। [2]म्हारै। [3]लागौ। [4]वरसै ख ग। [5]कहनईया। [6]लावै। [7]'नौसर' नहीं। [8]पुप्पन। [9]धोकै ग।

राग – सोरठ
ताल – इकी

वैरागण कर गयो स्याम सनेही ।
उण विन मनस नही मन मामै
हो रही देह बदेही[1] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – इकी

सांवरीया[2] जाती है वेस बहार ।
जमना तीर कदम की छांही
निस दिन कीजे विहार ॥ १
जे[*] वसंत बहार के दिन ए
हरे फूल हरी डार ।
तामें मन की महरम कर लु
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – इकी

नजाकत नैंणांदी[3] या वे
अणी क्या खूब नजर की नाजो ।
मूंहां दी वांक पांनूं दी लाली
मिसी सोहैं सोहैं गुलाबी ।
या रीझै नाम मोही गई रसराज
परी कोई जग बयासी दी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – पांठ चौताली

भंवरा क्यूं चल आयो बाडी म्हारी
नवली वेलड़ी मपट रमी रे सूं भूठा ।

---

[1]विदेही ख म । [2]सांवरिया । [*]दूसरा पद नहीं है ख प । [3]नैणां दिया म । यह पद पूरी नहीं है ।

लेसी सवाद कठासू वटाऊ
रखवाळै भी नही पायौ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चौतालौ

उमड आई री मा ।
कारी घटा चमकन लागी
बीज बुंद सुहावनी झर ल्याई ।
इंद्र धनुसि[1] रतनाए सुहाए
लाल पीरे मेहु दसू दिसा छाई ॥ १
हरी हरी भूम पै विरछ वेली लपटाई
मुरवा कोयलीया[2] की धुन[3] मन भाई ।
रसराज या समै घर आयौ सावरौ
आवन मे जोबना को धूं वधाई ॥ २

राग – सोरठ
ताल – चौतालौ

चंचल भूह चढाय नचाय नैन
चद्र-जोत वदन अदु मदहास हस हस
दुपटै कसन की नवेली छिब कैसी कहु
अलवेली पाग[4] के सवारे पेच कस कस ॥ १
मुरली की धुन मे तान* लै लै रसभरी
समज[5] सनेह मनमथ जोबन रस रस ।
रसराज ग्रैसी अनोखी दिखाउ लीला
कियौ राधे लाडली कौ लालन मन वस वस ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

अब घर आवौ नै विदेसी वालम
सिर पर आयौ छै[6] चौमासौ सायवा ।

---

[1]धनू सीह । [2]कोयलिया । [3]धुनि । [4]पाघ । *ताना लै लै ताना रसभरी ग । [5]समझ । [6]न ।

राग – सोरठ
ताल – इकी

बैरागण कर गयो स्याम सनेही ।
उण बिन प्रनस नहीं मन सागे
हो रही देह वदेही'[1] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – इकी

सांवरीया[2] प्याती है वेस महार ।
जमना तीर कदम की छांही
निस दिन कीजे विहार ॥ १
जै[*] वसंत महार के दिन ए
हरे फूल हरी डार ।
तातें मन को महरम कर सु
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – इकी

मत्राकस नैणांदी[3] या वे
भणो क्या खूब नजर की नाजो ।
मूहां दो पांक पानूं दी मासी
मिसी सोहै सोहै गुलाबी ।
या रोके नास मोही गई रसराज
परी कोई अग समासे दी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – पाठ चौताली

भंवरा क्यूं चल आयो बाडी म्हारी
गमसी बेसडी सपट रमी रे तूं झूठा[*] ।

---

[1] विदेही क म । [2] सांवरिया । [*] यह पद नहीं है क म । [3] नैसा दिया म । [*] यह पंक्ति पूरी नहीं है ।

लेसी सवाद कठासूं वटाऊ
रखवाळै भी नही पायी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चौतालौ

उमड आई री मा।
कारी घटा चमकन लागी
बीज बुद सुहावनी झर ल्याई।
इद्र धनुसि[१] रतनाए सुहाए
लाल पीरे मेहु दसू दिसा छाई ॥ १
हरी हरी भूम पै विरछ वेली लपटाई
मुरवा कोयलीया[२] की धुन[३] मन भाई।
रसराज या समै घर आयौ सावरौ
आवन मे जोबना को यू वधाई ॥ २

राग – सोरठ
ताल – चौतालौ

चंचल भूह चढाय नचाय नैन
चद्र-जोत वदन अरु मदहास हस हस
दुपटै कसन की नवेली छिव कैसी कहु
अलवेली पाग[४] के सवारे पेच कस कस ॥ १
मुरली की धुन मे तान* लै लै रसभरी
समज[५] सनेह मनमथ जोबन रस रस।
रसराज अैसी अनोखी दिखाउ लीला
कियौ राधे लाडली कौ लालन मन वस वस ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

अब घर आवौ नै विदेसी वालम
सिर पर आयौ छै[६] चौमासौ सायबा।

---

[१]धनू सीह। [२]कोयलिया। [३]धुनि। [४]पाघ। *ताना लै लै ताना रसभरी ग। [५]समझ। [६]न।

राग – सोरठ
ताल – इकी

बैरागण कर गयो स्याम सनेही।
उण विन प्रनस नहीं मन लागे
हो रही देह बदेही[1] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – इकी

सांवरीया[2] आती है वेस वहार।
जमना तीर कदम की छांही
निस दिन कीजे विहार ॥ १
[3] वसंत वहार के दिन ए
हरे फूल हरी डार।
ताजे मन को महरम कर तु
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – इकी

नआकस मैणांदी या वे
प्रणी क्या खूब नजर की नाजो।
मूंहा दी वाक पानूं दी लाली
मिसी सोहैं सोहैं गुलाबी।
या रांझ नाल मोही गई रसराज
परी कोई जग सयालै दी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – मांठ चौतालो

मंवरा क्यूं चल आयो वाकी म्हारी
नवली बेसड़ी सपट रयौ रे तूं मूठा[5]।

---

[1] बिदेही स ब । [2] सांवरिया । [3] मुखड़ा पद नहीं है ख ब । [4] मैंणा किया प । [5] यह पंक्ति पूरी नहीं है।

पर नहिं मार सकै छै पारेवा*
अपछर देखण नै हुळसै ।
म्हं[1] परवार चाह कर आयौ
मान अरज तौ मिळण दै ।। २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

काई रस वरसै रसीली रात ।
लाजती उमगती पास खडी छै
गूंघट आलीजा रै हाथ ।। १
दारूडा री सीसी प्यालो सोवै
रमज समज री बात ।
सहेल्या सराहै सायधण चाहै
रसराज थारो साथ ।। २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

कामणगारा नैणां री मारवण
म्हारौ मारूडौ मोहि लियौ ।
रसराज इण गौनै री चूनडी
थोडा सा दिनां में काम कियौ ।। १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

केसरिया चमकै चीर
जरी रा पला रौ जी ।
रसराज रैण अधेरी मे अनोखो
चानणौ छाप छला रौ ।। १

*परेवा । [1]सह ख ग. ।

घर घर गोरी सिंगार साजे छ
तीज रो बगीचो छ' समासो ॥ १
लोक विदेसां सूं घर आव
सदा विरह्यां रो पासो।
रसराज दूर सूं आय करोला
म्हारे महला रणवासो ॥ २

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालो

आज स्फळावो न पना म्हांन पीहरिय।
मन भुलाई छे कास मिळण नैं
गवरल री छ तिंवार ॥ १
इस्वर गवरल आगै पूज्या
पाया पे सिरदार।
आज्यो उठ ही रसराज किपाकर
रग रसीया' रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालो

ई मिस रका नैं मोहि कु दान दे।
कहै नी मा'मोरी बाबा नैं इण सुभ दिन
याकी लैर मोहि जान दे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालो

क्यूं रे मलवेली रा देखण दे
म्हैं तौ तक आई छो थारी सायघण नैं।
रूप वेस गुण भरी छो सुणी छ
मानवत्यां में मुख ॥ १

---

म। रसिया … ग। कहूँ नी मा।

पर नहिं मार सकै छै पारेवा*
अपछर देखण नै हुळसै ।
म्हे[1] परवार चाह कर आयौ
मान अरज तौ मिळण दै ।। २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

कांई रस वरसै रसीली रात ।
लाजती उमंगती पास खडी छै
गूघट आलीजा रै हाथ ।। १
दारूडा री सीसी प्यालौ सोवै
रमज समज री बात ।
सहेल्या सराहै सायधण चाहै
रसराज थारौ साथ ।। २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

कामणगारा नैणां री मारवण
म्हांरौ मारूडौ मोहि लियौ ।
रसराज इण गौंनं री चूनडी
थोडा सा दिनां मैं काम कियौ ।। १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

केसरिया चमकै चीर
जरी रा पलां रौ जी ।
रसराज रैण अंधेरी मे अनोखो
चांनणौ छाप छला रौ ।। १

---

*परेवा ।   [1]सह ख ग.।

राग – सोरठ

ताल – बजद तितालो

केसरिया रग रो चीर पलुड़ा जरी रा जी ।
रसराज चिप चिप सार जरी रा
मोहै मोहै भूल परी रा ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बजद तितालो

छोटी रा गुमानीड़ा चूंई रंग लाग्यो छै
महलां न पधारो जी ।
रसराज भाज तिवार गमर री
सायधण सेजां न बुलावै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बजद तितालो

मदगारी राधा झुक झुकती सी वेसर री झोली ए ।
मोहि लीयो छै व्रजराज सांवरो
उड़[1] साळुर गूंघट री झोलो[2] ॥ १
चंदवदन अगमीम लोयनी
चढ़तै जोबनियां को सोलो ।
मब तौ मुकर रसराज नैंणां रो
मन कै मोहन मैं दे महोलो[3] ॥ २

राग – सोरठ

ताल – बजद तितालो

दुपटै[4] री झालो भजी महाराज ।
इण नै दुपटा रै झाल साहबा[5]
मनड़ौ कियौ छै मतवाळो ॥ १

---

[1]र । [2]झोलो ए । [3]महोलो ए । [4]दुपटा ब । [5]सायबा व साहिबा ।

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

नीकी लाजो जी पनाजी म्हारै नथ ढुलडी ।
रसराज सूरत रा मोत्या सु पुवाई
सबज पना सु जडी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

नेहडलो दुनिया बीच इक सरसा रो जी ।
रसराज मेळ वण्यो चाहीजै
रूप समज वरसा रो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

बतळावै कोई लसकरिया केसरिया[२] वालम राज
ऊठ रही लहर ब्रह[३] री अब तो
लोप गई कुळ लाज ॥ १
उवा सूरत उणिहार विसर गई
विसर गई सारो घर काज ।
रसराज आरत बंदी लाडली नै
आय मिळै रसराज[४] ॥ २

राग – सारंग लूहर
ताल – जलद तितालो

बाजूबंद गैरोजी[५] गूघटडो
मगज करै छै म्हारा राज ।
पैला[६] दिन री लजीली रात नै
माफ करो तकसीर ॥ १

---

[१]इसक रसारो जी । [२]केसरीया । [३]विरह ख ग । [७]लाडनी नैं ग । [४]ब्रिजराज ख, नजराज ग । [५]गहरोजी । [६]पहला ख, पेला ग ।

राग – सोरठ

ताल – कमद तितालो

केसरिया रग री चीर पसुश जरी रा जी ।
रसराज विष मिष सार जरी रा
मोहै मोहै फूल परी रा ॥ १

राग – सोरठ

ताल – कमद तितालो

छोटी रा गुमानीडा छूड़ रग लाग्यो छै
महला नै पधारो जी ।
रसराज म्राज तिवार गवर रो
सायधण सेजा मे झुलावै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – कमद तितालो

छदगारी राधा झुक झुकती सी वेसर री झोलो ए ।
मोहि लीयो छे ब्रजराज सावरो
उड़[1] साळुर गूंघट री झोलो[2] ॥ १
चदवदन मृगमीन - लोचनी
चढ़ती जोबनियां की लोलो ।
मन सौ मुकर रसराज नैणा रो
मन के मोहन ने दे महोलो[3] ॥ २

राग – सोरठ

ताल – कमद तितालो

दुपटे[4] रो झालो भजी महाराज ।
इण नै दुपटा रे झालै साहबा[5]
मनड़ो कियो छे मतमाळो ॥ १

---

[1] चर । [2] घोलो ए । [3] महोलो ए । [4] दुपटा क. । [5] धायणा क साहिबा क

मोहित हुई थारी सूरत ऊपर
मिट गई उवैं सू लाज ॥ १
लाज उमंग भरी सायधण री
हस कर गूघट खोलौ ॥ २
आय रह्यौ छै सुख नै सनेह रौ
सरस पवन रौ झोलौ[1]।
रसोलाराज अब ल्यौजी सोरठ रौ
माझल रेण रा महोलौ ॥ ३

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

मोही मोही सायबा नैणा रै निजारै
आई जला[2] थारै बूबन मुजरै
होर ज्यु सहर हजारै ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

या कोयलडी कौठै* बोली मा।
आधी रात सघन वाड़ी रा
अबवा की डारी डारी डोल ॥ १
इणनै वसत रा सुगध पवन मे
पाख पाख झकझोल।
नई व्याही[3] किणीयक विरहण री
वैरण छाती छोल ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

यौ वरज्यौ नहि मानै री।
हठीलौ लाला, सारी रैन[4] रह्यौ रूस सया।

[1]झैलौ ग.। [2]जल्ला। *कारै ग.। [3]व्याई। [4]सा रैंन ग.।

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

म्हांन ल्याय[1] दीजो महाराज
मोलीला मौसर नैं ।
रसराज माणक मोहन माला
मोर पना नौसर[2] नैं ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मारू सब मायो है मा
दे[3] सोती नादान ।
झळकै भाल रसी मुख झिलकै[4]
निपट लागणी छै मान ॥ १
चलण बोलण में चमक समज री
किसो छै सुहाणी मे मान ।
रसराज मोहन सिर रो सेहरो
वाल्हा[5] म्हारो मिजमान ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मिलण रो मारू म्हांनै चाव
मिलण री[6] प्यारा म्हांनै चाव ।
नित मिलणो किण रीत होय सौ[7]
आप बतावो मैं[8] उपाव ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मग नी[9] बोलैबो बोलो महाराज ।

---

[1] लाय । [2] मौसर । [3] दे अंक म । [4] झलकै । [5] वाली म., वाल्हो म । [6] रौ नहीं । [7] हौसला । [8] मन । [9] भूपनैसी म मुनामैसी म ।

मोहित हुई थारी सूरत ऊपर
मिट गई उवै सू लाज ॥ १
लाज उमंग भरी सायबण री
हस कर गूघट खोली ॥ २
आय रह्यौ छै सुख नै सनेह री
सरस पवन री झोली[1] ।
रसीलाराज अब ल्यौजी सोरठ री
माझल रैण रा महोलौ ॥ ३

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

मोही मोही सायबा नैणा रै निजारै
आई जला[2] थारै बूबन मुजरै
हीर ज्यू सहर हजारै ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

या कोयलडी कीठै[3] बोली मा ।
आधी रात सघन वाडी रा
अवबा की डारी डारी डोल ॥ १
इणनै वसत रा सुगध पवन मे
पाख पाख झकझोल ।
नई व्याही[4] किणीयक विरहण री
वैरण छाती छोल ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

यौ वरज्यौ नहि मानै री ।
हठीलौ लाला, सारी रैन[5] रह्यौ रूस सयां ।

[1]झैलौ ग । [2]जल्ला । [3]काठै ग । [4]व्याई । [5]सा रैन ग. ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

म्हांनै स्याय[1] दीजो महाराज
मोतीड़ा नौसर नैं।
रसराज मांणक मोहन माला
मोर पना नौसर[2] मैं॥ १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

म्हारू सज आयो है मा
वै[3]सोठो मादान।
झळकें भाल रती मुख झिलकें[4]
निपट लागणी छै प्रांन॥ १
चलण बोलण मैं चमक समक रो
किसी छै सुहाणी प मान।
रसराज मोहन सिर रो सेहरो
माल्हा[5] म्हारो मिजमान॥ २

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

मिलण रो मारू म्हांनै चाव
मिलण रौ[1] प्यारा म्हांनै चाव।
नित मिलणौ किण रीत होय सौ
आप बतावौ नैं[2] उपाय॥ १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

अग गी[1] बोलैपी बोलौ महाराज।

---

[1]लाय। [2]नौसर। [3]दे ल प। [4]झलके। [5]म्हाली प, बल्हो प। [1]रौ नही। [2]होवणा। [3]न। [1]मुमनेली प मुमानेली प।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

सांवणीया तू काई रग सरसै रे ।
चढी घटा विच विजळी चमकै
जळ बूदा बरसै रे ॥ १
वसन सुरगा रा चगा पलुडा[१]
पवन सु[२] पिया परसै रे ।
तीज रो रैण मिलण रगरसीया[३]
सराज मन तरसै रे ॥ २

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

सावणीया तू काई सुख दै छै रे ।
झूलरा झूलरा चंदावदनी
झूमर झूला लै छै रे ॥ १
लता विरछा सु लपट रही छै
सोरभ पवन वहै छै रे ।
रसराज दूर गया गोरचा नै
विछडयां सजन लहै छै रे ॥ २

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

सावळडा थे आज्यो जी मिजमान ।
सावळीया[४] दुपटा तन कसता[५]
नैणा मे अलसान ॥ १
अलवेलीया[६] सिर सावळ चीरा
रसराज माफल रैण री लेता
सोरठ री मुख तान ॥ २

---

पलूडा ख ग । [२]सू । [३]रगरसिया । [४]सांवळिया । [५]कसवा ग । [६]अलवेलिया ।

किसीय धिगांणी दिरायो मोळ
उण पर मैं मार रही मसूसैं ।
मैं मम ही न ऊयाप्यो[1] वपम मूं
मंदरायजी का सूंस[2] ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बजर तिताली

विदेसीड़ा मिळ मत जा ।
या तो वहार वणी छै रसीली
माभ की राती रह जा ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बजर तिताली

बेसर रो मोती ठमक रयो छै मोरा[3] राज ।
रसराज ठमक रै मिस सुं सुघर रयो
यांसु करै छै समजोती ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बजर तिताली

सायबा वे गया म्हांनें मर्णा रो महोलो ।
माय गयो सामबा किणीय[4] वखत रो
कोइयक सुख रो झोलो ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बजर तिताली

सावणीया बंगा मास पीव मिलासी रे ।
रसराज पपइया मोरला बोलै
बोम रमा वदिरासी रे ॥ १

---

[1]ऊपाप्यो म । [2]सुंस प [3]मह्र ब., म्हारा प । [4]किणांहि प ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारूड़ा जादुड़ा की कीया ।
रसराज थाई नै देख्या जीवा छा
व्हो[१] नायक अलवेलीया ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

रंग डारी हो लला मोरी चुनडीया[२] ।
बुंद बुद[३] और मोर पपईया
एकमेक की मारी[४] ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

वालम का नेहरवा सजनइया[५] मोरी
पल पल मे मोहि कु याद आवै री ।
यौ नातौ[६] रस रीत प्रीत कौ
ज्यू लौ सजनी काचौ वेहरवा ।
आन मिळै रसराज मोहन अब
झुक झुक कै ज्यू सावन का मेहरव ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो व्रज[७] चद प्यारे नैना तो उनीदे चक मतवारे[८] ।
डगमग चरन धरत भुव भारे
बीतत रयण पधारे ।। १

---

[१]वहो ख ग. । [२]चूनरीया । [३]बूद वूद । [४]सारी । [५]सजन इहां ख । [६]न्यातो ग ।
'रस रीत' से लेकर 'आन मिलै' तक ग मे नहीं । [७]व्रिज ख । [८]चमकत वारे ग ।

राग – सोरठ

ताल – कसद तिताळो

सांवळीया छैला नैंण लगा कैं जादुड़ा कर गया वे ।
रसराज मोहन[1] बेदरदी
सो थोड़ा सा दिनां में विसर गया वे ॥ १

राग – सोरठ

ताल – कसद तिताळो

सैणां मे संदेसो कोई ले जाय म्हारी सजनो
थासा मिलण री लगन ग्रस लागी[2] म्हांने ।
रसराज उवासुं मिल्यां विना न सरै
मणद यामीजो नुं जताये नो सजनी ॥ १

राग – सोरठ

ताल – कसद तिताळो

सोहैं दारूड़ीरा ये छाकया नैंण ।
रूप मिजाज भरया मसमसा
सरसी मांझल रण ॥ १
मोह्[3] मिया नई गोरयां रा मन
बरण्यां न आवै वैंण ।
सांवळड़ा रसराज सिरोमण
वाल्हा[4] लागे छ सैण ॥ २

राग – सोरठ

ताल – कसद तिताळो

हो मसवेमीया[5] म्हारे गळ लागो जी ।
रसराज थोड़ी सी रैण रही छै
दारूड़ी रा छाकया मत दी जागी जी ॥ १

---

[1]विजमोहन ब ब्रजमोहन प । [2]लागी नहीं न । [3]मोहे प । मोहि । [4]सांवलिया [5]वाला । [6]मसवेलिया ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारूडा जादुडा की कीया।
रसराज थाई नै देख्या जीवा छा
व्हो[1] नायक अलबेलीया ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

रग डारी हो लला मोरी चुनडीया[2]।
बुद बुद[3] और मोर पपईया
एकमेक की मारी[4] ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

वालम का नेहरवा सजनइया[5] मोरी
पल पल मे मोहि कु याद आवै री।
यौ नातौ[6] रस रीत प्रीत कौ
ज्यू तौ सजनी काचौ वेहरवा।
आन मिळै रसराज मोहन अब
झुक झुक के ज्यू सावन का मेहरव ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो व्रज[7] चद प्यारे नैना तो उनीदे चक मतवारे[8]।
डगमग चरन धरत भुव भारे
बीतत रयण पधारे ।। १

---

[1]यहो ख ग.। [2]चूनरीया। [3]बूद बूद। [4]सारी। [5]सजन इहा ख। [6]न्यासो ग। 'रस रीत' से लेकर 'आन मिलै' तक ग मे नहीं। [7]ब्रिज ख। [8]चमकत वारे ग।

राग – सोरठ
ताल – जलद तिताली

सांवळीया छैला नैण लगा कैं जादुड़ा कर गया वे ।
रसराज मोहन[1] बेदरदी
सौ थोड़ा सा दिनां मैं विसर गया वे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तिताली

सैणां नैं संदेसौ कोई ले जाय म्हारी सजनी
थाला मिलण री लगन प्रत लागी[1] म्हांने ।
रसराज उवासूं मिल्यां बिना न सरै
नणद बाबीजी सूं जताय नां सजनी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तिताली

सोहैं[1] दारूडीरा वे छाकया नैण ।
रूप मिजाज भरया मसवैसा
सरसो मांभळ रैण ॥ १
मोह्[1] लिया नई गोरयां रा मन
बरण्यां न आवै बैण ।
सांवळका[1] रसराज सिरोमण
वाल्हा[2] लागै छ सैण ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तिताली

हो मसवेसीया[1] म्हारै गळ लागी जी ।
रसराज थोड़ी सी रैण रही छ
दारूड़ी रा छाकया मत तो जागी जी ॥ १

---

[1]ब्रिजमोहन क ब्रजमोहन ख । [1]'लागी' नहीं ख । [1]सोहे ख । [1]मोहि । [1]सांवळया ।
[2]वाला । [1]मसवैसिया ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारूडा जादुडा की कीया।
रसराज थाई नै देख्या जीवां छा
व्हो[1] नायक अलबेलीया ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

रग डारी हो लला मोरी चुनडीया[2]।
बुंद बुद[3] और मोर पपईया
एकमेक की मारी[4] ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

वालम का नेहरवा सजनइया[5] मोरी
पल पल मे मोहि कु याद आवै री।
यौ नातौ[6] रस रीत प्रीत कौ
ज्यू तौ सजनी काची वेहरवा।
आन मिळै रसराज मोहन अब
झुक झुक कै ज्यू सावन का मेहरव ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो व्रज[7] चद प्यारे नैना तो उनीदे चक मतवारे[8]।
डगमग चरन धरत भुव भारे
बीतत रयण पधारे ।। १

---

[1] वहो ख ग.। [2] चूनरीया। [3] बूद बूद। [4] सारी। [5] सजन इहां ख। [6] न्यातौ ग।
'रस रीत' से लेकर 'आन मिलै' तक ग मे नही। [7] बिज ख। [8] चमकत वारे ग।

राग – सोरठ

ताल – त्यौरी

मनमोहनां छिनक में मुरली अधर लगाय कै मन ले गयो।

जमुना तट बंसीवट निकट

नटवर को भेष बनाय कै दुख दे गयो* ।। १

राग – सोरठ

ताल – दीपचंदी

म्हांरा मारूजी नें मनाय सौत¹ सहेलड़ी।

पहली बिछोहो क्यूं कर निसरै

साले छै दिन रात प्रीत नवेलड़ी ।। १

अजी म्हांनें वालमजी² रा सूं छै

घणोमन नीसरै।

रही सूरत दिल ठहराय

पल नहीं बीसरै ।। २

म्हें तो बिछड़या नैण लगाय

बेदरदी हो गया।

रहया परदेसां में छाय

किसी बिलमा लिया ।। ३

में नहीं करती प्रीत

जेहा जो जांनती।

सखी सांईन्या री सीख

मुकर'र मानती ।। ४

जा पर होय तो विदेस

उडांतु उड़ मिलूं।

---

*यह गीत म प्रति में पृ. २४ पर है। और दूसरा राग सोरठ ताल होरी पृ. २६ पर है। ¹सौत सं., राग म। ²बालम स्त्र।

कोई साथी होय लेजाय
अब ही सग चलू ।। ५
जोवन पवन झकोळसू* जी
लूव रही छै बेलडी ।
रसराज पहैली° प्रीत लगा नै[1]
छाडी छे किण तकसीर म्हानै अकेलडो ।। ६

राग – सोरठ
ताल – दीपचदो

मोरा बलमा बसत है बिदेस
नैनू नीदरिया गई ।
मुख तै प्यास छुव्या[2] गइ तन तै
ऊळझे सीस के केस ।। १
चलत कहा कहा रहत होयगी
का पै कौन विध कैसे हु बेस ।
दै है बेग रसराज सीख उहा
जो रिजवार[3] नरेस ।। २

राग – सोरठ
ताल – इको

होरी खेलै[4] मोहन मुरार ।
तक तक गेंद वहै आपस मैं
चदन कुमकुमै चलत पिचकार
रसीलाराज आनंद रह्यौ लग
रीझ रहैं बरसानै की नार ।। १

*झकझोरन सू ग । °पैहली ग । [1]लगाय नै । [2]छुवा ख ग । [3]रिझवार ग ।

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

अजी म्हारा पायल बिछीया बाजै
कैसें आवां साहिबा[1] सेज[2] ।
मूंदे घुघरू तो घूघरी चमकै
यौ तंत बिजळी साज ।। १
इक पग सेज[3] एक पग बारणै
थांरे मिलण क[4] काजै ।
रसराज कह्यौ सौ करां इत हित
उत लोक लाज मन लाज ।। २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

आज्योजी[5] मोलीड़ा बाळा ये ।
आठ पहोर थी रहै थांई मैं
अेकरसां बतळाज्यौ[6] थी ।। १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

माया म्हारा[7] साजण मनरा
छोटी सी घण संग लियां मां ।
चेहरा री जोत जगामग होतां
साथीड़ा रै साथे जीवन धण रा ।। १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

मासी म्हारी आलोजा नें स्यावै[8] समझाय ।

---

[1]सेज साहिबा क । [2]सेझ ब । [3]सेझ क । [4]रै क । [5]आवोजी ब । [6]बतळाव जो ब । [7]म्हारा प । [8]मारी ब [9]स्याम क ।

प्यारी रह्यौ किण ही उळगाणी रा
पेचा मैं उळझाय ॥ १

दिन दिन री लीला उण तन[1] री
निस दिन रही छै सताय ।
आय मिळै रसराज सावळ अब
रहुली गळ लपटाय ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

आलीजा जी हो[2] विसर गया
नेहड़ौ नैंणा रौ लगाय मारूड़ाजी हो ।
ऊंची नीची वाता कर कर सायबा
अनत थे जाय रया ।
ल्याता प्रीत जुगा[3] रा सहदा[4]
अब तौ थे हो गया नया ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

आलीजा म्हैं चाकर रहस्या[5]
अलवेलीया छैल थारा ।
वसीदार चाकर हुवै[6] स्या[7]
मनमानै सोई जद कैस्यां ।
म्हे भी तौ और न देखां
थानै न देखण देस्यां ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

क्यू समझायौ जावै
बाईजी थारौ मारू छै जो मतवाळौ ।

---

[1]दिन ख । [2]हो ग । [3]युगा ग । [4]सँधा ख । [5]रहसा ख. । [6]सा ख ।
[7]ह्वै ।

लोक लाज सब देखण लागया[1]
पेली दे दुपटा रो भालो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

कामणगारा नैणां मोही महाराज।
दांवण गह्यो छे कंठ लगाय लीजो
सुख दीजो श्री सिरताज ॥ १
बहोत अजाळू या घण तो भादान छ
रखे जुदाई दिखलावो न राज।
रसराज बचाय[2] लीजो खेवटीया
जोबन करी या जिहाज ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

किण सारयो है अजन मारबो
पणियाळा यां नैणां मांय।
सखी सुहागण चगा ने हाथ सु[3]
गैरा दरपण री छांय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

कौठ चाल्याश्री सोभी पनला
बीबी बाई रा बासा* पीव।
दुण* मेहरसे रो महलायत रै
किसीयक री छ नींव ॥ १
रसीलाराज कस्यां मे मनावो
तुटयां मे राखो सींव*।

---

[1]लाग । लीजो बचाय ख प । [3]लू । *चाल्यो है ख प । बालमराज प ।
***दूण— राखो सींव' तक ख प में नहीं ।

घडीयक मुखडो दिखाय सुहेली[१]
छानो मार दे जीव[२] ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

चालो चालो सहियां म्हारी सांवरे री लेर।
प्यारो गयो कही विरह बेदरदी
खोजल्या ने उवा रा सूधा पैर ।। १
वन वन कुंज कु गिरवर सोधा
सोधा नद नदीया री नेर।
रसराज उण सावरे विन उठ रही
विरह[३] जोवनीया री लेर[४] ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

जोबनिया री जोरी[५] छै जी म्हारा राज
नेण भळक्यो नेहरी तोरी।
थारे मिळण विन जी म्हारी दोरी
रसराज थे मत[६] म्हासु दिल मत चोरी ।। १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

झूठी ना करो में[७] तो थारी
काई तकसीर करी छै सायबा गुमानीडा।
म्हासू झूठ साच औरा सु
देख्या में कही[८] दिस जाता ।। १

---

[१] 'सुहेली' नही ख, अलबेलिया ग। [२] जी ख ग। [३] मिरह ग। [४] लहर ख। [५] जोरो। [६] ख में नही। [७] म्हे ख। [८] काई ख।

लोक लाज भय देखण लाग्या[1]
पेली दे दुपटा री झाली ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तितालो

कामणगारा मणां मोही महाराज।
दावण गही छ कंठ लगाय लीजो
सुख दीजो जी सिरताज ॥ १
बहोत लजाळू या घण तो नादान छ
रसे जुदाई बिसलावो मै राज।
रसराज बणाय[2] लीजो खेवटीया
जोबन करी या जिहाज ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमी तितालो

किण सारयो हे अजन मारवी
मणियाळा यां नैणां मांय।
सखी सुहागण चंगा में हाथ सु[3]
गैरा दरपण री छांम ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तितालो

कीठे थाल्याजी लोभी पनसा
जीवो बाई रा वाला[4] पीव।
इण[5] नेहरले री महलायत र
किसीयक दी छे नीव ॥ १
रसीमाराज रूस्यां ने मनावो
सूटपां में राखो सींम[*]।

---

लागा। लीजो बणाय क म। [3]सूं। [4]वास्ती ै क म। बालमराज म।
**इस— राखो सीम' छ क प में नहीं।

साचौ कियौ थे पना बोल आगलो
हिय रो भाव मुख माय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितलो

पना देस्या देस्या झाला कमधजीया राज वाळा ।
रगमहल मे पधारो[*] सावरा सनेही वाळा
मतवाळा दारूडी का
रग सुं पियास्या[१] प्याला ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

मन भावन बिन सखि सावन मे
मेरे धीरज कैसे रहै मन मे ।
पवन लता झुक लावै विरछ बिन
ग्रैसे जोवना दुख दै तन मे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालौ

मानौं जी थे मानो सायबा म्हारी तो अरज ।
अब[*] न मिल्यौ[*] क्यो[२] लगायो नेहडो
पैला थे आपरी गरज ॥ १
म्हारा सिर रा किया छै थानें सेहरा
सिरजणहारै तो सरज ।
अनत ठौर रसराज न जावौ
कितायक राखा म्हे वरज ॥ २

---

[*]पधारे ग । [१]पियासा । [*]अबै ग । [*]मिलो ग । [*]क्यू ख ग ।

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

तीखा तीखा लोयण लागे
इणन बनीजी रा कानळिया।
मोहि[1] लीया सुर जन सारा ही
कांई नें मानव जग का ज्यां भागे ॥ १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

थां कुण छो जी थां कुण छो
थे आमा कोंठै सूं कुरम जी।
मळल्यो उठाधो म्हारो मीको नीको
इतनी मरम म्हारी जावोला सुण ॥ १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

थे गोरा मीरा बोलोजी छल वेवरदी सांवळड़ा।
वेस र अंक भरो नादांणीया
कितीयक घण[2] छै घण जुलम करो मत ॥ १
भ्रम मायक रे तरफ री बोलो
मारू भर्‍यां छ यो महोलो।
भंवर भार नहि छूटै वेलड़ी
मन मानै ज्यूं बोलो[4] खेल ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

नादांणीया कांई बोल्या बोल
भजी सायबा वारूड़ी रा रंग में म्हांसूं।

---

[1] मोह। [2] मीको ब प। [3] बता ब म। [4] बोलें म.।

साचौ कियौ थे पना बोल आगलो
हिय रौ भाव मुख माय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालौ

पना देस्या देस्या झाला कमधजीया राज वाळा ।
रगमहल में पधारौ* सावरा सनेही वाळा
मतवाळा दारूडी का
रग सूं पियास्या[१] प्याला ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालौ

मन भावन बिन सखि सावन मे
मेरे धीरज कैसे रहै मन मे ।
पवन लता झुक लावै विरछ बिन
ऐसैं जोबना दुख दै तन मे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालौ

मानौ जी थे मानौ सायबा म्हारी तौ अरज ।
अब* न मिल्यौ* क्यों[२] लगायौ नेहड़ौ
पैलां थे आपरी गरज ॥ १
म्हारा सिर रा किया छै थानै सेहरा
सिरजणहारै तौ सरज ।
अनत ठौर रसराज न जावौ
कितायक राखा म्हे बरज ॥ २

---

*पधारे ग । [१]पियासा । *अबै ग । *मिलो ग । [२]क्यू ख ग ।

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

मारू मत चालो[1] हेली धण कामणगारो।
सेज सुरगी सुघर सहेली
सरद चांदणी चंद्र अटारी ॥ १
दारूड़ा री मनवार आपस री
धण रही वारी वारी।
उसी तयारी प्यारीजी री अलबेली
रसीलाराज मालीजा री छिब न्यारी ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

मिळ कर आज ही वालम जी
थे तो फिर चाल्या परदेस।
म्हांनें कांई कहि[2] जावो केसरिया
सायधण आळी वेस[3] ॥ १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

मैंनें चालो नें म्हांरा मारूड़ाजी[4]
अगामैणी थी जोवै वाट।
सेज सवारी छै तन री तयारी छै
मौर उवां री वारी छै आज ॥ १
पडती सांझ विचळी संजोयो
सह कर राख्या छै साज।
रसीलाराज जोरी जुगलकिसोर की
लिखी छै विधाता लिलाट ॥ २

---

[1]चाली म। [2]कहूं ब। [3]वेस म। [4]महैलां ब मैलां ब। [5]मारूड़ा ब म
[6]पूरा पद नहीं ब ब।

राग – सोरठ

ताल – धीमौ तितालौ

लैरा लैरा चालौ जी थे
इण धण रै मुख चद्र चादणै[1] ।
सावणिया[2] री रैण अधेरी
चद गयौ मुरझाय गगन छिप ॥ १

नायक तरफ र अब सखी बोलै
सूरज ऊगण दै री ।
रसराज आवण दै मनमोहन
सौ चदा रौ छुप जाय उजाळौ ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमौ तितालौ

हे मारवण थारा तौ नैणां री पांणी लागणौ ।
तू सरसीलौ वेल मालती री
उण नायक रौ भवर पणौ ॥ १

सज सिणगार सेजा[3] नै चालौ
अपछर रभा रूप वणौ ।
रसराज या सूरत देखण री
आलीजा ने लग रयौ चाव घणौ ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमौ तितालौ

हेरी हेरी मा मन ले गयौ
सावरौ सनेही अलबेलौ मा ।
नैन लगाय मन ले गयौ वेदरदी
दिल विच छाय रयौ ॥ १

---

[1]चांनणौ ख । [2]सावणीया ख. । [3]सेफा ख ।

राग – सोरठ
ताल – तीमो तिताली

मारू मस वालो[1] हेली भण कामणगारो।
सेज सुरगो सुघर सहेसो
सरद चांदणी चंद्र अटारी ॥ १
दारूड़ा री मनवार आपस री
बण रही वारी वारो।
उसी तयारी प्यारीजी री अलवेली
रसीसाराज भालीभा री सिंव म्यारी ॥ २

राग – सोरठ
ताल – तीमो तिताली

मिळ कर भाव ही वालम जी
ये तो फिर चाल्या परदेस।
म्हांनें कांई कहि[2] आवो केसरिया
सायधण वाळी वेस[3] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – तीमो तितालो

मैसे[4] पासो में म्हांरा मारूड़ाजी[5]
भ्रगामैंणी की जोवै वाट।
सेज सवारी छ सन री तयारी छै
मीर उवा री वारी छै आज ॥ १
पड़ती सांझ दिवळो सजोमो
सह कर राख्या छै साज।
रसीसाराज जोरी जुगमकिसोर की
मिली छै विमाता मिलाट ॥ १

---

[1] वालो म । [2] कह ल । [3] वेश म । [4] महेला स मैलां म । [5] मारूड़ा ए म [6] पूरा पद नहीं स म ।

निपट नसी छै दोय वारै री निसरची
सुदर वण्यौ छै जंवार री।
रसराज आनंद अपार री सायबा
नेह वदो रा छै हाथ री॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हो म्हारा बाळसनेही पना
थारी सीख मानु ली[१]।
थांरौ ध्यान रहै[२] निसदिन
थां विन और न जाणुलो[३]॥ १
लोक लाज कीनें काण करूली
नहि परवार पिछाणूली[४]।
थारी थैं जाणी सावलडा
एतो ताण मै ताणूली[५]॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हूं अगानैणी थारी मारूडौ मानै[१] नहि जाणै।
झूठा ताना तू दै छै म्हानै
खबर पडैली विहाणै॥ १
पारौसण री वालक घर आवै
नितरी अगोया तांणै।
यौ ही चैन देख दुख दै छै
थारी सी रीत पहचाणै॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

बरसत आयौ मा घन चढ कै सिर।

---

[१],[३],[४],[५]लि। [२]रूर्भ छै ख ग। [१]म्हांनै।

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हेरी हेरी मा सांवरो सनेही मन ले गयो ।
पहलो रूप बिसराय गयो री
दे गयो रूप नयो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो मलवेलीयो महलां आवे
साइलो पहाय बुलावे ।
यो सुख बरणु कितीयक सजनी
अपच्छर देख सुभाय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो छदागारी गुमानीड़ा लागी प्रीत दुहेलड़ी ।
जिण सिर बीती हुवै* सोई जांणे
पायल जिण तन सेलड़ी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो नणदी रा वीरा सासरिये से चालो ।
थोह परवारां पीहरीयो म्हालो
सासरियो थांसु म्हालो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो पनां मीजो जी मीजो जी प्यालो मनवार रो ।
एक तो प्यालो पना दारूड़ा री तार रो
दूसरो सनेह री तार रो ॥ १

---

ा । हैं । तन सिर । बाल्ही न । महाली न ।

निपट नसौ छै दोय वारै री निसरयौ
सुंदर वण्यौ छै जंवार री ।
रसराज आनंद अपार री सायबा
नेह वदी रा छै हाथ री ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हो म्हारा बाळसनेही पना
थारी सीख मानु ली[1] ।
थांरौ ध्यान रहै[2] निसदिन
था विन और न जाणुलो[3] ।। १
लोक लाज कीनै काण करूली
नहि परवार पिछाणूली[4] ।
थारी थैं जाणौ सावलडा
एती ताण मैं ताणूली[5] ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हे अगानैणी थारी मारूडौ मानै[1] नहि जाणै ।
झूठा ताना तू दे छै म्हानै
खबर पडैली विहाणै ।। १
पारौसण रौ वालक घर आवै
नितरी अगीया ताणै ।
यौ ही चैन देख दुख दे छै
थारी सी रीत पहचाणै ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

वरसत आयौ मा घन चढ कै सिर ।

---

[1],[3],[4],[5] लि । [2] रहै छै ख ग । [1] म्हानै ।

मुज विरहुन पर करक सधारी
खड्ग धार विजळी कटकै सिर[1] ॥ १

जमुना तीर सखी मे अकेली
सखियन के आगे बढ कर।
सांम[2] आयो रसराज पिया हर
जा रही अक सरन गढ़ कै सिर[3] ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तिताली

दिसदा परी का अर्मा
सचजे चिमन में डेरा।
चंदन चंबेली चंपा
कचनारे और केलें।
हुरसत[4] हजारा फूल
सिम पर लपटती वेल ॥ १

रंगीम तरो तरो के
डेरे जरी देखे[5] थे[6]।
सोसम सुरंग सबजा
मांमू खिले बगीचे ॥ २

उसमें तखत पैं बैठो
महबूब खूब सोहै।
चलती सखी अदा सै
मन आसकों का मोहै ॥ ३

विवसी बुलाक बूंदा
झुगमु[7] चमकता बाला।

---

[1]'सिर' नहीं ख। [2-3]इसके अंतर्गत के दोनों चरण ख में नहीं। [4]'हरसत' है बीचें ग। [5]पूरा चरण नहीं। [7]झिमगू ख।

क्या खूब लचकती[1] दावन
उडता दुपटा काला ॥ ४

सावन घटा सी उमडी
छुटती खुसी की धारै ।
बूंदै बरसती रस की
लगती वदन हमारैं ॥ ५

वौह* दूर है उवो देख्या
नहि ज्यादा मा किसी सैं ।
दिल आंख सैं जो देखै
नजदीक है उसी सैं ॥ ६

नजदीक है पै देख्या
किस हुआ[2] आदम कबीना ।
दुरबीण इसक की मा
जिस आख कै लगी ना ॥ ७

रसराज आसिका[3] दा दिल
सांझ औ सवेरा ।
साहिब करै तौ होवै
उस डेरै मैं वसेरा ॥ ८

राग – हिंडोल
ताल – जलद तिताली

कुसमाकर आय्यौ री सजनी
रहे फूल पलासन के बन घन
सब वन केसरिय्या भये[4] तिनकौ
देख केसरिय्या भये है नयन ॥ १

---

[1]लचकता ख । *वोहो ग । [2]हूआ ख, हु ग । [3]आसका ख ग । [4]भये देख ।

मुख विरहन पर करक सवारी
खड़ग धार बिजळी कटके सिर[1] ॥ १

जमुना तोर खड़ी में अकेली
सखियन के भाग मठ के ।
सांम* आयो रसराज पिया हर
या रही अक सरन गढ़ के सिर* ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तितामी

दिखदा परी का मर्म
सबजे चिमन में डेरा ।
चंदन चमेली चंपा
कचनारे और केलें ।
हरखत* हजारां फूल
तिन पर लपटती बेल ॥ १

रंगीन हरां हरां के
डेरे जरी देखें* चे* ।
सोसन सुरंग समजा
मांनूं खिले बगीचे ॥ २

उसमें तखत पैं बैठी
महबूब खूब सोहैं ।
चमकी लखी अदा से
मन आसमां या मोहैं ॥ ३

चिमको भुलाक बूंदा
जुगमु* चमकता आसा ।

---

[1]सिर नहीं म । *-*इसके अंतर्गत के दोनों चरण ख. में नहीं । *हरखत म
दे दोनों म । *पूरा चरण नहीं । *जगमु म ।

राग – सोरठ
ताल – सवारी

सांवन ग्रावन कह्[1] गयौ हे सहेली म्हानै ।
ग्रबलु[2] नै ग्राय मिल्यौ रसराज सावळ
ग्रलवेलौ[3] मिळ रही विरछन मे[4] नवेली बेली ।। १

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

ग्रलवेलड़ी लाडली बुलावै छै
रसिया चाल रग री रात छै ।
केसरिया कर साज साहबा[5]
फूला सेज कसी छै चानणी चौक मे ।। १

रग रमौं घणी समज सुख सू
झुक्या झरोखा री छांह मे ।
गूघटडौ इक हाथ में ग्रौर
चपकवरणौ गात दूजौ गळबांह मे ।। २

मदन[6] - रस लूटौ नै मारूडा
ऊग्या नसा ग्रमलान में ।
सुणौ सहेल्या रा मुख सू सरसी
सोरठडी री तान में[7] गळती रात मे ।। ३

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

ग्रलवेलियौ मा ग्रायौ ग्रायौ
मारवणी मिळण मारूड़ौ ग्रायौ[8] छै मा वालौ राज ।

---

[1]कह । [2]लू ख ग. । [3]मनमोहन । [4]'मे' नहीं ख 'पै' ग. । [5]साहिबा ख ग. । [6]वदन ।
[7]'में' नहीं ग. । [8]घर ग्रायौ ग ।

रसीलाराज उन वन छबि छाके
सहित सहेलिन के[1] जुवति जन।
नैन हमारे देख केसरिम्या
भय्यौ है केसरिम्या सांवरिम्या को मन॥ २

राग – हिंडोल
ताल – दीपचंदी

भवरईम्या मोरी लो सजनी विष बोलै
कोयलिम्या कहुक कहुक।
चमस कूप लटकट हैं पनरिम्या
हरे हरे खेतवा भरे भरे तुक॥ १
मलिम्या बुलावै गोपाल भाईयै
फूली फुलवारिन में क्यों रहे रुक।
रसालो[2] राज पिय भावत तुम कौं
बसत बधावन[3] देखन झुक॥ २

राग – सोरठ
ताल – सवारी

मुजर यार म्हारा छां ब्रजराज कंवर म्हे।
रसराज बौहत दिनां सूं मन मांही छै
दरसण की तरसावां छां म्हे॥ १

राग – सोरठ
ताल – सवारी

सायवा थारी सेजां में रंग लाग रह्यौ छै।
रसराज आनंद मंगळ घर घर में
मद रापा ब्रजराज भयौ छ॥ १

---

[1] नहीं। [2] रसीला स य। [3] बंसावन बसंत स य। [4] म्हे नहीं ग।

राग – सोरठ

ताल – सवारी

सावन आवन कहै[1] गयौ हे सहेली म्हानै ।
अबलु[2] नै आय मिल्यौ रसराज सावळ
अलवेलौ[3] मिळ रही विरछन मे[4] नवेली बेली ।। १

राग – सोरठ

ताल – होरी रौ

अलवेलडी लाडली बुलावै छै
रसिया चाल रग री रात छै ।
केसरिया कर साज साहबा[5]
फूला सेज कसी छै चानणी चौक मे ।। १

रग रमौं घणी समज सुख सु
भुक्या भरोखा री छाह मे ।
गूघटडो इक हाथ मे और
चपकवरणौ गात दूजौ गळबाह मे ।। २

मदन[6] - रस लूटौ नै मारूडा
ऊग्या नसा अमलान मे ।
सुणौ सहेल्या रा मुख सू सरसो
सोरठडो री तान में[7] गळती रात मे ।। ३

राग – सोरठ

ताल – होरी रौ

अलवेलियौ मा आयौ आयौ
मारवणी मिळण मारूड़ौ आयौ* छै मा वालौ राज ।

---

[1] कह । [2] लू ख ग । [3] मनमोहन । [4] 'मे' नहीं ख 'दे' ग. । [5] साहिबा ख. ग. । [6] वदन ।
[7] 'मे' नहीं ग. । * घर आयो ग ।

सुभ दिन सुभ घरीह पल में महोरत प्रम
मारी[1] मन छ जनम मांरी[2] भ्राज ॥ १
मारूड़ी वण रयो[3] छ दुलहो ऊसा न[4] सापीड़ा
सग सोहणा छै चंगै साज ।
पल पल उवांरा प्राण उवारण करैसा
सायघण ओबन लाज रसराज ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी री

चंपावरणी हे मारवण मारूड़ो बुलावै
चाल सुरगी सेजां मे ।
चदावदनी खंजन ननी
मारू मन बस करणी ।
वाट जोव छ रसराज सांवळड़ा
विरह वेदन हरणी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

चल प्यारी लागे हु अलबेली मारू
कांमणगारी हा सेजड़ल्यां में ।
रैण प्रभारा री भजी सोहणी में[5]
सांम भूम छेवर मे ।
रसराय बूंद सुरां सूं मिळतो
इण सोरठी[6] रा घर में ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

पना मारू सोयो जी

---

[1]म्हांरी । [2]म्हांरी । [3]रह्यौ प म । उसा नै ब प । [5]'मैं' नहीं प । [6]सोरठी म

लीजोजी आज री रात महोलो
सावणीया री तीज रो म्हांरा राज।
पना मारू कुण छो कठैरा थे सिरदार
किण दिस थारी छै देसड़ोजी[1] म्हारा राज ॥ १
पना मारू उतरचा सरग सु आय
कै कोई राजकवार छो जी म्हारा राज ॥ २
गोरी म्हारी सरग न[2] जाणा छा सुमेर
कहीं जा मारूसा रा देस मे जी म्हारा राज ॥ ३
पना मारू किण सुख तारयों छै विदेस
किण दुख छोडी छै गोरडीजी म्हारा राज ॥ ४
गोरी म्हारी घर का आबा छै आक
पराई मीठी कैरली जी म्हारा राज ॥ ५
पना मारू वहचो वहचो जावै म्हारो जीव
नैणा सु आप ही देख्यो जावै जी म्हारा राज ॥ ६
गोरी म्हारी नैणा रा[3] लागा छै बाण
मन म्हारो थे भरमाय लियो जी म्हारा राज ॥ ७
गोरी म्हारी मोहचा मोहचा पथीया जमी का
वहैता[4] पछी अकास जी म्हारा राज ॥ ८
पना मारू याही रहो कै ल्यो सग
म्हे रहा छा चाकर रावळा जी म्हारा राज ॥ ९

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मदवा मारू छो जी म्हारा राज
इतनी अरज सायबा म्हारी मानो।

---

[1]देसड़लो जी। [2]सरगढा। [3]नैंणा। [4]वहता ख ग ।

तुरोमां जीण उतारो ने सायबा
या रगभीनी छै रात।
रसराज बांवण लूंब रही छां
क घालो ल म्हांने साथ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

मारूडो मोहणी है मारवण
मोहणीया मुखड़ा री मलवेसीया[1] चस्मां सूं[2]।
गूंघटड़ो मणा हठ सूं राखता
केसर भीनौं सालूड़ो।
रसराज हित चित सूं सग रमता
हस हस देता दारूड़ो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

याद करो लाला सावन भावन प्यारा कह[3] गयो
पंथीया लेजा रे संदेसो म्हारा पिय पें कौन सूं।
असन बसन प्यारे मोंही लाग
नैंना नींदरी न आवै।
रसराज जोबना निस दिन
मोहि सूं सतावै मेरो वैरो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

सहेली सुघर पिया की सैंम
मेहरसो बरस रयो सारी रात।
घन गरजे बिजळी चमके छै
पवन चले परवाई ॥ १

---

[1]मलवेलिया। [2]चसमां सूं। [3]मैं कह म।

चुनरी भीजै चोक मे ओरो
चौडै ऊभा गात ।
सीत न व्यापे डर नही लागै
रसीलाराज नई वात ।। २

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

हो मारूड़ा मारूड़ा हो* म्हांरा राज
इचरज आवै सावळड़ा ।
जाणा तौ जाणा[1] विरछ कदम रा
विण पाणी सू खड़ा ।
रसराज जोरा जोरी निभावौ
ज्यू हीनै छुवाया सालुडा[2] ।। १

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

पिया पिय झूलै सरस हिंडोळै गळवहिया ।
ब्रन्दावन[3] सघन - वनी विच
कुहकै कोयलिया अवरइया मे
चढल हिंडोरा ऊचौ गगन कू
डरत नवेली लागै पिय छतियां सै ।। १
हरख रही सखि[4] हसत सहेली
रसीलाराज तू बलइय्या लै ।। २

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

उमड घन आयौ, झुक[5] वरसन लाग्यौ
वडी तौ धारन झर ल्यायौ ।

---

*'हो' नही ग । [1]जाणौं तौ जाणौं ख ग । [2]साळूडा । [3]ब्रिदावन की । [4]सखी ।
[5]आदर्श प्रति क ग मे नही ।

चढ़ आयौ लसकर सांवन कौ
अगवा मनोज[1] सवायौ ॥ १
मांन कहांलुं रखियें सजनी
इस विरहै तन छायौ।
रसराज सांवरे सनेही कू या समें
चहियें[2] मदत कू बुलायौ ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

एरी ए प्रीतम घर आयौ
मैं तो[3] करूंगी[4] वधावना
तन मन आनंद छायौ।
अक मिळाय मिळूंगी सजनी
विरह दरद विसरायौ ॥ १
घन वरसत दांमन[5] चमकत है
मोर सोर मन भायौ।
रसराज ब्होत[6] दिनन सों सखी
विछरयौ प्रांन सो पायौ ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

येलण चालो चंपा बाग
हो रंगभीना मारूजी।
इण नैं तीज ऊपर ससकरिया
आया आया लाडलड़ी रै चाव।
पिछम देस रा राजवी ये
कमधजीया उमराव ॥ १

---

[1]मनोज। [2]चहियें न.। [3]मैं तो मन में कहूं। [4]करू। [5]दामिनि। [6]बहोत
[illegible]। [7]नारी।

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

बाभीजी[1] कमधजीयौ रमं छै सिकार।
हरया म्हारा वन हरया जी
सुरख वेस सजदार ॥ १
कस्या कमर वाकडली सोहै
सरस वीर सिणगार।
साझ पडया घर आसी सायबाँ[2]
मो सुगणी रौ सिरदार ॥ २

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

भवर[3] म्हाने चगा लागौ हो[4] राज
कुण छौ कठैरा हो[5] छैला सिरदार।
सूरत रा अलबेला दीसौ
और अलबेलौ साज।
रसराज इण रित वारै नीसरया
तीज रौ महोलौ छै आज ॥ १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

मनमोहना छिनक मैं
मुरली अधर लगाय कै मन ले गयौ।
जमुनातट वसी वट निकट
नटवर कौ भेष बनाय कै दुख दे गयौ ॥ १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

बजाई बन[6] बसी नदकवार।

[1]सहेली। [2]साहिबाँ। [3]हो भवर। [4]जी। [5]'हो' नही। [6]बैन।

सुण वसी की तांन अचानक
चाली सकळ व्रज[1] नार।
प्रेम विवस वकळ हुवे[2] चली
ज्यूं गुडीय पवन की लार॥ १
कूंकूं री[3] रेख नैंणां नथ कांन में
पायल री गळ हार।
प्रेम री ह्वै रसराज पथ यूं ही
जांणे जो ह्व छ[4] रिझवार॥ २

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी री

वरसाने गोकुल बीच में
रंग लाग्यो सुघर सहेलड़ी।
बीच वदरिया को रंग लाग्यो
तसें बिरह बेलड़ी। १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी री

हो भंवर म्हांसूं वांका बोलो में राज।
कांई म्हेर करी छ थांरी तकसीर
हार[5] जितो हीमरो नहिं सकसो सरीर।
कोई दिन होय रह्या छ मिळ्यां नैं
रसराज दीसो बेपीर॥ १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी री

हो लग्यो छै म्हांरो प्यारीजा भंवरजी सूं नेह
जयो मिन रह्यो नहीं जाय।

---

[1]ब्रिज। [2]भे ख। [3]गुडीवे ख., गुडिय ग। [4]री ख। [5]यो आदर्श प्रति में नहीं।
[6]यह चरण आदर्श प्रति एवं 'ग' प्रति में नहीं है।

आज सहेर[1] मे उछव तीजरी
यो भुक आयो छै मेह।
ज्यूं त्यूं चल रसराज मिळण नै
जीन उतै इत देह ॥ १

राग – सोहनी
ताल – जलद तितालो

साजनीया उवा रित आई रे।
सरता री तीर चपला री छाई
जिण निस लगन लगाई रे[2] ॥ १
चहु दिस सौरंभ पवन चलै छै
कोयल धुन मन भाई।
रसराज इक दिन कठ लगाई
इक दिन सौ[3] विसराई ॥ २

राग – सोहनी
ताल – जलद तितालो

साजनीया उवै दिन सालै छै।
वदन मिळाय मिळावै छा विदली
उवौ विरहा जी जाळे छै ॥ १
सखी साईन्या ताना दे छै
हस हस ज्यान निकाळै छै।
रसराज प्रीत लगाय गरीबा नै
यू कोई छाड र चालै छै ॥ २

राग – सोहनी
ताल – जलद तितालो

गुल सुरख नैन महैबूबा दे।

---

[1]सहर। [2]'रे' नहीं। [3]सो।

रसरास[१] असवो अतर की सी फलाते
निधा सैं मेसदे ॥ १

राग – सोहनी

ताल – बसव तिवासी

मुल सुरस नैन आज दुरसे क्यूं।
रसराज सांवळ मुभदा उसदो
भांकदी मासूम मस सांवरा जुदा होयूं ॥ १

राग – सोहनी

ताल – बसव तिवासी

कोयलडी कोंठै बोली मा
इण सघन हरी अम्बराई मे।
आपन आयौ नहीं इण रित में
अर नहिं मोहि बुलाई उव ॥ १
सारा गांव का छल सूण छ
कोई मिलावै रग राई में
एक रात री उण रसिया में
जोवन दपूली[२] वधाई में ॥ २

राग – सोहनी

ताल – बसव तिवासी

मैसां[३] आज्योजी म्हारै आज पनां।
सुम रही छै चानणी चंद्र अटारी।
चहुं दिस लपट रही छ अंबराई
एक ओर तो बहार बणी छै
एक ओर थारी राधा पियारी।

---

रसराज प । दपका । [३]मैसां ।

# परिशिष्ट

१ – स्फुट राग सग्रह

२ – महाराजा मानसिंह—कृतित्त्व और दर्शन
लेo प्रोo रामप्रसाद दाधीच 'प्रसाद'

# परिशिष्ट - (१)

## स्फुट राग सग्रह

राग – अडाणो
ताल – चौतालो
क्यु करो छो अेतो मान
उवै तौ बोभा नै मरै छै उवारा ही मिजाज सु ।

ताल – रूपक
तरसावौ ना म्हारौ जी वनरा
म्हे तौ थारा छा थारा प्यारा पनु ।।

ताल – रूपक
सखिया गावत गार वधारे
दुलहे दुलही के मिलाप मे ।

राग – आसावरी
ताल – आडो तितालो
तक तुसी नु आई भग सयालै दी हीर
तु राभा स्यहर हजारै दा साई ।।

ताल – चौतालो
जळदळ लैन की वार भई
कहत गवाळ चलौ मधुवन मे ।

राग – जोगिया आसा
ताल – जलद तितालो
बोहत विदेसा मे वाद विखेरौ
रग वरसै छै थारै देस ।।

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो
आए नवलकिसोर
सेजरिया करो कल्यान ।

राग – हमीर कल्याण
ताल – इकौ
जगमग दीपक बाती
इत उत नवलकुंवर की पोल ।

ताल – इकौ
सुवस बसौ थांरौ देस
सुदैसौ लागी नैतरां सूं
रसीलाराज राख थांरौ माथ ।

राग – कामोद
ताल – इकौ
बाग बगीचै की बनी है बहार तामें
मूलत हिंडोरे प्यारी पीउ ।।

राग – कामोद कल्याण
ताल – इकौ
करत सिंगार नाना भरण
मेरी राज दुलहरिया ।

राग – यमन कल्याण
ताल – चौतालौ
सज्या रचत कळी कुसुमन की
पोढैं राजकवार ।

राग – कानरौ
ताल – धीमौ तितालौ
मोहत विनां सु माया छै सेजां
कांई करां ममवार रतन मन मोहन मेट ।

राग – दरबारी कानरौ
ताल – बडब तितालौ
बरी जवाहर दीपावळी की झगमग जोत ।

राग – कानरी बाघेसरी
ताल – धीमो तितालो
आनन्द बढत विनोद
रति मनमथ कै रूप
राधा माधव रग रमैं ।

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो
भिछानी मगदा आयाणी राझा वेखो
उसदो कुदरत बादस्याह सहर हजारेंदा ।।

ताल – धीमो तितालो
रावीदे वैलैनु असी आई वे
राझा तेरे दो नैनादे वेखणेनु ।।

ताल – धीमो तितालो
लैकु करहु तीन धीरी मध औ जलद
तीन के बहुत भेद जानै गुन में जे गरद ।

ताल – सवारी
टपैदो अनोखी वे लाला लड के
जलद घोडे की क्या खूब सवारी ।

राग – कालिगडो
ताल – आडो तितालो
अब तो पौढणदो रगरसिया
थोडी सी रही छै रैण म्हारा नै गळारी थानै आण ।

ताल – आडो तितालो
सिरै सोवै छै लाडोजी रै सुरग चुंनडी
पनैजी रै रगीली पचरग पाग ।

ताल – आडो तितालो
नैनु नीद खुमारी
नहिं चाहत विरह घरी कौ ।

राग – केदारो
ताल – अमर विलासी

कर गहि लीनो मक
काम किलोळ की रचना नवेस री।

राग – खमायची
ताल – पाडो विलासी

महरग गावै जी गायक म्राय बधावौ
म्हारी लाडली जी रा ब्याह रौ सुमै जी दुलहा राजकमार।

ताल – म्राडो विलासी

ता र दा नी धि म त त दि र ना त द र दा नी
म्रो दानी त न न धीम् ॥ १
सात सुरां री सप्तक बोलै म्रेक साथ म्रौर धीरे धीरे
सारी गम पध नीसा सानी धप मग रे सा
सरज म्रखम गधार मध्यम पचम धैवत निषाद ॥ २
मदली बाजे से बोहुत मुलायम
धिधट किट तारी किट ध्रुम कट तक धिधीकट धिनकट धा ॥ ३

ताल – अमर विलासी

म्रली माई वे रीम्झ तक तुमी तु
तु मैंडा सिरदा सांई।

ताल – स्योरी

झुणि झुणि म्रनाहत झम झम सुनियत
रचना मामन की मैसी मटा प्यारे।

ताल – दीपचंदी

मान सरोवर मांहि विहरता
धाखी नें विराता हंसां री सेन।

ताल – बीमो विलासी

सखियां सराहे
जोरी जुगलकिसोर की।

राग – गौडी

ताल – चौतालो

नवल छबीली साझ एक छिव भए चद्रभान
मीळन कवळ कुमद फूलन कौ आगम

राग – छायानट

ताल – जलद तितालो

देवद्वार झनकत घटा
झालर गावत राग सुहेले ।

राग – जुओटी

ताल – इको

जोगीनी हौंदा राझा वायस तेरे
तु बैठी है हीर खुसीदे नाल ।

ताल – धीमो तितालो

ससी आई तक तुसी नु
पनु रख नेनादी पनाह मे ।

ताल – ठुमरी रो

फूली फुलवारी मे
कलइयासी चुनरिया लेजा री ।

राग – जैजैवती

ताल – जलद तितालो

नवल चद्रिका की वनी है वहार
एक - टक चद चकोर
ज्यु देखत पिया कौ मुख ।

ताल – फरोदस्त

तेरे नवल विखेरे की विखरी सुवास लुम्यो है
मधुप मन चली जा कपाल ।

राग – बंगली
ताल – चलद तिताली

रांझा रांझा करदी भर बिच बैठी झुरदी
हीर निमाणी कोई मिळावै बान जानी।

ताल – ठुमरी री

नीकी मैं ठुमरिया गावैं
तुरकी पै चढ़ सलौने।

राग – तोडी
ताल – चलद तिताली

सम्मुख गुण गाँय रहे गण गंधव
निरत करे देवकन्या अपछरा नवेली।

ताल – त्यौरी

नवल बिलेरे को कर अठखेला
गुनिमन कै मामें ज्यु हूं मुळकेला।

राग – धनाश्री
ताल – इकी

हैर की नसा किस बजे घोवानी
बस कमाल नै परयगाना।

ताल – चम्पक

हौंस को बहार मियां मजनु
सैंमियां नु दिखसा मेरा सांवरा।

ताल – आड़ा

उतरन लग्यौ मान
घिरी छांह परछांह
बिहुरस है बंपल गळबांही।

ताल – सुर फाखता

ताल कीं बरत गुनी श्रेष्ठ और
आरोही दूसरी बरत मैसक अवरोही मैं।

राग – नट
ताल – ाडौ तितालौ

करलै रमण मेरे कुवर कन्हईया
सघन कुजन मे नियरी आई साझ सुरगी ।

राग – नट नारायण
ताल – रूपक

लाज उमग भरी चली है गजगत
नवल पियारे कै सन्मुख ।

राग – परज
ताल – आडौ तितालौ

जामनी घटन लागी
वढन लाग्यौ सनेह
सुख की लहर उवे सै चढन लागी ।

ताल – दीपचदी

मजलस माणो म्हारी बाईजी रा वीरा
चोखी नै चगो छै थारो देस री सिरकार ।

ताल – आडौ तितालौ

मेळा रा बागा मे म्हारा मारूजी
आज्यो जी उनाळै री रैण ।

राग – पूरबी
ताल – चौतालौ

गु थत चौसर नौसर हार राधा
चुन चुन कळिया लावै सावरौ ।

ताल – जाम्रा

दिन को रयन कीजै रयन को दिन कीजै
मेरे नवल पियारे छैल रगीले रे ।

ताल – धीमौ तितालौ

सरिता बिहार मोहि वहुत ही नीकौ लगत
चल वनरे मेरे होय खेवटिया ।

राग – पूरिया
ताल – इकौ

उरस पराग मधु झरत फूलन तैं
पवन झकोरें गिरे कळी कुसम ।

राग – बराडी
ताल – झाप

लपटी लतान सोई बिरछ समूह
चपक चंबेली मधु माधवी चहु दिस भूम भाई ।

राग – खंमायची
ताल – चौतालौ

मुक्ताफळ हीरन के पना मौ
पीरोजन के नाना भूषन सोहत सुहेले ।

राग – भैरवी
ताल – इकौ

अलबेली भाई है बहार घना
घर चाली साजसी जोवे छे वाट ।

ताल – कवाली

माळी फूलों के रांभा
हीरची सु मवक हो सुघबोहमु स ।

राग – मैंक
ताल – चौतालो

रसीलेराज जोगिया की मिहरसौं
सुख की महर स
जोग की कळा मैं भाए रामा नदकु वार ।

ताल – चौतालौ

राग सागर जहाँ ताल तरंगे चोज नामरिया
रसीलेराज तामें बैठ सेवक
जोगिया रापट तरो है सुजान ।

ताल – चौतालो

पट राग पट ताल पट हू ले मेला
ऐ जोगिया की मिहर राज रसीले ।

राग – मल्हार

ताल – जात्रा

बोल घटा प्यारे तकक‍ु झकक‍ु झँग झँग
धिरान् धिरान् धिधितनम् धिधितनम् ।

राग – गौड मल्हार

ताल – जलद तितालो

झाखे छै जी ऊचा नै झराखा ऊभा
रंग-महल मे सावणीया री बणी छै बहार ।

मिटवा दो पावस रो खेद पीछा नै पधारो
पना चाकरी लैरा ले दासी रावळी ।

राग – जैजैवती मल्हार

देख्या छै मुलका देस धारी नै सगत मारू
देस विदेस मे नही नै देखी छै
इसी जोड मारू नै मारबी उणिहार की ।

राग – नट मल्हार

मेहुडलो बरसै छै बडो बूद
उमड आई छै घटा सावळी ।

राग – मीयां री मल्हार

ताल – चौतालो

सरस नवेली नार
नवल पियारे की
उवे सी नायकी ।

राग – मेघ मल्हार

रसोभारत्न र संग रहेस्यां
म्हें बरणां रावळे
सुपस वसौ थांरो देस माथ करी छे
चोखी नें बोली मारू देस री ।

राग – मारवा

सघन घटा चढ़ आई
घररत घन घोर
झररर परत जळधार
गगन झगामग दामनो
ऊचो अटारिन पर
बरसत प्यारी पीउ बहार ।

राग – रूपक

उमड़ आई साम घटा
झीमी बूंदन बरखत चलो नवेसे कण भवन ।

राग – रामदास री मल्हार

मायवा जी थांरे कर सास कबांण
तीरा नें भळका सार रा
साहीजी री बांकी मुह मूंछी र
चितवन बांकी मार री ।

राग – सावर मल्हार री
राग – मीरा री मल्हार
राग – चौतालो

सोब पना मरम कमु ची महरचो थांरे हीस
साहीजा रै सोरे छै सावळी चुनड़ी ।

राग – सूर मल्हार

मूरा न राग्या छे मकरू पे ठोर
चायन लिया छे थाने म्हारी सारली ।

राग – सोरठ मल्हार

सुधा नैं लागो छो पना सैण साजना
बाका नैं लागो छो दोखी दुसमणा।

राग – मारू
ताल – जलद तितालो

सीतळ मुक्ताहार हौन लगे
हौन लगी मंद चंद्र जोत।

राग – मालकोश
ताल – चौतालो

वारुणी पियत छके अंगी पानन तें
खेलत करत विहार।

ताल – सुरफागता

कर दरियाव को सहल सुहेले
अछी नीकी नई या पै बैठ नवेले।

ताल – सुरफागता

पोढण दो मेरे छैल छबीले
आरही पिछली रैण सुहेली।

राग – ललित
ताल – आडो तितालो

सीतळ करत नैन सरिता लहर
फूले फूले कँवळ वरन वरन के।

ताल – आडो तितालो

तारे दानी धीम तना दिर ना तनन धीम तनन
धीमन तरत दरदानी पहार बरफानी।

राग – विभास
ताल – रूपक

चहु दिस फूले कुंज कुंज
गुंजन लागे मधुप श्रवन सुहाये।

ताल – रूपक

सरगम गाय सुनाओ गुटिका गटि प्यारे
बिचरो मगन मैं
सरि गम पध नीसा सानी धप मग रेसा
सप्त भेद सप्त सुर स्यामी ।

राग – बिलावल

ताल – धामा

बना बन-के आये नये रूप गुन के
अमित नये बन बिहरत मदन मानुं ।

ताल – झूमरो

रसीलेराज ऐसे मन के महल माफ़ राग को मिलापत पैं
नाथ कै बिराजियें छूं सांध्यो गुन की बिसाम ।

राग – अलहिया बिलावल

ताल – अद्धा तितालो

कामीनी मुसफा भरी दी टोपी
मासानी मुरका मलेस कमाता ।

राग – तैलंग बिलावल

ताल – चपक

टपा बरसदा टप टप इस्क दी बूंदें
जो कोई हो सिर झेलवी बाला ।

राग – बिहाग

ताल – झूमरो

मसर फुलेल सींचे
झुमझुमी की झमकी सुवास ।

ताल – झूमरो

फूलां मैं बिछावा थारी सेज
थांरां मैं मरम थारा बोय दासी चरणां री ।

ताल – दादरा

गाय छबोले होय
पयादे चल जमी पें।

राग – श्री

ताल – ग्राड़ो चौतालो

सारी रैंण जागे पिया नैंनु नींद खुमारी गहमहे
बोल मुख के सुहेले।

ताल – जावा

साझ के आगम विहर वन
भँवर जात कवलन कु।

ताल – ब्रह्म

प्रबंध रचि लै सुर विमान पैं
स्वर्ग नदी को कर सनान।
नंदन वन मे विहर प्यारे॥

राग – पट

ताल – इको

आसमान जरद हौंन लग्यो
पलट आई समें उवाही सुहेल री।

राग – सरपरदो

ताल – धीमो तितालो

नाथ बाल गुन्हाई दी मिहर हुई रसीलेराज
रामा ले चला हीर निमाणी नु भला।

राग – सागर

राग – भैरू

ताल – इको

प्रथम राग को कीजियें उचार भैरू जाको नाम साचो मूल ग्रेक ताल।
दुतिय गाइये मालकोस मेरे लाल वरत नीकी विध दुताले।

तीसरी हिंडोर आकु कहत गुनी जैसे वेद भाये जाके तीन ध स।

चौथौ राग मनै गण गध्रप सिरीराग जाकौ नाम ध्यार ताल में गावौ

पंचम मनोप रह्यौ बदलै नटनारायण गावौ प्यारे मेरे बरत पंच ताल

छठौ मेघ सुनाइयें नीकी भांतन जाकौ मेद बताय भाम
षट ताल षट राग षट सिद्धम काज समरपन कीजे हैं
नाम नैक मिहर निजर सौ रसीलेराज कीजे बयान।

राग – सावर

राग – भैरू

ताल – चौताली

प्रात भयौ जागौ बना चिरियां बहुबानी
फूले कमी भंवर फैली मस्नाई।

राग – सावर में धुरपद

राग – मैरू

ताल – चौतालौ

धुरपद गायौ बहुत तो गजेंद्र पीठ बैठ प्यारे
ऊंची सवारी की हरख मान।

राग – सावर

राग – खमामची कामदो

ताल – इको

रंगत राग रागनी की देखो नवम प्यारे
पाई है पूरनभाग गुरु की संगत।

राग – सावर

राग – बिलावल

ताल – मुंबरी

रंगत महताह में अपने मन की रम
सुधर प्यारे नामा बिश्राम।

राग – सागर

राग – नरलहरी

ताल – धीमो तितालो

हीर हीर पुकार दा आपणी रांझेटा
ए कोर आदम की गैर दा पुतला ।
जुटीनी भांवा नैन पियाले आशिका नु
पिलाता इश्क दा प्याला ।

राग – सागर

राग – सोहनी

ताल – धीमो तितालो

रैण रा उनींदा म्हारी सेजा
सायबाजी आया छो राजकंवार ।

राग – सागर सारग री

राग – सारग वृन्दावनी

ताल – रूपक

सोवे बै चतर सहेली
म्हारा मारूजी री काई सज अलबेली
परिया भी चाह करै छे नवेली ।

राग – सागर

राग – हमीर कल्यान

ताल – इकौ

अजी म्हारी प्यारी आयी छै छबीली
साझ दिवलै लगाता वाली सामै चाल वधावा ।

राग – सारग

ताल – धाबो तितालो

सुर मिळाय सुर बुलाय बाजन कौ एक कर
सुर सौं ऐसी उर जैसो अहे ईश्वर कौ डर ।

राग – बसंत तिलाणी

स्याम को स्याम कर भर विमान पैं
ठाम ठाम पर बैठ नवेसे ।

राग – गौड़ सारंग

प्यारा लागो छो सेजां में राज
थुं म्हांरा प्राण पियारा सायबाजी राज ।

राग – मधुमाधव सारंग

सीतळ पवन होयजै दो सायबा
बागां री सेजाज्यो म्हांनै सार ।

राग – रूपक

धूप परत जहां
सघन कदंबयां की छांह
जमना तट बिहरै नंदकंवार ।

राग – मीयां री सारंग

कुणी नै मळावो छो म्हांरा सायबाजी
कुण छै म्हांरो विसरांम ।

राग – लूहर सारंग

थारी वांकड़ली धरै म्हांरा मारूजी
म्हांरो मन रास्यो छै भुमाय ।

राग – बड़हंस सारंग

धूप पड़ै छै म्हांरा सायबाजी
मा किसी चढ़ण री वार ।
पपिया करै छै पीऊ पीऊ
किण मळाई छै थांनै चाकरी ।

राग – बड़हंस सारंग

राग – भीमी तिलाणी

सीतळ जळ बिहर रहे
फुटव फुहारे मारे ।

राग – व्रन्दावन सारग

रसीलाराज मारू वाका अलवेला
म्हासु तौ रखाज्यो सुधौ मिजाज
मिहर सु पाई छै थारी सिरदारी दुहेनी ।

राग – सारग व्रन्दावनी
ताल – जाञा

हिंडोरा सोहत नवल सरूप
कचन रचित पटरी रतनमय
मखतूल डोरन अंबाडार ।

राग – सावन सारग
ताल – आडो तितालो

झूलत नवलकिसोर
झुलावै झोटा दे वृषभान लाडली
हरख रही चहु ओर सहेली ।

ताल – ...... .

हसती थे लाज्यो सायवा
कजळी देस रा चगा नै लाज्यो अैराकी मारू देस ।

राग – सिघडी
ताल – जलद तितालो

दो नैना दी लाग बुरी मेरा राझा
जटी दे नाल मत रख आसनाई ।

राग – सोरठ
ताल – इकौ

देस छोड पल अेक न जाज्यो
म्हारी लाडीजी रा भवर सुजाण ।

वातायन अगन अटारन पै
हरम विहार गळबाही ।

ताल – इकताली

रंग रंगीला सायबाजी थाके ना पिलाजो
इण दारूड़ा रौ निपट नसौ छै म्हांरा राज ।

ताल – चमक तिताली

मेरे महीड़े मु मत कुछ वेणी हीर निमांणी
इस घड़ी दा दीदार दे मैंडे नाल करें जो मिहरवांनी ।

ताल – झूमरौ

देस रौ सुरत दिखावो बैठ्या सुखपाळ म्हांरी
मारूजी प्यारा आया छ जी मांझली रात ।

राग – सोरठ मल्हार

ताल – झूमरौ

हिंडोरे झूलें जी राजकंवार
झूलता देखें छै म्हांरी छोटी सी भावजी ।

राग – सोहनी

ताल – चमक तिताली

पहलौ पहर वहग्यौ छै दूसरौ
भाई छै मांझली रात कायम करें छै थांरी दारूड़ी ।

ताल – धीमी तिताली

प्रेम और इसक की भंगी ने पोय पीजो मैं
रसीलेराज देस और टपा छै जी सिरदार ।

ताल – धीमो तितालो

कसदानी प्रादम और जमवर्टी दी
भांखें उस दी सुरत मोहिंसी जान प्रतीविया ।

ताल – धीमी तिताली

महमहे बोस
हौन लगे प्यारी पिया के ।

राग – हिंडोल

ताल – चौतालौ

बदस चीज के अग की अैसी बाघ विना ही उपज तान
आभूषन विना जैसे पुरुष सरुपवान ।

ताल – चौतालौ

सरस कसुबी गुलसुरख केसरिया
नए नए रगन के पहरे नवल चीर ।

ताल – जात्रा

क्यौ कर जाऊ लाल हरियाले बना
देखैं सास ननदिया जेठानी दुलहरिया ।

राग – सागर

ताल – जलद तितालौ

राग – तोडी जौनपुरी

सरिगम गाय

राग – बराडी तोडी

सुनावौ

राग – गधारी तोडी

सप्तभेद

राग – नामकी तोडी

जुत

राग – भीमपलासी तोडी

सा री ग म प ध नी सा
सा नी ध प म ग रे सा

राग – जौनपुरी तोडी

षरज ऋषभ गाधार
मध्यम पचम धैवत निषाद

राग – मासा

षरज ऋषभ गान्धार

राग – सिंधू भासा
मध्यम पञ्चम

राग – जोगिया भास।
धवत निषाद

राग – तोडी
परज ऋषभ ऋषभपरज
गांधारमध्यम मध्यमगांधार
पंचमधैवत धैवतपञ्चम
निषाद सप्तम सप्तम निषाद

राग – जौनपुरी तोडी
रसीलेराज ऐसी रचना सुरा घट की रचत
तोडी यामे जोगिया करत पूरन भासा।

राग – सामर
राग – कल्याण
राग – चौताली
करत कल्याण राधा माधव रग रमैं।

राग – यमन कल्याण
ये मन तेंहु कर मानव

राग – भोपाली कल्याण
भोपाली मत हो सुभाव कर

राग – हमीर कल्याण
मही हमीर सो हठ सायक तिहारे।

राग – केदारी कल्याण
केदारे की सानन सों कछु मन साव

राग – स्याम कल्यान
ऐसी तेरी स्याम सुजान है

राग – हेम कल्याण
हेम रतमन कहा है सोभ सुघरम कीं

राग – खेम कल्याण

खेम प्यारे रसिक राय कै
रहबे मन कै अधीन।

राग – कामोद कल्याण

जाकी सरस सुवास
आगे कामोद काम करै

राग – पूरिया कल्याण

रसीलेराज ऐसौ मन राख
तातें आगें हू पूरी आस

राग – जैत कल्याण

अब हू होयगी जोगिया मिहरसौं जैत

राग – शुद्ध कल्याण

तातें निसदिन करि हौं कल्यान

राग – सागर विलावल रौ
ताल – जलद तितालौ
राग – देवगिरी विलावल

ता रे दा नी धि म त न न न न त र दा नी
तनन तन न तौम

राग – ककुब विलावल

धि म त ना दि र दानी

राग – मौया री विलावल

ओ दा नी त दा नी त न दि र न दि र न धि म
धिम धिम धिम ता रे दानी ता रे दानी ओ दानी।

राग – यमनी विलावल

धि म धि म त ना दि र दा नी धि म

राग – सरपदा विलावल

धि तु म धि तुं म त न दि र धि तु म

राग – प्रसईया बिलावल

हरि संग लागी मो लागी लागी ह रि सम धि सु म

राग – शुद्ध बिलावल

राम सागर बेलावल के
भेद गुन बोलत तराने।

राग – देवगिरी बिलावल

रसीलेराज रीझत जोगिया जान जानी।

ताल – इकी

रग बखेरे सुर ताल लपट
लै बंद ह बोल रसीलेराज रचत।

रमजां दे नाल मोही वे
जग सियाले दो हो परी हीर निर्मांणी
रसराज क्या क्या कीता विच म मजां।

हैसडे एता की चक्कर वे
मेंण निकारे हो नहीं मिलदे।
रसराज कांजेदी मैं नाल किसु दी
मुलक चाल विच गये पकडे।

मिल आईयो वे महीवाले मियां।
तेरी सयन बिस नूं नाही मूसे
पीले भी इस्क पीयाले मियां।

---

प्रो० रामप्रसाद दाधीच 'प्रसाद'

# महाराजा मानसिंह : कृतित्व और जीवन-दर्शन

महाराजा मानसिंह इतिहास और साहित्य—दोनो के लिये एक जटिल व्यक्तित्व बने हुए हैं। इतिहास ग्रंथो मे उनके जीवन और व्यक्तित्व को लेकर जो तथ्य प्रकाशित हैं वे सब भ्रान्ति-रहित नही हैं। इतिहासकारों का मतवैविध्य भी राजस्थान के इस महत्वपूर्ण भक्त, शासक और साहित्यकार को उसके वास्तविक स्वरूप मे समझने में बाधक रहा है। दया और निर्दयता, प्रेम और घृणा, मनुजता और दनुजता, दाक्षिण्य और कोप के अनुकूल-प्रतिकूल तत्वो के एक अद्भुत सम्मिश्रण के रूप मे निर्मित मानसिंह के व्यक्तित्व को समझने के लिए एक मनोविज्ञानवेत्ता की भी गहरी अन्तर्दृष्टि अपेक्षित है। साहित्यकार के रूप में, राजस्थान के अनेक साहित्यकारो की भाँति मानसिंह भी उपेक्षित ही रहे हैं। विशदता और गहराई से अभी तक इनका मूल्यांकन न तो इतिहास-पुरुष के रूप मे हुआ है और न भौतिकता और अध्यात्म के एक साथ साधक साहित्यकार के रूप मे ही। इस निबन्ध मे मेरा अभिप्रेत केवल उनके साहित्यिक कृतित्व और दर्शन पर कुछ प्रकाश डालना मात्र है। अतः उनके व्यक्तित्व की चर्चा यहाँ अप्रासंगिक रहेगी।

मानसिंह की साहित्य सर्जना और तत्सम्बन्धी उनकी रचनाओ के विषय मे सर्व प्रथम शोधपूर्ण सूचनायें मुंशी देवीप्रसाद ने अपनी एक खोज रिपोर्ट 'राजपूताना मे हिन्दी पुस्तको की खोज'[1] मे दी थी। इससे पूर्व, यों टॉड महोदय ने भी मानसिंह की तेजस्विता और काव्य-प्रतिभा का अपने इतिहास मे उल्लेख अवश्य किया था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की खोज रिपोर्टों मे इन मानसिंह की जिन कृतियो का उल्लेख है वह मुंशीजी की उक्त रिपोर्ट के आधार पर ही है। मुंशीजी ने ही उक्त रिपोर्ट की एक हस्तलिखित प्रति सम्मेलन को प्रकाशनार्थ भेजी थी।[2] पं० रामकरण आसोपा ने भी मानसिंह के साहित्यिक ग्रन्थो की खोज और संग्रह का कार्य किया था। अपने द्वारा सम्पादित और प्रकाशित हिन्दी मासिक

---

१ राजपूताना मे हिन्दी पुस्तको की खोज—मुंशी देवीप्रसाद।

२ राजपूताना मे हिन्दी पुस्तको की खोज—मुंशी देवीप्रसाद—भूमिका।

'भारत मार्तण्ड'[१] में श्रासोपाजी ने 'मानसागर' शीर्षक से एक स्थायी स्तम्भ प्रारम्भ कि या और वे प्रति मास इसके अन्तर्गत मानसिंह की काव्य रचनाओं के अंश प्रकाशित करते थे। भारत मार्तण्ड के कुछ अंक उपलब्ध हैं और उनमें मानसिंह के कुछ लघु ग्रंथ और स्फुट का प्रकाशित हैं। मानसिंह के सम्पूर्ण साहित्य को प्रकाशित करने की उनकी योजना श्र थी। भारत मार्तण्ड की सम्पूर्ण प्रतियाँ क्योंकि उपलब्ध नहीं हैं अतः यह नहीं कहा सकता कि श्रासोपाजी ने मानसिंह की कौन-कौन सी कृतियाँ प्रकाशित की थी। मानसिंह सम्पूर्ण साहित्य की खोज कर श्रासोपाजी ने कोई शोध निबन्ध प्रकाशित किया हो ऐ जानकारी भी कहीं प्राप्त नहीं होती।

पं विश्वेश्वरनाथ रेउ ने मानसिंह के साहित्य की खोज कर एक-दो निबन्ध[२] प्रकाशि करवाये थे। पं भ्रमरचन्द्र शर्मा डॉ राजकुमारी कौल श्री मदनराज मेहता ने मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में लेख लिखे हैं। इन विद्वान् लेखकों के अतिरिक्त अन किसी विद्वान् ने मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में शोधपूर्ण निबन्ध लिखे हों—यह मे जानकारी में नहीं है। सम्प्रति जिन विद्वानों ने मानसिंह की साहित्यिक कृतियों के सम्बन् में जो सूचनायें दी हैं उनमें मुन्शी देवीप्रसाद पं रामकरण श्रासोपा पं विश्वेश्वरना रेउ मिश्र बन्धु, डॉ मोतीलाल मेनारिया पं भ्रमरचन्द्र शर्मा आदि प्रमुख हैं और इ सब की मान्यता है कि मानसिंह ने अनुमानतः ढाई दर्जन ग्रंथों की रचना की थी। इ विद्वानों द्वारा मानसिंह के ग्रंथों की जो सूचियाँ दी गई हैं उनमें सख्या-भेद और ग्रंथ नाम भे है। मानसिंह के नाम से कुछ ऐसे ग्रंथ भी इन सूचियों में विद्यमान हैं जिनके सम्बन्ध में सभी विद्वान् एकमत नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इनके सबंध में लेखकों की सूचनाओं के आधा अधिक प्रामाणिक नहीं हैं। या तो उन्होंने जनश्रुति को आधार माना है या अन्य विद्वानों द्वारा दी गई भ्रामक सूचनाओं का ज्यों का त्यों उल्लेख कर दिया है। मानसिंहजी सम्पूर्ण कृतियों को देखने और अध्ययन करने का सौभाग्य इनमें से किस लेखक को प्राप्त हुआ था निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता। मुन्शी देवीप्रसाद और पं रामकरण श्रासोपा स्वर्गीय हैं। उपयुक्त शेष विद्वानों से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ है और उनके उत्तर से मुझे निराशा ही हुई है।

उपर्युक्त विद्वान् लेखकों ने कतिपय मतभेदों के बावजूद मानसिंह की निम्नांकित कृतियाँ मानी हैं—१ कृष्ण विलास २ भागवत् पर मारवाड़ी भाषा की टीका (केवल तीसरा और पांचवाँ स्कन्ध) ३ जलन्धर चन्द्रोदय ४ जलन्धर चरित्र ५ तेज मंजरी ६ नाथ कीर्तन ७ नाथ प्रशसा ८ नाथ महिमा ९ सिद्ध सपा १० सिद्ध मुक्तावली ११ नाथजी के पद १२ नाथ चरित्र सम्वाद १३ प्रश्नोत्तरी १४ नाथ चरित्र १५ सिद्ध सम्प्रदाय १६ बिहारी सतसई की टीका १७ शृंगार के पद १८ संयोग और वियोग के दोहे, १९ चौरासी पदार्थ

---

[१] भारत मार्तण्ड—सम्पादक–रामकरण श्रासोपा प्रकाशक—रामश्याम प्रेस जोधपुर।

[२] राजस्थान—वर्ष–१ अंक १ (मार्गशीर्ष)।

नामावली, २० परमार्थ विषय की कविता, २१ रामविलास, २२ नाथ चन्द्रिका, २३ महाराजा मानसिंह की वशावली, २४ उद्यान वर्णन, २५ आराम रोशनी, २६ प्रश्नोत्तर, २७ विद्वज्जन् मनोरजनी [सस्कृत], २८ नाथ चरित [सस्कृत] ।

उपर्युक्त कुछ कृतियो के सम्बन्ध मे सभी विद्वान् एकमत नही है । उदाहरण के लिए 'नाथ चन्द्रिका'[1] को मानसिंह की कृति माना गया है, किन्तु वास्तव मे यह कृति मानसिंह के आश्रित कवि उत्तमचन्द भडारी की है। मैंने इस ग्रथ की एकाधिक प्रतियाँ देखी है और इनकी पुष्पिकाओ मे रचयिता उत्तमचद भडारी का स्पष्ट उल्लेख है । 'बिहारी सतसई' की एक 'टीका' भी मानसिंह की मानी गई है किन्तु आज तक यह कृति देखने मे नही आई। जिन विद्वानों ने इसका उल्लेख किया है उनसे मैंने यह जानकारी माँगी थी कि मानसिंह की यह कृति उन्होने कहाँ देखी और कब देखी ? उनसे प्राप्त उत्तरो से यह स्पष्ट है कि उन्होने स्वय ने यह कृति नही देखी । किसी दूसरे विद्वान् के उल्लेख को ही उन्होने आधार बनाया था। इस प्रकार और भी कुछ ग्रथ है जिनके सम्बन्ध मे आज भी प्रामाणिकता का अभाव है ।

शोध प्रसग मे मानसिंह की जो रचनायें मैंने विविध सग्रहालयो मे देखी और पढी है, वे निम्नानुसार है—

१ श्री जालधरनाथजी रो चरित ग्रथ
२ जलधर चन्द्रोदय
३ प्रस्ताविक कवित्त इगतीसा
४ रामविलास
५ सिद्ध सम्प्रदाय
६ सिद्ध मुक्ताफल ग्रथ
७ तेज मजरी
८ प्रश्नोत्तर
९ पचावली
१० सिद्ध गगा
११ उद्यान व[illegible]
१२ दूहा
१३. आराम
१४ [illegible] ... [illegible] वार्तामय
१५ [illegible] ... वित [illegible]
१६

'भारत मार्तण्ड' [1] में भाटोपाजी ने 'मानसागर' शीर्षक से एक स्थायी स्तम्भ प्रा था और वे प्रति मास इसके अन्तर्गत मानसिंह की काव्य रचनाओं के अंश प्रकाशि भारत मार्तण्ड के कुछ अंक उपलब्ध हैं और उनमें मानसिंह के कुछ लघु ग्रंथ और प्रकाशित है। मानसिंह के सम्पूर्ण साहित्य को प्रकाशित करने की उनकी योज थी। भारत मार्तण्ड की सम्पूर्ण प्रतियाँ क्योंकि उपलब्ध नहीं हैं अत यह ना सकता कि भाटोपाजी ने मानसिंह की कौन-कौन सी कृतियां प्रकाशित की थी। सम्पूर्ण साहित्य की खोज कर भाटोपाजी ने कोई शोध निबन्ध प्रकाशित किया जानकारी भी कहीं प्राप्त नहीं होती।

पं विश्वेश्वरनाथ रेउ ने मानसिंह के साहित्य की खोज कर एक-दो निबन्ध' करवाये थे। पं अक्षयचन्द्र शर्मा डॉ राजकुमारी कौल भी मदनराज मेहर मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में लेख लिखे हैं। इन विद्वान् लेखकों के अति किसी विद्वान् ने मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में शोधपूर्ण निबन्ध लिखे हों-जानकारी में नही है। सम्प्रति जिन विद्वानों ने मानसिंह की साहित्यिक कृतियों में जो सूचनायें दी है उनमें मुंशी देवीप्रसाद प रामकरण भासोपा पं विश रेउ मिश्र बन्धु, डॉ मोतीलाल मेनारिया पं अक्षयचन्द्र शर्मा आदि प्रमुख हैं सब की मान्यता है कि मानसिंह ने अनुमानतः बाईं दर्जन ग्रन्थों की रचना को विद्वानो द्वारा मानसिंह के ग्रंथो की जो सूचियाँ दी गई हैं उनमे संख्या-भेद और ग्रंथ है। मानसिंह के नाम से कुछ ऐसे ग्रंथ भी इन सूचियों में विद्यमान हैं जिनके सम्बन्ध विद्वान् एकमत नही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इनके सबंध में लेखकों की सूचनाओं अधिक प्रामाणिक नही हैं। या तो उन्होंने जनश्रुति को आधार माना है या भ्रम द्वारा दी गई भ्रामक सूचनाओं का ज्यो का त्यो उल्लेख कर दिया है। मानसिं सम्पूर्ण कृतियो को देखने और अवगाहन करने का सौभाग्य इनमें से किस लेखक हुआ था निश्चय रूप से नही कहा जा सकता। मुंशी देवीप्रसाद और पं० भासोपा स्वर्गीय है। उपर्युक्त शेष विद्वानो से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ है और उन से मुझे निराशा ही हुई है।

उपर्युक्त विद्वान् लेखको ने कतिपय मतभेदों के बावजूद मानसिंह की निम्नांकि मानी हैं—१ कृष्ण विलास २ भागवत् पर मारवाड़ी भाषा की टीका (केवल दी पाँचवाँ स्कन्ध) ३ जलन्धर चन्द्रोदय ४ जलन्धर चरित्र ५ तेज मंजरी ६ ना ७ नाथ प्रशंसा ८ नाथ महिमा ९ सिद्ध गंगा १० सिद्ध मुक्तावली ११ नाथ १२ नाथ चरित्र सवाल १३ पंचसोरठी १४ नाथ चरित्र १५ सिद्ध सम्प्रदाय १६ सतसई की टीका १७ शृंगार के पद १८ संयोग और वियोग के दोहे, १९ चौरा

---

[1] भारत मार्तण्ड—सम्पादक-रामकरण भासोपा प्रकाशक-रामश्याम प्रेस जोधपु

[2] राजस्थान—वर्ष-१ अंक १ (मार्गशीर्ष)।

काल के सम्बन्ध मे कोई उल्लेख नही मिलता। अन्तर्साक्ष्य के रूप मे भी कोई ऐसा सुदृढ़ सकेत नही प्राप्त होता जिसके आधार पर रचनाकाल निर्धारित किया जाय। अत उनके कुछ हस्तलिखित ग्रथो की प्रतिलिपियो के काल के आधार पर किंचित अनुमान ही लगाये जा सकते हैं। फलस्वरूप रचनाकाल के क्रम मे इनकी कृतियो को रखना कठिन है। मैं उन्हे विषयानुसार ले रहा हूँ।

## नाथ भक्ति की रचनायें

१ श्री जालधरनाथजी रो चरित ग्रथ[1]— यह जालधरनाथजी का चरित्र काव्य है। इसमे छोटे आकार के कुल ६६ पत्र है। यह अभी तक अप्रकाशित है। आर्या छन्द मे कवि ने मगलाचरण से इस प्रति का प्रारम्भ किया है। मगलाचरण मे जालधरनाथजी की ही स्तुति की गई है। इस छन्द की भाषा सस्कृतनिष्ठ है। पूरी कृति मे जालन्धरनाथ की महिमा का अनन्य श्रद्धा और भक्ति के साथ गान हुआ है। 'जालधरनाथ भक्तो की भय भीति को हरने वाले हैं--जिन भवदु ख-ग्रस्त व्यक्तियो ने इनकी आराधना की वे दुखो से मुक्त हो गये।'

इस कृति मे मानसिंह के जीवन की कतिपय घटनाओ का नाथभक्ति के प्रसग मे ही चित्रण हुआ है। जालोर के किले मे निवास, गुरु देवनाथ को कृपा, जोधपुर लौटना आदि प्रसगो का उल्लेख इसमे अन्तर्साक्ष्य के रूप मे मिलता है।

यह वर्णन-प्रधान काव्य है। काव्य कला की दृष्टि से यह एक सामान्य रचना है। सस्कृत, हिन्दी और डिंगल के छन्दो का कवि ने इस कृति मे प्रयोग किया है। भाषा की दृष्टि से भी वैविध्य के दर्शन होते हैं—सस्कृत, राजस्थानी और ब्रज भाषा का उन्मुक्त प्रयोग इस कृति मे हुआ है।

२. जलधर चन्द्रोदय[2]--यह एक काव्य-कृति है और इसकी वस्तु ४२ अध्यायो मे वर्णित है। इस कृति का विषय भी जलधरनाथ का चरित्र-चित्रण और उनकी महिमा का गुणानुवाद करना ही है। नाथजी के अनेक भक्तो के सक्षिप्त जीवनवृत्त और भक्ति प्रसगो का सुललित वर्णन इस कृति मे हुआ है। जलधरनाथ के अनादि अनन्त स्वरूप, नाथ भक्ति की महत्ता, योग साधना आदि विषयो का समावेश भी इस कृति मे है।

इस कृति का वस्तु-फलक व्यापक है, फिर भी इसे प्रबन्ध काव्य नही कहा जा सकता। एक कथासूत्रता के अतिरिक्त प्रबन्ध काव्य के अन्य अनिवार्य लक्षणो का भी इसमे अभाव है। निस्सदेह नाथ भक्ति की अविरल धारा इस कृति मे प्रवाहित है। लेखक के जीवन पर प्रकाश डालने वाली कुछ घटनाओ का उल्लेख भी इस कृति मे हुआ है। काव्य के साथ स्थान-स्थान पर गद्य का प्रयोग भी है। अपनी काव्य प्रवृत्ति के अनुसरण मे मानसिंह ने इस कृति मे भी अपना छन्द-कौशल दिखाया है। यह कृति भी अभी अप्रकाशित ही है।

---

१ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। ह० लि० गुटका १।

२ " प्रकाश—जो० " " गु० ४।

१७ कवित्त शृंगार इकतीसी
१८. शृंगार बत्तीसे
१९ श्री सकपां रा दूहा
२० कवित्त श्री सकपां रा
२१ दूहा परमारथ
२२ दूहा व्रजभाषा में
२३ दूहा सजोग शृंगार-देस भाषा में
२४ दूहा भाषा हिन्दुस्तानी पंजाबी में
२५ पद ऋतुवर्णन
२६ नाथ चरित
२७ शृंगार के पद
२८. विजोग शृंगार रा दूहा—देस भाषा में
२९ चौरासी पदार्थ नामावली
३ नाथपण्डित सवाद
३१ नाथकथा कथन
३२ अनुभव मंजरी
३३ नाथ वर्णन
३४ नाथ कीर्तन (नाथ पद संग्रह)
३५. सेवा सार
३६ नाथजी री आरती
३७. नाथ स्तोत्र
३८. नाथजी रा दूहा
३९. राम रत्नाकर
४ श्री मानसिंह के स्याम छन्दे
४१ रास चन्द्रिका
४२ जलंधरनाथजी री निसांणी
४३ जलंधरनाथजी रो अष्टक
४४ राजा हमीर री वारता
४५ भक्ति और अध्यात्म के पद
४६ नाथ चरित्र प्रकरण छन्द संग्रह]
४७. मण्डूकोपनिषद् की विद्वद् मनोरंजनी टीका
४८. पदार्थ नामावली
४९ होरी हिंडोर
५ नायिका विहार

इस सन्दर्भ में मैं उपर्युक्त कृतियों की प्रामाणिकता विषय सामग्री और उनके रचनाकाल
रचनाकाल के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करना चाहूँगा। मानसिंह की किसी भी कृति में रचना-

११ नाथ चरित्र[1]— श्री नाथजी के चरित्र पर [illegible] यह [illegible] है। इसमें बड़े आकार के [illegible] पत्र हैं। [illegible] विस्तार से [illegible] किया गया है।

नाथजी का माहात्म्य [illegible] स्थानों का भी इसमें वर्णन है। [illegible] गुरु की वन्दना, [illegible] की स्तुति, [illegible] की व्याख्या, [illegible] आदि का वर्णन इस कृति में विस्तार से हुआ है। [illegible] स्थान-स्थान पर कवि का काव्य-कौशल भी दृष्टव्य है।

ऋतु वर्णन अत्यन्त हृदयग्राही है। [illegible] के साथ [illegible] रूप में हुआ है। कथाओं और नाथ दर्शन के [illegible] प्रसंग [illegible] साथ-साथ [illegible] और [illegible] के रूप में भी वर्णित हुए हैं।

[illegible] कथा-क्रम और प्रबन्ध काव्य के अन्य लक्षणों का इस कृति में अभाव है। अस्तु, चरित-काव्य होते हुए भी यह प्रबन्ध काव्य नहीं है।

१२ मान पंडित संवाद[3]— यह कृति अपूर्ण ही प्राप्त हुई है। इसमें छोटे आकार के कुल ११८ पत्र हैं। प्रारम्भ के २८ पत्र उपलब्ध नहीं हैं। इसका वर्ण्य विषय भी नाथ-दर्शन का विवेचन है। नाथ को ही सर्वोत्कृष्ट रूप माना गया है। इस संसार-सागर में जालंधरनाथ का अवलम्ब ही विश्वसनीय है। वैष्णवधर्म और अन्य उपासना-पद्धतियों का खण्डन किया गया है।

विविध छन्द, पद और गद्य का प्रयोग इस कृति में हुआ है। काव्य शैली वही वर्णनात्मक है।

१४ मानदशा कथन[3]— यह कृति अपूर्ण है। मान पंडित संवाद के गुटके में ही यह संग्रहित है। तथ्य-संचित ही इसका वर्ण्य विषय है। संभवतः इसकी रचना मानसिंह के जालोर निवास के समय हुई थी। नाथ कृपा के प्रभाव में मान का जीवन अत्यन्त क्लेश-मय और नैराश्य ग्रस्त था। श्रीनाथ के वियोग में मानसिंह की आत्मदशा का अत्यन्त कारुणिक वर्णन इस कृति में हुआ है। इसमें दवावैत शैली के राजस्थानी गद्य का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर हुआ है।

१५ अनुभव मंजरी[4]— यह कृति कुल ५ पत्रों में है और इसमें केवल ६२ दोहे हैं। कुछ प्रतियों में इस कृति का नाम 'नाथजी रा दोहा' भी मिलता है। नाथानुभूति का अत्यन्त

---

१ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। नाम गुटका संख्या ५।
२ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। गुटका सं० १४।
३ ,, ,, ,,
४ ,, ,, ,,

३ सिद्ध सम्प्रदाय ग्रन्थ[1]— इस कृति में केवल सात दोहे हैं। आदिकाल और मध्य काल में छोटी बड़ी कृति को ग्रन्थ कहने की परम्परा थी। नाथजी की स्तुति और नाथ दर्शन का संक्षिप्त विवेचन इस कृति के विषय हैं।

४ सिद्ध मुक्ताफल ग्रंथ[2]— यह कृति भी अत्यन्त लघु है। इसमें केवल ११ दोहे हैं। इस कृति में भी नाथ दर्शन का मुख्य रूप से संक्षिप्त विवेचन हुआ है।

५. तेज मंजरी[3]— इस कृति में २२ दोहे और सोरठे हैं। नाथजी के तेजोमय स्वरूप का इस कृति में चित्रण हुआ है।

६ प्रश्नोत्तर ग्रन्थ[4]— इस कृति में कुल ४ दोहे और सोरठे हैं। प्रश्नोत्तर शैली का इसमें आश्रय लिया गया है। स्वयं गणेश ने गोरखनाथ से नाथ-दर्शन के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न किये हैं और गोरखनाथ ने उनके उत्तर देकर नाथ-सम्प्रदाय के दर्शन को स्पष्ट किया है। सुरति-निरति योग की चर्चा भी इस कृति में हुई है।

७. पंचावली[5]— यह कृति भी अति लघु है। इसमे केवल ११ छन्द हैं—सभी दोहा और सोरठा। नाथोत्पत्ति विषय का इसमें संक्षिप्त विवेचन हुआ है।

८ सिद्ध सभा[6]— इस कृति में केवल २७ छन्द हैं—दोहा सोरठा और कवित्त। इसमें नाथ सम्प्रदाय के साधना-मार्ग का संक्षेप से विवेचन किया गया है। योगी वेश और तांत्रिक की साधना-पद्धतियों की आलोचना की गई है।

९ सवैया रा दूहा — यह कृति अपूर्ण है। इस प्रति में केवल चार सोरठे ही हैं। अपने गुरु देवनाथ की जिन्होंने नाथ भक्ति के लिए मानसिंहजी को प्रेरित किया था इसमें महिमा गाई गई है।

१० कवित्त श्री लक्ष्मी रा[7]— यह कृति भी अपूर्ण है। यह प्रति खण्डित है। इसमें केवल एक ही कवित्त है। इसका विषय भी नाथ सम्प्रदाय के अपने गुरु देवनाथ का स्तुति गान ही है।

११ दूहा परमारथ[8]— इस कृति में केवल २५ दोहे हैं। इन दोहों की विषय वस्तु भी नाथ-भक्ति ही है। नाम और उपासना पद्धति का विवेचन भी हुआ है।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गु० नं० ११।
[2] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका नं० ११।
[3] " "
[4] "
[5] " "
[6] " "
[7] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। नाथ गुटका नं० ५।
[8] " " "
[9] " "

१२. नाथ चरित्र[1]— श्री नाथजी के चरित्र पर रचित मानसिंह की यह एक महत्त्वपूर्ण काव्य कृति है। इसमें बड़े आकार के कुल ८३ पत्र हैं। यह ग्रंथ पूर्ण रूप में प्राप्त है। इस काव्य का वर्ण्य विषय तीन प्रबन्धों में विभाजित है। प्रबन्धों को पुनः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

नाथजी का माहात्म्य वर्णन इस कृति का मूल विषय है। अनेक प्रकारान्तर नाथभक्ति की कथाओं का भी इसमें समावेश है। देवनाथ गुरु की वन्दना, जोगेश्वरों की स्तुति, योग दीक्षा, नाथ दर्शन की व्याख्या, गोपीचन्द मैनावती की कथा, कन्नोज के राजा की नाथ भक्ति की कथा आदि का वर्णन इस कृति में विस्तार से हुआ है। इसमें वर्णन की प्रधानता है किन्तु स्थान स्थान पर कवि का काव्य-कौशल भी दृष्टव्य है।

ऋतु वर्णन अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। डिंगल छन्दों के साथ संस्कृत वृत्तों का प्रयोग भी इस ग्रंथ में हुआ है। कथाओं और नाथ दर्शन के कुछ प्रसंग पद्य के साथ-साथ व्रज और राजस्थानी के गद्य में भी वर्णित हुये हैं।

सगठित कथा-क्रम और प्रबन्ध काव्य के अन्य लक्षणों का इस कृति में अभाव है। अस्तु, चरित-काव्य होते हुए भी यह प्रबन्ध काव्य नहीं है।

१३ मान पंडित सवाद[2]— यह कृति अपूर्ण ही प्राप्त हुई है। इसमें छोटे आकार के कुल ११८ पत्र हैं। प्रारम्भ के २८ पत्र उपलब्ध नहीं हैं। इसका वर्ण्य विषय भी नाथ-दर्शन का विवेचन है। नाथ को ही सर्वोत्कृष्ट देव माना गया है। इस ससार-सागर में जालंधरनाथ का अवलम्ब ही विश्वसनीय है। वैष्णवधर्म और अन्य उपासना-पद्धतियों का खण्डन किया गया है।

विविध छन्द, पद और गद्य का प्रयोग इस कृति में हुआ है। काव्य शैली वही वर्णनात्मक है।

१४ मानदशा कथन[3]— यह कृति अपूर्ण है। मान पंडित सवाद के गुटके में ही यह सग्रहित है। नाथ-भक्ति ही इसका वर्ण्य विषय है। सभवत इसकी रचना मानसिंह के जालोर निवास के समय हुई थी। नाथ कृपा के अभाव में मान का जीवन अत्यन्त क्लेशमय और नैराश्य ग्रस्त था। श्रीनाथ के वियोग में मानसिंह की आत्मदशा का अत्यन्त कारुणिक वर्णन इस कृति में हुआ है। इसमें दवावैत शैली के राजस्थानी गद्य का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर हुआ है।

१५ अनुभव मजरी[4]— यह कृति कुल ५ पत्रों में है और इसमें केवल ९२ दोहे हैं। कुछ प्रतियों में इस कृति का नाम 'नाथजी रा दोहा' भी मिलता है। नाथानुभूति का अत्यन्त

---

[1] पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। मान गुटका सख्या ५।

[2] पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। गुटका स० १४।

[3] " " "

[4] " " "

सहज रूप में इस कृति में वर्णन हुआ है। तीर्थ व्रत वेद ब्राह्मण कर्म काण्ड आदि का खण्डन किया गया है।

१६ नाथ वर्णन ग्रंथ[1]— इस ग्रंथ में नाथजी की भक्ति के पद हैं। पद्यांक १११ ही उपलब्ध हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रति अपूर्ण है। अन्य विविध छन्दों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। कुछ स्थलों पर गद्य का उपयोग भी किया गया है। पद शास्त्रीय और लोक संगीत की राग रागनियों पर आधारित हैं। प्रियतम नाथजी के वियोग में प्रियतमा आत्मा अन्तर्वेदना की ज्वाला से पीड़ित है। इस कृति में मधुराभक्ति का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

१७ नाथ कीर्तन[2]— इस कृति में कुल आकार के बड़े २८ पत्र हैं। इसमें नाथजी के कीर्तन के पद हैं। पदों की भाषा ब्रज और राजस्थानी है। पद शास्त्रीय और राजस्थानी लोक संगीत की राग रागनियों पर आधारित हैं। नाथ कीर्तन के साथ नाथ सम्प्रदाय के दर्शन का विवेचन भी पदों में हुआ है। कुछ कूट पद और उलटबासियाँ भी इस कृति में हैं। प्रेमाभक्ति की तीव्र अभिव्यंजना इन पदों में परिलक्षित होती है। गीत-काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से यह ग्रंथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

१८ सेवासार[3]— यह कृति केवल चार पत्रों में है। पत्र बड़े आकार के हैं। दोहा और सोरठा का प्रयोग इसमें हुआ है। कम तम गद्य का प्रयोग भी है। वर्ण्य विषय नाथ-सेवा है। नाथजी की सेवा किस विधि से की जाय? अष्टपुरी सेवा की विधि नित्य सेवा की विधि आदि का इसमें विवेचन हुआ है।

१९. नाथजी की आरतियाँ[4]— इस कृति में केवल १ आरतियाँ संग्रहित हैं। प्रति अपूर्ण प्रतीत होती है। आरतियों का विषय नाथजी की स्तुति है। यह आरतियाँ शास्त्रीय राग रागनियों पर आश्रित हैं।

२ नाथ स्तोत्र[5]— यह तीन पत्रों की एक छोटी सी कृति है। इसमें कुल १९ कवित्त हैं। इन कवित्तों में नाथजी की स्तुति की गई है।

२१ जलंधरनाथजी री निशाणी[1]— यह कृति बड़े आकार के तीन पत्रों में है। इसमें छप्पय छन्द का प्रयोग हुआ है। विषय जालंधरनाथजी की स्तुति ही है। मानसिंहजी के जीवन की कुछ घटनाओं का भक्ति के प्रसंग में उल्लेख भी है। इस कृति में छप्पय छन्द के कतिपय भेद दृष्टव्य हैं।

---

पुस्तक प्रकाश जोधपुर। गुटका संख्या १४।
पुस्तक प्रकाश जोधपुर। गुटका संख्या १७।
[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। ग्रन्थ संख्या ४।
"    "    । ग्रन्थ संख्या ४।
[4] प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर। ग्रन्थ संख्या १८६२१।

## कृष्ण भक्ति की रचनायें

१ कृष्ण विलास[1]— यह मानसिंहजी की प्रकाशित कृति है। इसमें भागवत् के दसम् स्कन्ध के प्रारम्भ के ३२ अध्यायों की कथा वर्णित हुई है। कृष्ण जन्म से लेकर गोपी-सांत्वना प्रसंग तक की घटनायें इस काव्य में चित्रित हुई है। प्रकाशित कृष्ण विलास के सम्पादक प० विश्वेश्वरनाथ रेउ ने इसे भागवत् के दसमस्कन्ध का भाषानुवाद कहा है किन्तु यह अनुवाद मात्र नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि कथावस्तु दसमस्कन्ध के ३२ अध्यायों की ही है किन्तु कवि की मौलिक दृष्टि के भी उदाहरण इस कृति में विद्यमान है। इस कृति का काव्य-सौन्दर्य भी उत्कृष्ट है। कवित्त, सवैया, कुण्डलिया, छप्पय के साथ संस्कृत के वृत्तों का प्रयोग भी कवि ने किया है। सवादों का इस कृति में आधिक्य है और चित्रात्मकता और नाटकीयता का सफल निर्वाह इस कृति में हुआ है।

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में कृष्ण विलास की एक हस्तलिखित प्रति विद्यमान है। इस प्रति पर 'भागवत् भाषा दशमस्कन्ध' नाम मिलता है। संभव है सम्पादक प० रेउ ने इसका नामकरण कृष्ण विलास कर दिया हो। पुस्तक प्रकाश की प्रति पर भी कृष्ण विलास नाम नहीं मिलता। यह लेखक का प्रबन्ध काव्य कहा जा सकता है।

२ रास चन्द्रिका[2]— यह मानसिंह की एक लघु काव्य कृति है। इसमें कृष्ण और गोपिकाओं की रास-क्रीड़ा का वर्णन है। यह संयोग शृंगार काव्य है। प्रारम्भ में कृष्ण भक्ति के दोहे दिये गये है। कवित्त, छप्पय और सवैया छन्दों का इस कृति में प्रयोग हुआ है। प्रकृति चित्रण भी सजीव और उद्दीपक बन पड़ा है।

### रामभक्ति काव्य

१ राम विलास[3]— भगवान् राम के जीवन वृत्त पर आधारित लेखक की यह एक लघु काव्य कृति है। इसकी केवल एक प्रति पुस्तक प्रकाश में प्राप्त हुई है—वह भी अपूर्ण और जीर्ण-शीर्ण। प्रारम्भ में गणेश, शिव और सरस्वती की वंदना की गई है। भगवान् मनु और सतरूपा की कथा, स्वयंभू और मनु के वरदान का वृत्त, भारद्वाज, विश्वेश्रवा आदि के आख्यानों का इस कृति में समावेश हुआ है। कथावस्तु में तारतम्य और संगठन का अभाव है। भाषा राजस्थानी और ब्रज मिश्रित है। नाराच, वेताला, त्राटक, गीतिका आदि छन्दों का विशेष प्रयोग हुआ है। कुछ स्थलों पर प्रकृति चित्रण सफल बन पड़ा है।

२ रामावतार[4]— रामजन्म के कथानक पर रचित यह मानसिंह की संस्कृत काव्य कृति है किन्तु इसका केवल एक ही पत्र प्राप्त है। प्रारम्भ और अन्त में कोई पुष्पिका भी नहीं है।

---

१ मारवाड स्टेट प्रेस मे मुद्रित। सम्पादक-प० विश्वेश्वरनाथ रेउ।

२ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। काव्य गुटका संख्या ३।

३ " " " संस्कृत ह० लि० ग्रं० ३०६।

४ " " "

## शृंगार काव्य (संयोग व विप्रलम्भ)

१ कवित्त शृंगार इकतीसो[1]— इस कृति में कुल ३१ कवित्त हैं—विषय है संयोग शृंगार। प्रकृति चित्रण भी समोद्दीपक बन पड़ा है। भाषा ब्रज और राजस्थानी मिश्रित है।

२ शृंगार बरवै[2]— यह कवि की बहुत लघु काव्य-कृति है। बरवै छन्द में नायिका के नखशिख मान और अन्य हाव भाव का अत्यन्त मार्मिक वर्णन हुआ है। यह कृति भी अपूर्ण ही प्रतीत होती है। इसमें केवल १२ छन्द हैं। अन्त में कोई पुष्पिका भी नहीं है।

३ दूहा ब्रज भाषा में[3]— यह एक छोटी सी काव्य-कृति है। इसमें नायिका के नखशिख और हाव भाव का वर्णन है। यद्यपि कृति के नामकरण के अनुसार भाषा ब्रज ही है किन्तु राजस्थानी और पंजाबी के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है। इसमें केवल २ दोहे हैं।

४ दूहा संयोग शृंगार—देश भाषा में — इस कृति में कुल ८१ दोहे हैं—भाषा राजस्थानी है। विषय संयोग शृंगार है। नायिका का नखशिख वर्णन और सापेक्ष प्रकृति चित्रण भी इस कृति में हुआ है। वयण सगाई अलंकार का प्रत्येक दोहे में निर्वाह हुआ है। इस कृति के एक-एक दोहे में मानसिंह की काव्य-गरिमा के दर्शन होते हैं।

५ संयोग शृंगार रा दूहा[4]— इस कृति में केवल १२ दोहे हैं। कृति का नामकरण 'संयोग शृंगार' है किन्तु इस कृति के प्रत्येक दोहे में 'विप्रलम्भ' का अत्यन्त हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है।

६ दूहा भाषा हिन्दुस्तानी पंजाबी में[5]— यह एक छोटी सी काव्य कृति है—केवल २ दोहों की। इसका विषय भी संयोग-वियोग शृंगार ही है। कवि ने इस कृति की भाषा को 'हिन्दुस्तानी पंजाबी' कहा है। इस भाषा से उनका अर्थ सम्भव है ब्रज उर्दू फारसी पंजाबी और राजस्थानी के मिश्रित-स्वरूप से ही रहा हो। इन दोहों में उपर्युक्त सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है किन्तु काव्य की सहजता सुरक्षित रह गई है। मानसिंह बहुभाषाविद थे यह कृति इसका अकाट्य प्रमाण है।

### प्रकृति काव्य

१ उद्यान वर्णन — यह कवि का प्रकृति-काव्य है। पुस्तक प्रकाश में इसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति में ६ पद्य हैं और दूसरी में केवल चार। कृति अपूर्ण है।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[2] " " । काव्य गुटका संख्या १४।
[3] " " "
[4] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[5] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[6] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। काव्य ग्रन्थ १।

उद्यान की शोभा—लता द्रुम, पादप-पुष्प और वसन्तागमन का अतिशय सुन्दर चित्रण इस काव्य कृति में हुआ है। इसमें पद्धरि छन्द का विशेष प्रयोग किया गया है।

२ षड् ऋतु वर्णन[1]— यह ऋतु काव्य की एक छोटी सी कृति है। ६ × ४ के आकार के इसमें कुल ३५ पत्र हैं। छहों ऋतुओं का काव्य सौन्दर्य में सुन्दर मार्मिक चित्रण इस कृति में हुआ है। ऋतु वर्णन के साथ नायिका के अंग प्रत्यंग व षोडश शृंगार का वर्णन भी इस कृति में है।

## गीति काव्य

१ राग रत्नाकर[2]— कुछ शोध विद्वानों ने इसे राग सागर भी कहा है। पुस्तक प्रकाश में मुझे जो प्रति मिली है उस पर 'राग रत्नाकर' नाम का उल्लेख है। यह कृति बड़े आकार के १८ पत्रों में है। शास्त्रीय और राजस्थानी लोक संगीत की राग-रागनियों पर आधारित कवि की यह संयोग और वियोग शृंगार की गीत काव्य की कृति है। इसमें कुछ पद कृष्ण भक्ति के भी हैं। दोहे भी है। कुछ पदों का सरगम भी दिया गया है। मानसिंह रसीलाराज के नाम से भी गीति रचना किया करते थे। इस ग्रंथ के पदों में रसीलाराज, नृपमान, रसराज आदि का प्रयोग हुआ है। रेऊजी व आसोपाजी इन्हें मानसिंह के ही उपनाम मानते हैं। गीत अत्यन्त सरस और मधुर है।

२ मानसिंहजी साहबां री बणावट रा ख्याल-टप्पा[3]— यह मानसिंह द्वारा रचित गीति काव्य की एक बड़ी कृति है। यह ११६ पत्रों में है और अनुमान से इसमें ५५० पद हैं। विषय संयोग-वियोग शृंगार है। कृति का नामकरण भ्रामक है। इसमें भी शास्त्रीय और लोक संगीत की राग-रागनियों पर आधृत पद है। कल्पना की उड़ान, अलंकारों की छटा, सहज अभिव्यंजना, गेयत्व, हृदयस्पर्शिता आदि गीत काव्य के तत्व सभी पदों में विद्यमान है।

३ शृंगार पद[4]— इस कृति के सम्पूर्ण पद शृंगार (संयोग-वियोग) के है। इसमें बड़े आकार के ७४ पत्र हैं। यह पद भी शास्त्रीय और राजस्थानी लोक संगीत की राग-रागनियों पर आधृत हैं। प्रकृति चित्रण (सापेक्ष और निरपेक्ष) भी इन पदों में हुआ है। इस कृति के कुछ पदों का संग्रह 'रसीलैराज रा गीत' नाम से परम्परा के विशेषांक (प्रस्तुत अंक) के रूप में राजस्थानी शोध संस्थान ने प्रकाशित किया है।

४ **होरी हिलोर**[5]— यह प्रकाशित है। इसमें मानसिंह द्वारा रचित होरियाँ संग्रहित हैं।

---

1 पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। नाथ गुटका ५।
2 पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। ग्रन्थ संख्या ६।
3 पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। संगीत गुटका ३३।
4 पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। ग्रन्थ संख्या ३।
5 मुद्रक सरदारमल थानवी, श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर, १९२७।

## शृंगार काव्य (संयोग व विप्रलम्भ)

१ कवित्त शृंगार इक्तीसी[1]— इस कृति में कुल ३१ कवित्त हैं—विषय है संयोग शृंगार। प्रकृति चित्रण भी उद्दीपक रूप पक्ष है। भाषा ब्रज और राजस्थानी मिश्रित है।

२ शृंगार बरवै[2]— यह कवि की अद्भुत लघु काव्य-कृति है। बरवै छन्द में नायिका के नखशिख मान और अन्य हाव भाव का अत्यन्त मार्मिक वर्णन हुआ है। यह कृति भी अपूर्ण ही प्रतीत होती है। इसमें केवल १२ छन्द हैं। अन्त में कोई पुष्पिका भी नहीं है।

३ दूहा ब्रज भाषा में[3] — यह एक छोटी सी काव्य-कृति है। इसमें नायिका के नखशिख और हाव भाव का वर्णन है। यद्यपि कृति के नामकरण के अनुसार भाषा ब्रज ही है किन्तु राजस्थानी और पंजाबी के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है। इसमें केवल २ दोहे हैं।

४ दूहा संयोग शृंगार—देस भाषा में — इस कृति में कुल ८९ दोहे हैं—भाषा राजस्थानी है। विषय संयोग शृंगार है। नायिका का नखशिख वर्णन और सापेक्ष प्रकृति चित्रण भी इस कृति में हुआ है। वैण सगाई अलंकार का प्रत्येक दोहे में निर्वाह हुआ है। इस कृति के एक-एक दोहे में मानसिंह की काव्य-गरिमा के दर्शन होते हैं।

५. संयोग शृंगार रा दूहा[4]— इस कृति में केवल १२ दोहे हैं। कृति का नामकरण 'संयोग शृंगार' है किन्तु इस कृति के प्रत्येक दोहे में 'विप्रलम्भ' का अत्यन्त हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है।

६ दूहा भाषा हिन्दुस्तानी पंजाबी में[5]— यह एक छोटी सी काव्य कृति है—केवल २ दोहे की। इसका विषय भी संयोग-वियोग शृंगार ही है। कवि ने इस कृति की भाषा को 'हिन्दुस्तानी पंजाबी' कहा है। इस भाषा से उनका अर्थ संभव है कि उर्दू फारसी पंजाबी और राजस्थानी के मिश्रित-स्वरूप से ही रहा हो। इन दोहों में उपर्युक्त सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है किन्तु काव्य की सहजता सुरक्षित रह गई है। मानसिंह बहु भाषाविद् थे यह कृति इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

### प्रकृति काव्य

१ उद्यान वर्णन — यह कवि का प्रकृति-काव्य है। पुस्तक प्रकाश में इसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति में ६ पद हैं और दूसरी में केवल चार। कृति अपूर्ण है।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ३१।
[2] „ „ । काव्य गुटका संख्या १४।
[3] „ „ „
[4] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ३१।
[5] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ३१।
पुस्तक प्रकाश जोधपुर। काव्य ग्रन्थ १।

५. बहार बाटिका[1]— यह कृति भी प्रकाशित है। इसमें बसन्त वैभव के सरस प
का संग्रह है। शृंगार का समावेश भी है।

६. भक्ति और अध्यात्म के पद[2]— मानसिंह ने भक्ति और अध्यात्म विषय के अनेक पद लिखे थे। पुस्तक प्रकाश में विभिन्न गुटकों और बस्तों में यह संग्रहित है। राजस्थान वयोवृद्ध साहित्यकार और चिन्तक स्व. रामगोपालजी मोहता ने मानसिंह के इन पदों सम्पादित कर तीन संग्रह (मान पद संग्रह) प्रकाशित कराये थे। जिस प्रकार मानसिंह शृंगार-पद लोक-कण्ठ पर आज भी विद्यमान हैं उसी प्रकार उनके भक्ति और अध्यात्म पद भी खूब लोक-प्रचलित हैं। कीर्तनों में यह खूब गाये जाते हैं। मोहताजी द्वारा सम्पादित और प्रकाशित इन संग्रहों में मानसिंहजी के भक्ति नीति और अध्यात्म विषय स्फुट छन्द (दोहा सोरठा अथवा कवित्त) भी हैं। यदि मानसिंह के भक्ति विषयक सम्पूर्ण पद साहित्य को प्रकाशित किया जाय तो ऐसे अनेक संग्रह और तैयार हो सकते हैं। मानसि की नाथ वाणियाँ और ओगीड़े तो राजस्थान में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

## कोश काव्य

१. चौरासी पदार्थ नाममाला ग्रंथ[3]— पुस्तक प्रकाश में यह कृति पदार्थ अथवा ग्रंथ के नाम से विद्यमान है। यह सम्पूर्ण कृति दोहा छन्द में लिखी गई है। इसमें दर्शन धर्म ज्योतिष भूगोल राजनीति पुराण खगोल इतिहास साहित्य आदि विषयों से सम्बन्धित अनेक सूचनायें दी गई हैं। एक अर्थ में यह संक्षिप्त विश्व ज्ञान कोश है। काव्य-सौन्दर्य के स्थान पर इस कृति में कवि की बहुज्ञता दर्शनीय है। संस्कृत में ऐसे कोशों की परम्परा र है। राजस्थानी साहित्य में भी ऐसे कोश मिलते हैं। राजस्थानी पदार्थ कोशों की परम्परा म मानसिंह की इस कृति का भी पर्याप्त महत्व है। यदि यह प्रकाशित हो तो विद्यार्थियों के लिए इस कृति की उपयोगिता असंदिग्ध होगी।

२. एकाक्षरी नाम माला[4]— यह कृति बहुत छोटी है। इसमें केवल १४ दोहे हैं। एक ही अक्षर के विविध अर्थमय नामों को प्रकट करने वाला यह कोश है। इसके रचयिता के सम्बन्ध में विवाद है। कुछ विद्वान् इसे वीरभाण रतनू की कृति मानते हैं। मैंने इस कोश की एक प्रति एस. डी. एम. इण्डस्ट्रीज़ जोधपुर में देखी है और उसके अन्त में दी गई पुष्पिका और रचनाकाल से स्पष्ट सिद्ध होता है कि यह कृति मानसिंह की है। मानसिंह ने कोश ग्रंथ लिखे भी हैं। वे बहुज्ञ पंडित थे—केवल कवि ही नहीं थे। इस कोश में प्रयुक्त भाषा-शैली भी मानसिंह की शैली से साम्य रखती है। अतः अपनी मान्यता तो यही है कि यह कृति मानसिंह की ही है।

---

[1] मुद्रक हरदासमल बाफना श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस जोधपुर, सन् १९१४।

[2] मान पद संग्रह (भाग १ २ ३) संग्रहकर्ता—रामगोपाल मोहता।

[3] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। काव्य गुटका बस्ता न.।

[4] एस. डी. एम. इण्डस्ट्रीज़ जोधपुर। ६ पं.।

राजस्थानी की मधु प्र म कथायें पत्र डायरी रोजनामचा भादि विविध गद्य विभागों में मानसिंहजी लिखा करते थे। इनके द्वारा लिखे गये राजनैतिक पत्र (अंग्रेजों और अन्य राजाओं के साथ पत्र-व्यवहार) राजस्थानी गद्य साहित्य की अच्छी सम्पत्ति है। इनकी काव्य-कृतियों में भी गद्य साहित्य स्थान-स्थान पर विद्यमान है। कहीं पर यह साधारण कोटि का है तो कहीं पर अत्यन्त अलंकृत और ललित। मानसिंह उच्च कोटि के इतिहास लेखक भी थे। अंग्रेजी के प्रसिद्ध इतिहासकार जेम्स टॉड को हजारों पृष्ठों की ऐतिहासिक सामग्री इन्होंने दी थी। स्वयं टॉड ने[1] इसे स्वीकार किया है।

**स्फुट काव्य**— मानसिंह का स्फुट काव्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। इनके द्वारा रचित दोहे सोरठ सवैया कवित्त और डिंगल गीत सैकड़ों की संख्या में है जो किसी विशेष प्रसंग और अवसर को लेकर लिखे गये हैं। इन मुक्तकों का विषय मुख्य रूप से नीति भक्ति और शृ गार है। कविराजा बाँकीदासजी इनके काव्य गुरु थे। बहुत से मुक्तक मानसिंहजी और बाँकीदासजी के पारस्परिक संवादों के रूप में भी मिलते हैं। ऐतिहासिक प्रसंगों के डिंगल गीत भी मानसिंह ने खूब लिखे हैं।

**संस्कृत रचनायें**— मानसिंहजी बहु भाषाविद्‌ और अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। संस्कृत भाषा पर उनका अच्छा अधिकार था। अपनी डिंगल और ब्रजभाषा की प्रबन्ध रचनाओं में भी इनकी संस्कृत काव्य-रचना का प्रमाण मिलता है। अपनी अधिकांश काव्य-कृतियों का मंगलाचरण इन्होंने संस्कृत में ही लिखा है। इनकी डिंगल और ब्रज भाषा पर भी संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। अद्यावधि इनके द्वारा संस्कृत में प्रणीत जो काव्य रचनायें प्राप्त हुई है वे निम्नांकित हैं—

१ माण्डूक्योपनिषद्‌ की विद्वन्मनोरंजनी टीका — माण्डूक्योपनिषद्‌ के केवल प्रथम खण्ड के श्लोकों पर ही यह टीका है। सम्भव है पूरे उपनिषद्‌ पर टीका लिखी हो किन्तु वह प्राप्त नहीं है न किसी विद्वान्‌ ने इसकी उपलब्धता के सम्बन्ध में कोई सूचना दी है। प्रारम्भ में संस्कृत में ही मंगलाचरण है। फिर उपनिषद्‌ के मंत्र है और उन पर टीका है। टीका का कुछ अंश ब्रज भाषा गद्य में भी है। यह कृति छोटे आकार के केवल १२ पत्रों में है।

२ नाथ चरित्र प्रबन्ध ग्रन्थ — इस कृति में नाथजी का चरित्र—उनके प्रणादि वैभव का कीर्तन है। सम्पूर्ण कृति संस्कृत में है किन्तु कुछ स्थलों पर ब्रजभाषा पद्य का प्रयोग भी हुआ है। कुल पत्रांक ८१ है। इसमें संस्कृत वृत्त अनुष्टुप्‌ आदि का प्रयोग हुआ है।

३ नाथ स्तोत्रम्‌— इस कृति के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि मानसिंह ने कोई ऐसा संस्कृत-ग्रन्थ लिखा था। यह कृति अभी तक कहीं पर भी उपलब्ध नहीं हुई है। रेउजी का अनुमान है कि मानसिंह ने यह कृति लिखी थी और इसमें अनु

---

[1] राजस्थान कर्नल टॉड जि २।

पुस्तक प्रकाश जोधपुर। संस्कृत ह लि ग्रं संख्या १ ६।

[2] „ संस्कृत ह लि ग्र संख्या ४७ ४७।

अस पर अस पर सीस अधतल पर
या गुपात तस कर दूर जाग सारे को
गोरी भुज दड पर लाल की अखंड लर
मोहन अखड वर सोभा रिझवारे की
[ कृष्ण विलास ]

आज रसीलो उमग रो रग बरसे ॠ गात
पाम पडी छै पीव रे गोरी कचन गात
गुल क्यारी सी गदगदी वेल लह लही वाग
गाळी गावै गुण भरी सहिया भरी सुहाग
सुप सु मुख अधरा अधर उरसू उर द्रग दोय
एकमेक यू ह्वै रह्या जळमिसरी ज्यू होय
[ दुहा सजोग शृ गार ]

वियोग शृ गार—

रे रे वन मोर मेरे स्याम के लहन हार
देखे वल वीरजू के चिन्ह किहु थान हैं
पद्म से पाय धीरै धारियतु धरनि माझ
रामानुजस्याम सोतो मेरे प्रिय प्रान हैं
कुडल की झलक अलक छुटि नागिन सी
तट की वनमाल तैसी विस्व की लुभान है
ऐसे व्रजनाथ मोहि दीजिये वताय नातो
प्रानेश्वर वृन्दावन चदजू की आन है
[ कृष्ण विलास ]

साजनिया थासू लगी, या चटकीली आख
निस दिन पथ निहारती, रही झरोखा झांख
गोरे मुखडे सावळी, जुलफ रही उळझाय
आव विदेसी वेग धर, साजनिया सुळझाय
काजळ ह्वै रह्यो काळमा, पानत बोल प्रहार
वेणी ह्वै रहि विपधरी, भूषण ह्वै रह्या भार
[ दुहा सजोग शृ गार ]

, सन्यास को धार लहे तब तीनो ही लोक करे जो गुलामी
...ह रहे परवाह नही वह तीनो ही लोक को है जो स्वामी
...ही सन्यासी बन्यो जिन पाय लियो उर मे वन नामी
...रग है उनको जिन जान लियो उर अन्तर्यामी
[ स्फुट काव्य ]

मोमी लिपिक और प्रतिलिपिकार थे। कुछ नाम प्रतिलिपियों और पुस्तक प्रकाश संग्रहालय की बहियों में मिलते हैं।

संक्षेप में यह कहना चाहिए कि मानसिंह की कृतियों का रचना काल रचना स्थान और प्रतिलिपिकार के सम्बन्ध में निश्चित ज्ञातव्य आज भी प्राप्त नहीं है।

कला—

मानसिंह रीतिकाल के अन्तिम चरण के कवियों में से है। राजस्थानी और हिन्दी साहित्य दोनों के रीतिकाल का अन्त संवत १६ माना जाता है। इसी वर्ष मानसिंह का अवसान हुआ। अस्तु मानसिंह के साहित्य पर रीतिकाल की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों का प्रभाव प्रवहर्यमावी रूप से है। रीतिकाल में मुक्तक-काव्य रचना की प्रवृत्ति मुख्य थी। मानसिंह ने भी मुक्तक-काव्य ही अधिक लिखा है। उनके नाथ और जसवर पर रचित चरित काव्यों में प्रबन्धाभास मात्र है—वे भी मुक्तक की प्रवृत्ति के अधिक निकट हैं। मुक्त ऋतु वर्णन नख शिख प्रकार नविध्य शृंगार (संयोग वियोग) चित्रण और अन्य रीति कालीन प्रवृत्तियों का स्पष्ट-दर्शन मानसिंहजी के काव्य में होता है। हाँ चमत्कार प्रदर्शन और आचार्यत्व का विमोह इनमे दिखाई नहीं देता।

रीतिकाल के कवि होते हुये भी मानसिंह ने नाथ-भक्ति का विपुल काव्य निर्मित किया यह उनकी एकान्त विशेषता मानी जानी चाहिये। यद्यपि रीतिकाल में भक्ति काव्य की क्षीण अन्तःसलिला रीति और शृंगार से आच्छन्न होकर प्रवाहित रही है किन्तु मानसिंह की भक्ति सम्बन्धी काव्य-कृतियाँ विशुद्ध रूप से भक्ति की ही रचनायें हैं। प्रेम और शृंगार का किंचित आभास भी इनमें नहीं मिलता। उनके नाथ भक्ति काव्य में सर्वत्र एक भक्त का दैन्य आराध्य के लिये उनका समर्पण भाव और एक तत्ववर्ती की उपराम भावना परिलक्षित होती है। मानसिंह की कला के प्रसंग में उनके काव्य के वर्ण्य विषय की इसलिये चर्चा करते क्योंकि काव्य का विषय कला के परिवेश में ही सिमिटा हुआ है—उसकी पृथक सत्ता नहीं है। इससे कवि की कला को समझने में सुविधा भी रहती है।

अब हम मानसिंह के कवि रूप का विवेचन निम्नांकित क्रम में करेंगे—

रस-व्यंजना—मानसिंह के सम्पूर्ण काव्य में मुख्य रूप से केवल दो ही रस व्यंजित हुये हैं—शृंगार और शान्त। करुण रस की अभिव्यक्ति भक्ति की पृष्ठभूमि पर हुई है। वीर रस के कुछ मुक्तक और डिंगल गीत भी मानसिंह ने लिखे हैं किन्तु उनकी संख्या अल्प ही है। भक्ति के प्रसंग में नाथजी के तेज और पराक्रम का वर्णन करते समय वीर और रौद्र दोनों रसों का आश्रय लिया गया है।

संयोग शृंगार के उदाहरण देखिये—

बैठी ब्रजबाल लाल आवरे गोपाल संग
वृन्दावन कुंज और नाम प्रभु प्यारे की
सेवनू गुलाब पत्तुरीम तें बनाई धाई
पूरत फुहारे बारे सोभा बनि धारे की

धम पर धन पर सीस पवनन पर
या गुमान तन कर दूर जाय सारे को
भारी भुज दंड पर चार की मारेउ तर
मीठा पचड पर लाभा रिझारै को
[ कृष्ण विलास ]

आज रसीली उगणरी रस बरसै छै रात
पाम पड़ी छै पोष रै गोरी कणग गात
गुल प्यारी सी गहगही बेल लहलही बाग
गाळी गावै गुण भरी तहिया भरी सुहाग
मुख सु मुख अधरां अधर उरसू उर द्रग दोय
एकमेक यू हो रह्या जळमिसरी ज्यू होय
[ दुहा सजोग शृ गार ]

वियोग शृ गार—

रे रे वन मोर मेरे स्याम के लहुत हार
देखे वन वीरयू के चिन्ह किहु थान है
पद्य रो पाय धीरै बारिवलु धरनि माझ
रामानुजस्याम मोतो मेरे प्रिय प्रान है
कुंडल की भलक अलक छुटि नागिन सी
तट की वनमाल तैसी विस्व की लुभान है
ऐसे व्रजनाथ मोहि दीजिये बताय नातो
प्रानेश्वर वृन्दावन चदजू की थान है
[ कृष्ण विलास ]

साजनिया यासू लगी, या चटकीली आख
निस दिन पथ निहारती, रही झरोखा झाख
गोरै मुखड़ै सावळी, जुलफ रही उळझाय
आव विदेसी वेग घर, साजनिया सुळझाय
काजळ हूँ रह्यो काळमा, पानत बोल प्रहार
वेणी हूँ रहि विषधरी, भूषण हूँ रह्या भार
[ दुहा सजोग शृ गार ]

शान्त रस—

असल सन्यास को धार लहे तब तीनों ही लोक करे जो गुलामी
वेपरवाह रहे परवाह नही वह तीनों ही लोक को है जो स्वामी
गृहस्थ छते ही सन्यासी बन्यो जिन पाय लियो उर मे पन नामी
मान कहे रस है उनको जिन जान लियो उर अन्तर्यामी
[ स्फुट काव्य ]

**अलंकार**

मैं ऊपर प्रकट कर आया हूँ कि मानसिंह में चमत्कार प्रदर्शन की रुचि नहीं थी। राजा थे। किसी राज्याश्रित कवि का गर्व और मद लोभ उनमें कैसे हो सकता था ? अत उन्होंने जो कुछ लिखा स्वान्तः सुख के लिए लिखा। जो अलंकार-सौन्दर्य उनके काव्य मे विद्यमान है वह अयत्नज और सहज रूप में है। हिन्दी अलंकारों के साथ राजस्थानी के वै- सगाई अलंकार का प्रयोग भी मानसिंह के काव्य म हुआ है। उपमा रूपक उत्प्रेक्षा वीप्सा मुद्रा अनुप्रास विभावना असंगति मीलित दीपक और वैण सगाई उनके प्रिय अलंकार रहे हैं।

**उत्प्रेक्षा और उपमा**

सुंदर भाजि सरीर सुप मनु कंचन की लतिका बिकसाही
सारद चन्द्र समान मनोहर अमल नैन उभै मृगमांही
आनन चारु सरोज सुगंधनि मानहुँ मनु भृंग भ्रमाही
नागिनिसी अलकैं बिथुरी मुख ऊपर सोभित यौं उकसाही

[ कृष्ण विलास ]

भरी रूप रंग रस भरी मुळ आवै जळ भैण
सरवर त्या निरपण सही मीरज दिप्याक नैण।
सारी बाता सरसियी उज्जळ नीर अथाह
कैळ करा कारज करण नाह सरोवर नाह।

[ रतना हमीर री वारता ]

**वैण सगाई**

नवे पत्र पल्लव नवे नवी कली नवफूल
नव चम्पक फूलै नवी झूम रही जिम झूल।
मैंडी सूरत निरखसां, ज्यासी देसा जीव
आसी सुख मो अंग मैं बिछड़ दिन पाछै बीव

**छन्द योजना** – मानसिंह का छन्दज्ञान बहुत व्यापक है। उन्होंने संस्कृत हिन्दी और डिंगल के छन्दो का अत्यन्त सफलता से प्रयोग किया है। व्रज भाषा के छन्दो में वैण सगाई अलंकार का निर्वाह उनके काव्य-कौशल की विशेषता है। छन्दों की रसानुकूलता पर भी उनकी विशेष दृष्टि रही है। पृथ्वी भुजंग प्रयात पद्धति, वैताल नाराच वैमस्वरी निसाणी कवित्त सवैया दोहा सोरठा चन्द्रायण उधोर छप्पय और डिंगल गीत उनके विशेष प्रिय छन्द रहे हैं। इस निबन्ध में इतना स्थान नहीं कि इन छन्दो के उदाहरण दिये जाय।

**प्रकृति चित्रण** – मानसिंह ने प्रकृति के दोनों रूप सापेक्ष और निरपेक्ष अपने काव्य में प्रस्तुत किये हैं। कही यह आलम्बन के रूप में चित्रित हुई है तो कही उद्दीपन के रूप में। सूक्ष्म निरीक्षण सहज और सरस अभिव्यंजना मानसिंह के प्रकृति काव्य की विशेषतायें हैं। यों यह सारी वर्णन शैली परम्परा युक्त ही कही जायेगी।

वसन्त वर्णन (निरपेक्ष)

मजर मजर पैं मधुप झार झार पिक पत ,
फल फल सुकगन फवत है, रैंन घौंस रसवत ।
तुटि तुटि भुवि पैं परत, विकसे केसू व्रद ,
वाकी सुक की चचु मनु, कै द्वितिया को चद ।
विपरे केसू वन मही, अरुन वरन चहु ओर ,
अगारन कै भ्रम उमगि, चचु चलात चकोर ।

[ नाथ चरित ]

वसन्त वर्णन (सापेक्ष)

चैंत मास री चाँदणी, सरस वधी सग सोक ,
जाए आज खुस जाइला, लोम सरा सह लोक ।
आली उडगण नाँहि ए, अवस विरह री आग ,
चली स्वास मुकता चिणग, लदू रही नभ लाग ।
रितु आई रतिराज री, अलि [1] पर पूरण आस ,
कामणि जीवै विध कवण, विण वालम विसवास ।

[ रतना हमीर री वारता ]

भाषा— मानसिंह बहुभाषा-विज्ञ थे। उनके द्वारा रचित विविध भाषाओ की कृतियाँ इस कथन का प्रमाण हैं। उन्होने सस्कृत मे कृतियाँ लिखी, व्रजभाषा में कृतियाँ लिखी, डिंगल मे कृतियाँ लिखी, पजाबी मे पद लिखे। वे उर्दू फारसी के भी अच्छे ज्ञाता थे। गजलो और नज्मों का उन्होने उर्दू गद्य मे व्याख्यायें किया। अनेक कवि पंडित इनके यहा आश्रित थे। इनके भाषा-गुरु कविराजा बाँकीदास स्वय अनेक भाषाओं के पडित थे। अनेक पडितो, कवियो और कलाकारो का साह्निध्य इन्हें निरन्तर प्राप्त रहा। अस्तु, सस्कार और परिवेश ने इन्हें बहुभाषाविद् बना दिया। इनकी व्रज मे रचित रचनाओ पर सस्कृत का सुस्पष्ट प्रभाव है। एक उदाहरण देखिये—

द्विरद वदन मडित प्रचड सिंदूर ललाट धर
रुचि कपोल मिलि करत मधुप झकृत विलास पर
विघनहरन सुख - करन गवरिनदन गनेशवर
फरसि-धरन कर धरन रुचिर सारद शशि शेखर
कृत नृपति मान उत्सव प्रगट विमल कृष्ण-क्रीडा कहन
झन होय सिद्ध विनसै विघन त्वां नमामि सकट-दहन ।

[ कृष्ण विलास ]

राजस्थानी—

रसियो यू रातू रम्यो, चुवतै रग चक चोळ ,
मनु लुट्यौ घन मदन रो, खिडकी घर री खोल ।

मूर्तियाँ कालान्तर मे प्रवृत्तियो का निर्माण करती है। ईश्वर, जगत, समाज और प्राणी मात्र के प्रति मनुष्य का क्या भाव है, वह इनके प्रति कैसी प्रतिक्रियायें करता है ? बस व्यक्ति के इस प्रत्यक्ष व्यवहार और चिन्तन मे ही उसका जीवन-दर्शन सन्निहित है।

मानसिंह राजकुल मे पैदा हुये, पालित-पोषित हुये। राजसी सस्कारो का उनमे होना स्वाभाविक था। उत्तरवर्ती मध्यकालीन सामन्ती-व्यवस्था की उथल-पुथल से उनका जीवन भी किस प्रकार अप्रभावित रहता ? मानसिंह तो दुर्भाग्य लेकर ही जन्मे थे। जीवन के अन्तिम क्षणो तक इन्हें सघर्ष करना पडा। कुछ होश सभाला और १२ वर्ष की अल्पायु मे ही जालोर के किले मे अपने सिंहासनाधिकार के प्रतिद्वन्द्वियो द्वारा घेर लिये गये। निरन्तर ११ वर्ष तक इस घेरे मे ये रहे और नाना प्रकार की यत्रणाओ को झेला। दुर्दम्य साहस अटूट निर्भीकता अपराजेय शरीर-बल, राजनीतिक चातुर्य के साथ जालधर-नाथजी की अनन्य भक्ति इनके मार्ग को निष्कटक करती रही। जालोर मे जालधरनाथ के पुजारी देवनाथ द्वारा की गई भविष्यवाणी [ आप निराश न हो। दो तीन दिन और प्रतीक्षा करें। सब ठीक हो जायेगा। ] की सत्यता ने तो इन्हें नाथजी का तथा अन्य नाथानुयायियो का अन्ध भक्त ही बना दिया। अस्तु, मानसिंह के जीवन-दर्शन पर नाथ सम्प्रदाय दर्शन का प्रभाव सुस्पष्ट है। यद्यपि वे नाथ सम्प्रदाय मे विधिवत् दीक्षित नही हुये थे, ऐसा कोई उल्लेख प्राप्त नही होता कि उन्होने कान फडा कर मुद्रा धारण करली हो, गेरुयें वस्त्र पहन लिये हो, तथापि वे अनन्य भाव से समर्पित होकर जीवनपर्यन्त नाथजी की भक्ति करते रहे। इनके पिता और पितामह वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

नाथ दर्शन के अनुसार मानसिंह इस अखिल नामरूपा सृष्टि का कर्त्ता और नियामक नाथ को ही मानते हैं। नाथ ही परम शक्ति है। वह सर्वज्ञ है। सर्वव्यापक है—

नाथ जलप्रपाव निज, नाथ वेष निज रूप
सारे लोक अलोक मे, एही तत्त्व अनूप
ओंकार मत एह, एक नाथ व्यापक अखिल
समझ उत हु तजि सदेह, द्वैत रूप सोइ दृष्टि भ्रम

नाथ के इस स्वरूप और तत्वज्ञान को स्वय नाथ ही जानते है। गुरु की महत्ता को भी नाथ दर्शन मे स्वीकार किया गया है। सिद्ध गुरु के मार्ग दर्शन मे ही नाथ का साक्षात्कार किया जा सकता है—मुक्ति का पथ भी गुरु ही बताता है। यही कारण था कि मानसिंह की अपने गुरु देवनाथ मे अनन्त आस्था थी। यद्यपि लोक के तीव्र विरोध को उन्हें सहना पडा किन्तु गुरु चरणो मे उनकी श्रद्धा अन्त तक बनी रही। कथनी और करनी मे वे कोई विभेद नहीं करते थे। मानसिंह का स्वय का आचरण इस अर्थ मे बडा निर्मल रहा है। वे जलन्धरनाथ की नियमित रूप से आराधना करते थे। सुख और दुख दोनो मे समभाव से नाथजी की स्तुति मे उनका विश्वास था। इन्द्रियो के परिष्कार और आत्मोत्थान के लिये सयमित और पावन जीवन की नाथ दर्शन मे महत्ता मानी गई है। राजपद पर आसीन होते हुये भी मानसिंह के जीवन मे इतनी वैलासिक प्रवृत्तियाँ दिखाई नही देती, जितनी अन्य सामन्ती शासकों मे दिखाई देती है।

भक्ति और सम्प्रदाय के बाह्याडम्बर में उनका विश्वास नहीं था। समर्पण और अनन्यभाव से नाथ नाम का स्मरण ही उन्हें स्वीकार था—

अब उही कहै नीत प्रसंग में धंधी कै जो सब साठ करै हित
दोऊँ कहू समभ्राय कै मैं करि मेरो कह्यो यह मिसै किय
सार कहै इनही कों सदा परमारथ के पथ के पथ पंथित
निश्चल नाथ को नाम निरंतर नेह सो तू रट री रसना नित

नाथ दर्शन मे योग कुण्डलिनी-साधना आदि को महत्व दिया गया है। मानसिंह ने अपने नाथ भक्ति के काव्य ग्रंथों में इस योग साधना के महत्व को भी प्रकट किया है किन्तु वह स्वयं नाम माहात्म्य के ही पक्षधर है। उन्होंने कभी योगाभ्यास नहीं किया। मानसिंह अन्य देवोपासना के विरोधी नहीं थे। नाथ सम्प्रदाय में यों अन्य देवोपासना का निषेध किया गया है। मानसिंह के ग्रंथों में गणेश सरस्वती शिव आदि के मंगलाचरण हैं। इससे उनकी धार्मिक उदारता सिद्ध होती है।

मानसिंह ने नारी को मायाविनी बताया है। साधकों के लिए नारी का सान्निध्य निषिद्ध है—ऐसा वे भी मानते थे। यह केवल नाथ मत के सिद्धान्त के अनुसरण में ही उन्होंने कहा प्रतीत होता है। क्योंकि मानसिंह गृहस्थ थे उनके एक से अधिक पत्नियां और उपपत्नियाँ थी। राग-रंग की महफिलें भी उनके यहाँ खूब आयोजित होती थी। संगीत और काव्य की रसगंगा में वे नित्य अवगाहन करते थे। इससे यह सिद्ध होता है कि मानसिंह का जीवन-दर्शन प्रतिवादी नहीं था। वो कठोर वैचारिक परिसीमाओं के मध्य में से प्रशस्त मार्ग निकालने के वे पक्षधर थे। योग और भोग की समानान्तर साधना उनके जीवन में चलती रही।

भक्त चिन्तक कवि और संगीतज्ञ के अतिरिक्त उनके जीवन का एक और पक्ष है, वह है उनका सत्ता पुरुष। अपने इस रूप में वे बड़े विरोधात्मक प्रतीत होते हैं। भक्ति और काव्य के प्रसंग का दया कोमलता दाक्षिण्य आत्मीयता सरसता और सर्वांग सहृदयता से संवृत्त मानसिंह का व्यक्तित्व राजनैतिक प्रसंग में तिरोहित हुआ सा प्रतीत होता है। राजनीति अपने आप में एक धर्म और जीवन-पद्धति है। अस्तु, राजपुरुष के रूप में युद्ध क्रूरता कठोरता आदि का व्यवहार यदि होता है तो उसके राजनैतिक और शासकीय कारण होते है। मानसिंह के जीवन के पृष्ठ युद्ध और अवसाद, कलह और विश्वासघात के पीड़ादायी प्रसंगों से अंकित हैं। मित्र और परिजन यहाँ तक कि स्वयं पुत्र भी जीवनघाती बन जाते हैं। 'शठम् शाठ्यम्' की सूक्ति के अनुसार मानसिंह को कठोर आचरण करना पड़ता है। यह उनके राजपुरुष की विवशता अथवा कर्तव्य है जीवन-दर्शन नहीं।

संक्षेप में मानसिंह के जीवन-दर्शन को उनके राजनीतिक आचरण में न ढूंढ कर साहित्य में ढूंढना अधिक श्रेयस्कर है। अपने यथार्थ रूप में वे साहित्य में ही प्रकट हुए हैं।

मानसिंह भक्ति योग और प्रेम योग के एक साथ साधक कवि हैं।

---

# राजस्थानी शोध संस्थान द्वारा अमूल्य प्राचीन साहित्य-निधि का सग्रह तथा संरक्षण

पिछले पाँच छह वर्षों से यह सस्था राजस्थान की प्राचीन भाषा एव सस्कृति को प्रकट करने वाले अज्ञात एव अत्यन्त मूल्यवान ग्र थो के सग्रह मे सतत प्रयत्नशील रही है। अनेक साधनो से शोध सस्थान ने अब तक लगभग दस हजार ग्र थो का सग्रह कर उन्हे स रक्षण प्रदान किया है, जिनका प्रयोग अनेक शोध विद्यार्थी समय-समय पर करते रहे हैं। शोध-कर्त्ताओ तथा अन्य विद्वानो की सूचनार्थ स ग्रह-सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य निम्न प्रकार है—

१ स ग्रह मे १४ वी शताब्दी से लेकर १९ वी शताब्दी तक के हस्तलिखित ग्र थ मौजूद हैं।

२ गद्य, पद्य, टीकाएँ, बालावबोध, चित्रित प्रतियो मे धर्म, दर्शन, तत्र, मत्र, खगोल, व्याकरण, काव्य, शालिहोत्र, पुराण, महाभारत, भागवत, बात, ख्यात, पीढ़ियाँ, वशावलियाँ, पट्टे, परवाने, वैद्यक और ज्योतिष आदि विषय है।

३ ये ग्र थ प्राय प्राचीन मंदिरो, मठो, उपाश्रयो, चारणो, जागीरदारो, मुत्सद्दियो, ब्राह्मणों आदि से सग्रहीत किए गए है। सग्रह का क्षेत्र प्राय मारवाड रहा है।

४ कुछ प्रतियां असुरक्षितता तथा जीर्णता के कारण खडित अथवा अपूर्ण है, पर उनका भी अनेक दृष्टियो से महत्व है।

५ १४ वी, १५ वी, १६ वी शताब्दी के अनेक ग्र थ जैन-धर्मावलम्बियो के लिखे हुए हैं।

६ चारण साहित्य मे प्राचीन दोहे, गीत, कवित, झमाल, नीसाणी तथा अनेक प्रबन्ध काव्य व ऐतिहासिक पत्र आदि है।

७ गद्य साहित्य मे बातो की संख्या सर्वाधिक है। राजस्थानी भाषा की प्राय हर विषय की बाते स ग्रहीत है। ख्यातो का भी सु दर स ग्रह है। राठौड़ा री ख्यात, भाटिया री ख्यात, कछवाहा री ख्यात, सीसोदियां री ख्यात के अतिरिक्त अपूर्ण ख्यातें भी हैं। अभी-अभी मुहता नैणसी की नवीन ख्यात स स्था को उपलब्ध हुई है।

# परम्परा के विशेषांक

१ लोक गीत – मू ३ रु० (अप्राप्य)
राजस्थानी लोक गीतों का एक अध्ययन व परिशिष्ट में चुने हुए गीत।

२ गोरा हट जा – मू ३ रु (अप्राप्य)
अंग्रेजी साम्राज्य-विरोधी कविताओं का संकलन।

३ डिंगल कोष – मू १२ रु (अप्राप्य)
डिंगल के प्राचीन पद्य-बद्ध नौ कोषों का संकलन ऐतिहासिक टिप्पणियों सहित।

४ बेठे रा सोरठा – मू १ रु
बेठवा सम्बन्धी राजस्थानी व गुजराती सोरठे तथा विवेचन।

५ राजस्थानी बात संग्रह – मू ७ रु
राजस्थानी की प्राचीन चुनी हुई बातें तथा विवेचन।

६ रसराज – मू ३ रु०
शृंगार रस सम्बन्धी राजस्थानी के चुने हुए दोहों का संकलन।

७ नीति प्रकाश – मू ४ रु
फारसी के ग्रंथ अखलाक-ए-मोहसनी का प्राचीन राजस्थानी मे भावानुवाद।

८ ऐतिहासिक बातां – मू ३ रु
मारवाड़ के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली प्राचीन बातें व विवेचन।

९ राजस्थानी साहित्य का आदिकाल – मू ३ रु
आदिकालीन राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी विविध लेख।

१ पिंगल-शिरोमणि – मू ३ रु०
पिंगल छंद-शास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रंथ।

११ राठौड़ रतनसिंघ री वेलि – मू ३ रु
प्रौढ़ राजस्थानी भाषा में रचित एक ऐतिहासिक काव्य-कृति टीका सहित।

१२ राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल – मू ६ रु
मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी विविध शोधपूर्ण लेख।

११ जस जुझार ग्रंथ – मू ३ रु
जब और शाह युद्ध विषयक धार्मिक काव्य-कृति तथा तद्विषयक लेख।

# शोक - सम्वाद

कुवर विजयसिहजी सिरियारी ( एम० पी० ) के आकस्मिक निधन से राजस्थानी साहित्य व सस्कृति का एक अनन्य प्रेमी और हमारी सस्था का एक प्रमुख स्तंभ सदा के लिए उठ गया। कुवर साहिब इस संस्था के सस्थापकों मे से थे। एक प्रतिभावान राज-नीतिज्ञ के नाते उनसे राजस्थान के अधिकांश लोग परिचित थे परन्तु जिन्हें उनके साथ रहने तथा नजदीक से जानने का अवसर मिला वे उनकी बहुज्ञता तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नही रहे। राजस्थानी भाषा और साहित्य के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। वे इसे अत्यन्त पुनीत कार्य मानते थे। अनेक प्रकार की कठिनाइयो मे से उन्होने सस्था को निकाल कर आगे बढाया है। उनकी बलवती प्रेरणा के फलस्वरूप ही सस्था आर्थिक कठिनाइयो के होते हुए भी प्रगति-पथ पर अग्रसर होती रही।

प्रारम्भ से ही इस पत्रिका की परामर्श-समिति के वे सदस्य थे। आज जब वे नही रहे तो उनकी गंभीर मुस्कान और प्रेरणा-प्रद शब्दों की स्मृति ही हमारा सबल है।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।

— संचालक

# परम्परा


• त्रैमासिक शोध पत्रिका

वार्षिक मूल्य दस रुपये

प्रति भाग तीन रुपये

भाग अठारह उन्नीस

सन् १९६४

राजस्थानी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित
चौपासनी विद्यालय जोधपुर

Printed by Hari Prasad Pareek at Sadhana Press, Jod
for Narayan Singh Bhati, Director, Rajasthani
Shodh Sansthan, Jodhpur (Rajasthan)